'पानी' बिना जिन्दगानी के अरथ

२०१२ के साल अइसन विचित्र साल में गिनाई जौना में पृथ्वी के श्रद्धांजलि दिहल गइल। बुद्धि आ ज्ञान के एह चरम निराशा भरल अर्चन के काम "द इकोनामिस्ट" नाँव के प्रसिद्ध पत्रिका अपना विशेष अंक २०१२ में कइले बिया। दरसल पर्यावरन-प्रकृति के विनाश के परिकल्पना, ओह गंभीर चिन्ता आ संभावना से उपजल बा, जवना में जमीन, जंगल आ जल के लेके, भविष्य आ आगम के संकट आ चुनौतियन का कारन, मानव-संस्कृति आ सभ्यता पर साफ-साफ खतरा मंडरात लउकत बा। खतरा एसे बड़ बा काहे कि अब आदमी के सोच से, प्रकृति-पर्यावरन आ पृथ्वी के सह-अस्तित्व खतम हो गइल बा। जब जीवनी-शक्ति देबे वाली, मनुष्य के संगी-साथी बनल प्रकृति, मानुस-जिनिगी के जियत-जागत हिस्सा ना बनी, जब ओकरा 'सहजता' के हमन के 'सोच' क बनावटीपन आ औपचारिकता ढाँपि लेई त भला धरती, प्रकृति आ पर्यावरन मनुष्य के कइसे साथ देई ? सांस्कृतिक आ मौलिक रिश्ता में दरार आवे के कारन प्रकृति के 'सकल पदारथ' मनुष्य के ओकर भौतिक आ 'पदार्थ' रूप में शोषन-दोहन आ बेतहाशा उपभोग खातिर उकसवलस। अइसना में 'जियऽ आ जिये दऽ।' वाली लोकनीति क हँसी उड़ावत, हमनी का अपना हीत- मीत- पालक (प्रकृति) के संहारक बना दिहनी जा।

मानव सभ्यता के आदिकालीन इतिहास आ शोध से ई जाहिर हो चुकल बा कि आदमी, पशु, पक्षी, भा जीव-जन्तु के ठेकान जल-स्रोत का आसे-पासे मिलल बा।अदिमी त अदिमिये रहे, पशुओ नदियन, झील, झरना, जलकुंड, ताल आदि के ठौर देखि के आपन घर-गिरस्थी बनवलस। नदी आ ओकरा मैदानी, घाटी वाला इलाका एही से आबाद, उपजाऊ, हरियर रहल कि ओइजा पिये, जिये आ प्रकृति के रौनक देबे खातिर पानी मौजूद रहे।

रहीम बाबा बहुत पहिले एगो दोहा कहले, कि 'रहिमन 'पानी' राखिये, बिन पानी सब सून। पानी गये न ऊबरे मोती, मानुस चून।।' मतलब साफ रहे कि मोती, मानुस आ चूना पानी बिना ना जिएला। पानी चाहे मोती क 'आब' होखे, भा अदिमी के चेहरा क रुआब आ रसूख के, दूनो अमूल्य बा। कतने लोकोक्ति आ मोहावरा बनल - 'पनिगर आदमी', पानी उतारल, पानी पियावल, बेपानी भइल - रौनक, चमक कान्ति, आभा, प्रतिष्ठा, ईजत, लाज इहाँ तक कि जिन्दगी पानिये से बा। पुरनिया लोग एही से 'पानी' राखे आ जोगावे के अनुरोध करे। पानी आदमी के पत राखेला।

आधुनिकता, औद्योगीकरण आ प्रकृति दोहन के तकनीक का पइसार का बाद समाज के उपभोग, प्रतिस्पर्द्धा, आ शक्ति-प्रदर्शन के अइसन स्वारथ वाला धुन लागल कि लोग जंगल, जमीन, जल आ प्रकृति के बेमोह माया के दोहन, शोषन करे

- **पानी से खाली पियासे ना, भूखो के नाता बा। बेपानी खाना ना बनी, ना पची। अनाज, फल, साग, सब्जी, पानी बिना ना पैदा होई, ना सुरक्षित रही।**
- **दिनों-दिन दुनियाँ के आबादी के सातवां भाग का साथ, हमनी का देश के आबादी में अउर इजाफा होई। खाये-पिये के चीजन क मोल बढ़त जाई। अंधाधुंध शहरीकरन, भोजन आ जीवन शैली में बदलाव का चलते, सगरो जल-संसाधन अउर कम होत जाई। सूखा के मार, ओइसहीं हमन पर घहरात रहल बा।**
- **संयुक्त राष्ट्र संसार में आवे वाला जलसंकट के देखि के हर साल 22 मार्च के 'विश्व जल दिवस' मनावे के 1993 में संकल्प लिहलस। एह साल विश्व जल दिवस पर ओकर सनेस क मूल कथ रहल हा, "हम भूखे हैं, क्योंकि दुनिया प्यासी है !"**
- **दुनियाँ के सबसे बड़हन आबादी वाला हमन क देश अनुमान का मोताबिक, आवे वाला तीन-चार दशक में चीन से ऊपर हो जाई, जब पानी के जरूरत चालीस से पचास फीसदी अउर बढ़ि जाई।**
- **जल-संसाधन पर, जागरूकता के कमी आ कुप्रबन्ध दिनोंदिन एह संकट के अउर बढ़वले जाता। जलवायु आ मौसम के अजगुत बदलाव एह संकट के बेर-बेर अनुभूति करावत बा कि अबो से जागीं आ चेतीं।**

लागल। प्रकृति का साथे जिये के परंपरा आ सहअस्तित्व भाव के गरहन लागि गइल। बदलत समय में, बारंबार मिले वाला संकेत आ चेतावनी का बादो, लालची उपभोग खातिर जरूरत आ बिकास का अन्हरदउड़ में संवेदनशीलता आ पर्यावरन - चिन्ता हेराइ गइल। अब ई समय आ गइल कि अउर 'दिवस' लेखा हमनी के "विश्व वानिकी दिवस" आ "विश्व जल दिवस" मनावे के जरूरत आ परल बा।

जिये खातिर जोगावलो जरूरी होला। दिनों दिन बढ़त घन आबादी, जमीन आ वन संपदा के लीलत तेजी से बढ़ रहल बिया। ईंट-पत्थर, लोहा, आ कांक्रीट के जंगल बनत शहर लमहर डेग बढ़ावत बँचल खुचल हरियरी आ पानी के सोखत आ जियान करत गाँवन के भकोसले जा रहल बा। सुख, सुविधा, नया संसाधन आ विकास के घरघरात रथ, जतने तेज दउर रहल बा, गाछ-बिरिछ, बाग-बगइचा, नहर-ताल, नदी, झरना, पहाड़ त्राहि-त्राहि करि उठल बा। नतीजा, कबो बाढ़, कबो सूखा, कबो भयानक ताप, कबो भूकम्प आ का कहाला - 'ग्लोबल वार्मिंग' के समस्या एहू जा पहुँच गइल बा। फेड़, बगइचा, बन, जंगल साफ सुथरा पानी के सोत- कुल मिलाइ के जिये क कूल्हि सरंजाम खतम होत जाई त ना साँस लेबे के आक्सीजन मिली, ना पिये खातिर साफ पानी। पानी के त ई हाल बा कि हमनी का ओके जरूरत से ज्यादा जियान करत बानी जा भा जियान होखे देत बानी जा। पानी के माँग दिन ब दिन बिकराल रूप धइले जाता। व्यापक जल संरक्षण नीति आ दूरदर्शी जल प्रबंधन का ना रहला के कारन, जलवायु, मौसम के अनजानल बदलाव का कारन, आवे वाला समय, संकट के खतरनाक हद तक बढ़वले जात बा। बरखा के पानी के बचावे आ भंडारण करे के बढ़िया इंतजाम हमन किहाँ हइये नइखे। उफनत नदियन के अफरात जल या त तबाही मचावेला या अनेरिहे बहि जाला। धरती के नीचे पिये वाला पानी के सतह बरकरार राखे के उतजोग में हमन पछुवाइले बानी जा। खेती बारी के सिंचाई आ पशुपालन आदि खातिर बेकार बहे वाला पानी के रोकि के काम में ले आवे खातिर परंपरागत तरीका के गुंजाइश ना रहि गइल। बावड़ी, ताल, तलैया, नाला, पोखर, कुंड धीरे-धीरे खतम हो चलल बा। बरखा क पानी व्यर्थ ना बहे, ओकर संग्रह कइसे कइल जाव - साफ आ स्वच्छ जल जियान ना होखे एकर बोध आ खेयाल सबका भीतर जागी तबे संकट क समाधान होई। भूजल का संरक्षा, सुरक्षा खातिर कानून बने। दूषित जल क शुद्धीकरण, 'री साइकिलिंग' आ बुनियादी जल संरक्षणद्ध खातिर पुख्ता इन्तजाम अब बहुत जरूरी हो गइल बा। एम्मे नदियन क "ड्रेनेज-सिस्टम" आ बरसाती जल बचावे खातिर पुरान दह - ताल, झील क फेर से संरक्षण बेवस्था मजबूत करे के पड़ी।

वैज्ञानिक सोच आधुनिक समाज क जरूरत बा, बाकि नया विज्ञान वन संपदा आ पर्यावरण संतुलन के विचार से परे - अपना कोइला, तेल, गैस, गिट्टी, पटिया, पत्थर, बोल्डर खातिर अंधाधुंध आक्रामक ढंग से खनन - दोहन कर रहल बा। कम बारिश में आधुनिक खेती खातिर भा पिये क पानी बेचे खातिर भूगर्भ जल के बेतहाशा खिचाई,पिये वाला पानी का स्तर में तेजी से कमी कइले जा रहल बा। एहू स्थिति पर, समझदारी से, नियंत्रण करे के पड़ी। विकास का नाँव पर, प्रकृति आ पर्यावरण के सन्तुलन बिगाड़ल हमनिये खातिर आत्मघाती होई। "बिन पानी सब सून" ना होखे, एही से आज के समय, हमनी से, 'सोच' में दखल देबे के उकसा रहल बा।

अच्छा बरसात से ना खाली खेती बलुक बन बनस्पति, जंगल आ जंगल–जीव सबकर भरन–पोषन होला। जंगल में रहे वाला आ ओकरा सहारे जिये वाला लोगन क संसार में कुल आबादी तीन अरब मानल गइल बा, जौना में पौने दू अरब त जंगले प आश्रित बा। तबो पछिला दशक में 1.30 करोड़ हेक्टैयर जंगल काटल जा चुकल बा। हमनियो का देश में वन से ढँकल रकबा में तेजी से भारी कमी आइल बा। लगभग 550 वर्ग किलोमीटर रकबा त पूर्वोत्तर वन क्षेत्र में घटल बा। हालांकि आयुर्वेदिक, प्राकृतिक दवाइयन आ स्वास्थ्य खातिर बहुत जरूरी चीजन के स्रोत ई वन जंगल बाड़न सऽ। हमनी क देश जल का ममिला में, जार्डन, सूडान, मोरक्को वाला निर्धन देशन का लिस्ट में बा। इहाँ दूषित आ खराब जल के शुद्धीकरण क रफ्तार बहुते धीमा आ सोचनीय बा। बेमारी आ रोग से मुक्ति पावे खातिर स्वच्छ पानी सबसे जादा जरूरी बा।

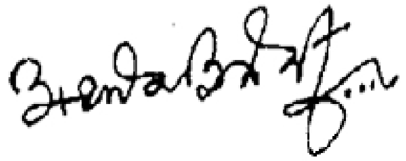

लोकराग ‘चइता’ : मरम छूवे वाला गीत

फगुआ का उल्लास, मदहोशी, चंचलता, आ अल्हड़ ठकठेन के खुमारी उतरेले, त एगो विषम, उदास खालीपन फइल जाला। बयार रूखर हो जाले, महुवा निझाए शुरू हो जाला। चइत महीना, उत्सव का बाद आवे वाला अनमनाह मन क महीना हऽ। अमराई के मोजरियन में गोटाइल सरसों क दाना नियर टिकोरा धरे लगेला। आ कोइलरि के कुहुँकल सुनाए लागेला। साइत एही से लोकराग चइता का एह महीना में एगो बिलमल कसक पवँरेला। चइत के गीत में रागो बिलमल-ठहरल कसक आ कसैलापन के साथ, विरह के मधुर अनुभूति करावत लउकेला। चइत खेतन में ओह पाकत अनाज, के महीना हऽ, जेकरा आगम का साथे बगइचा में फूल फर बने लागेला, चउक-चउराहा का पीपर पाकड़ में हरियर पतई आ जाली स।जस-जस फसल कटत जाले चारू ओर सून होत जाला। तिक्खर घाम में काम का बाद विश्राम खातिर अगर छाँह खोजाला, त साँझ आ रात के ‘चइता’ गावल सुनल जाला।

चइता/चैती भोजपुरी क बहुते प्रिय, संवेदना से लबालब प्रेम-प्रकृति के रागात्मक संबंध के जगावे वाला मरम छूवे वाला गीत हऽ। डा० कृष्णदेव उपाध्याय का अनुसार “मधुरता, कोमलता आ सरलता में” एह राग क कवनो सानी नइखे। ई सामूहिक आ एकल दूनों तरह से गावल जाला। सामूहिक स्वर में झाल-ढोल के साथ ध्वनि - लय प्रधान चइता होला। एह गीतन में मौसम बर्णन का साथे, दाम्पत्य जीवन के प्रेम, विरह, अनमनाहट, रुठल-मनावल, ओरहना के प्रसंग रहेला। लोकराग का कारन एम्में पिंगल (छन्द शास्त्र) के शास्त्रीय विचार ना राखल जाला। एगो टेक “ए रामा”, “हो रामा” के प्रयोग एवं विलंबित आ द्रुत (धीम आ तेज) स्वर में होला। एमें ‘चाचर’ ताल, आ अंतरा आवत-आवत ‘कहरवा’ ताल होला बाकि स्थायी ताल चाँचरे रहेला। चैती द्रुत स्वर में कहरवा ताल पर गवाले बाकि सामूहिक में कबों कबो ताल दादरो क प्रयोग होला।

भोजपुरी कविता में चइत राग के छन्द-गीत निखरल साहित्यिक रूप में मिलेला। भोजपुरी कवि एकरा कथ्य में, अपना समय-संदर्भ आ चिन्ता-फिकिर के बहुत मार्मिक अभिव्यक्ति कइले बा लोग। इहाँ समय-संदर्भ उभारत चइत राग के (कुछ प्रतिनिधि रचनाकारन के) कुछ रचना दिहल जा रहल बा। सम्पादक

[एक] (स्व0) रामविचार पाण्डेय

आ गइले चइत उतपाती हो रामा, आ गइले !
अमवाँ फुलइले, महुअवा फुलइले
अब बन टेसुआ फुला गइले रामा, आ गइले!

बर कोंढ़ियइले, पीपर गदरइले
पाकड़ि फेड़ टुसिया गइले रामा आ गइले!
रहरि झमकली आ उखिया उमकली

सेमर अब ढेंढ़िया गइले रामा आ गइले!
सीसो सँवरइले, ऊ अजहूँ ना अइले
रामेबिचार अलसा गइले रामा, आ गइले!

आ गइले चइत उतपाती हो रामा, आ गइले !

[दू] (स्व0) भोलानाथ गहमरी

चैन नाही चइत महिनवां हो रामा, घरवा अँगनवां।

बैरन हो गइले दिन-दुपहरिया
कसि कसि मारे बान पछुवा बयरिया
बेधे मोहें सँझिया-बिहनवाँ हो रामा, घरवा-अँगनवां।

बन-बन टेसुआ अगिनि धधकावे
लाले लाले सेमरा जिया के ललचावे
बइठि अगोरेला सुगनवां हो रामा, घरवा-अंगनवाँ।

अमवा के बारी कुहुके कोयल कारी
बिरहा जगावे बिरहिन के अनारी
रोजे डहकावे परनवाँ हो रामा, घरवा अँगनवाँ।

[तीन] शम्भु नाथ उपाध्याय

चइत चनरमा लुभावे हो रामा
जिया हुलसावे।

भइल निबद्दर साफ असमनवा
बढ़ि गइल बाटे अब चनवा के मनवा
चाननी सुधा से नहवावे हो रामा
जिया हुलसावे।

गावऽतिया कोइलरि मिठ–मिठ गीतिया
मनवाँ चोरावे बँसवरिया के सिटिया
चनवा झुझुनवा बजावे हो रामा,
जिया हुलसावे।

टोला–टोली उठेला बियाह के सगुनवां
गह–गह करेला दुअरवा–अंगनवां
गउरा–भखउती चढ़ावे हो रामा,
जिया हुलसावे।

●

[चार] भालचन्द त्रिपाठी

सून लागे मन के सपनवां हो रामा
डहके परनवां !

अमवां में लगि गइलें सुघर टिकोरा
टूट चलल मोर, असरा क डोरा
बिन्हि लेला पछुवा पवनवां हो रामा
डहके परनवां !

जेठवा क घाम अस लगेले चननिया
फुलवन क सेजिया भइलि बा नगिनिया
लागेला भुतहा अँगनवां हो रामा
डहके परनवां !

धीर बनि नीर मोरे अँखिया से बरसे
माखल कजरा निकरि जाला घर से
चइते में लगलें सवनवां हो रामा
डहके परनवां !

●

[पाँच] अशोक द्विवेदी

कोइलरि कूहे अधिरतिया आ बैरी
चइत कुहुँकावे।
रहि रहि पाछिल बतिया इ बैरी
चइत उसुकावे !

कुरुई–भरल–रस–महुवा, निझाइल
कसक–कचोटत मन मेहराइल
उपरा से कतना सँसतिया, आ बैरी
चइत कुहुँकावे !

फगुवा गइल दिन कटिया क आइल
अइले न उहो, खरिहनवा छिलाइल
कब मिली उहाँ फुर्सतिया, इ बैरी
चइत कुहुँकावे !

मुसवा–बिलइया, चुहनिया अँगनवां
खड़के जे कुछ कहीं, चिहुंकेला मनवां
धक् धक् धड़केले छतिया, आ बैरी
चइत कुहुँकावे !

उनुका नोकरिया क सुख बाटे एतना
संग कहाँ रहिहें, देखलको बा सपना
हमनी क इहे किसमतिया, इ बैरी
चइत कुहुँकावे !

●●●

मुद्दा

चुनौती राष्ट्रीय जल-सुरक्षा आ संरक्षण के

[संदर्भ नदी-जोड़-परियोजना]

❑ प्रगत द्विवेदी

हर बड़हन लक्ष का पाछा एगो दूरदर्शी बड़हन सोच होला। 'सोच' के कामयाबी खातिर व्यापक, गम्भीर अध्ययन, सर्वे, शोध आ विचार होला। फेर ओह काम के करे खातिर समय बँधल रूपरेखा बना के, निश्चित निर्धारित समय-सीमा में ओके अमली जामा पहिरावल जाला, तब जाके ओह दूरदर्शी सोच पर खड़ा लक्ष हासिल हो पावेला। हमहन का देश में जल-संकट का दिसाईं, राष्ट्रीय हित खातिर हिमालयी आ प्रायद्वीपीय नदियन के जोरि के एगो महत्वाकांक्षी परियोजना बनल जवना क पहिला मकसद बाढ़ग्रस्त क्षेत्र के फालतू पानी के सूखा-क्षेजन में पहुंचावल, आ कृषि-सिंचाई खातिर उपयोग का अलावा ऊर्जा सकंट के निदान ढूँढल रहे। सन् २००२ में सुप्रीमकोर्ट एह परियोजना के समय बँधल क्रियान्वयन खातिर उत्साहित कइले रहे, बाकिर जइसन कि हमनी किहाँ होला..... क्षेत्रीय राजनीति, दलगत स्वार्थ, विस्थापन-समस्या आ कथित एन०जी०ओ० प्रेरित स्थानीय विरोध का कारन राष्ट्रीय हित क ई मेहनत-मसक्कत डाँड़ हो गइल।

नवही जोशीली नेतागिरी आ अदूरदर्शी काँच राजनीति क बड़हन दोष इहे बा कि ऊ हर दूरदर्शी सोच आ समझ के कुतार्किक बिरोध करेले। ओह समय ऊ 'निजी' भा क्षेत्रीय भा 'दलगत फायदा'का आगे 'व्यापक जनहित' आ राष्ट्रीय हित पर ओतना गौर ना करेले, जतना एगो देशप्रेमी का रूप में राष्ट्रहित खातिर गौर करे के चाहीं। एगो दोसर पहलू इहो बा कि अइसनका राष्ट्रहित वाली परियोजना से भइल विस्थापित- समस्या के समाधान समय से, संवेदनशील आ न्यायिक ढंग से ना करावल जाला। एह स्थितियो के फायदा ओह लोगन के मिल जाला, जे स्थानीय नागरिकन से समस्या के लेके, लड़ाई क मुद्दा खोजेला।

राष्ट्रीय नदी जोड़ो परियोजना दरसल एगो दीर्घकालिक बड़हन परियोजना, रहे जवना में हिमालय से निकले वाली नदियन का साथ अउर दोसर बड़ नदियन के विशाल नहरन का जरिये आपुस में जोरि के जल-स्थानान्तरण का जरिये कृषि सिंचाई, जल संरक्षण आ बिजली-उत्पादन खातिर उपयोग कइल जाइत। भारत के नदी जोड़ो परियोजना कई सालन से योजना आ क्रियान्वयन का स्तरे पर लटकल रहि गइल। बीच बीच में बाँधन के विरोध के लेके मेधा पाटकर आ अरुन्धती राय जइसन लोग के नाँव एही से चर्चा में आइल कि भगीरथी नदी पर बनल तीन गो परियोजना जनविरोध के दबाव में सरकार के काम रोके परल। करोड़न रुपया पानी में डूबि गइल।

ई बात सच बा कि पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी सरकार राष्ट्रीय हित में नदियन के आपुस में जोड़े वाली एह महत्वाकांक्षी योजना के समर्थन करत एके मूर्त्त रूप

नदियन के आपुस में जोड़े वाली परियोजना

जादा पानी वाला नदियन क पानी सूखा रहे वाला क्षेत्रन में पहुँचावे खातिर, नहरन का जरिये, नदियन के जोड़े क विचार ओइसे त बहुत पुरान हऽ बाकि 19वीं सदी में सर आथर कार्टन दक्षिण भारत का नदियन के व्यापारिक यातायात खातिर जोड़े क परिकल्पना कइले रहे।

1977 में कैप्टन दिनशॉ दस्तूर एह दिसाईं 4200 कि0मी0 क हिमालयन कैनाल आ 9300 कि0मी0 दक्षिणी गारलैन्ड कैनाल सिस्टम के कई झीलन से जोड़त, दिल्ली आ पटना तक पाइपलाइन से जोड़े के प्रस्ताव देले रहलन। बाद में केन्द्रीय जल आयोग अपना सर्वे आ शोध में एके ठीकठाक ना पवलस।

1980 में सिंचाई मंत्रालय एह दिसाईं एगो योजना बनवलस आ शोध–सर्वे क जिम्मा नेशनल वाटर डेवलपमेंट एजेन्सी के दियाइल। रिवर इन्टरलिंक योजना के फेरु राजग सरकार अमली जामा पहिरावे का कोशिश में नौवीं पंचवर्षी योजना में शामिल कइलस आ टास्क फोर्स क गठन कइलस।

देबे खातिर 'सुरेश प्रभु' का अध्यक्षता में एगो विशेष दल गठित कइलस। इन्डियन वाटर डवेलपमेंट एजेन्सी आ राष्ट्रीय जल आयोग आदि का सर्वे, अध्ययन आ सोचल बिचारल रूपरेखा पर समय में बन्हल एतहत बड़ परियोजना के भविष्य फेर अधर में लटक गइल। लोग एसे मिले वाला व्यापक फायदा आ लाभ ना देखि के, नुकसान देखे लागल। ओइसहूँ आजादी मिलला का अतना साल गुजर गइला का बादो बाढ़ग्रस्त क्षेत्रन के ओसे निजात ना मिलल, सूखा क्षेत्र आजो मुसीबतजदा बाटे। हजारन करोड़ बाढ़ आपदा प्रबंधन में हर साल फंकाइल मंजूर बा बाकि ओकर व्यापक स्थायी निदान मंजूर नइखे। विचार अगर 'निगेटिव' रही तऽ कवनो रचनात्मक काम कइसे हो पाई? हमनी का देश में राष्ट्रीय विचारधारा पर दलगत राजनीति, क्षेत्रीय दबाव आ प्रभावशाली वर्ग के दखलंदाजी अक्सर हावी होत नजर आवेले। एही से कवनो बड़हन राष्ट्रीय हित वाली दीर्घकालिक सामरिक, रणनीतिक योजना भा महत्वाकांक्षी जल परियोजना आ नदी जोड़ो जइसन विशाल सपना वाली परियोजना अधर में लटक के रहि जाला। आंतकवाद विरोध जइसन मुद्दा बनावल एन०सी०टी०सी० जइसन विधेयक पर विरोध होखे लागऽता।

बाजपेयी सरकार के दृढसंकल्प आ इच्छा-शक्ति से नदी जोड़-परियोजना, एकबेर पटरी प अइबो कइल त संप्रग-सरकार के एम्मे खोट लउके लागल। देश के उभरत, प्रभावशाली युवा नेता राहुल गाँधी एके 'विनाशकारी' कहि के विरोध कइलन त पर्यावरन-मंत्री जयरामो जी के नदी जोड़ो परियोजना में 'विनाशे' लउके लागल। हालांकि बाद में बुंदेलखण्ड के सूखा क्षेत्र में सिंचाई समस्या के निदान खातिर, राहुल जी केन आ बेतवा नदी जोड़े के हिमायत कइलन, बाकि २३१ किलोमीटर लमहर नहर से पर्यावरन के नुकसान के शंका देखि, इहो खंडित योजना ना पूरल।

सुप्रीम कोर्ट के निर्देश, हिमालयी आ प्रायद्वीपी नदियन के जोड़े वाली महत्वाकांक्षी परियोजना के मूर्त्तरूप देबे के भइल, त सरकार एकरा में लागे वाला भारी खर्चा के हवाला देत हाथ खड़ा क लिहलस। अब सुप्रीम कोर्ट एह परियोजना के समय बँधल टाइम में पूरा करे क आदेश देहलूँ बा, त का होई ? कुछ लोगन के उमेद बढ़ल कि नदियन के जोड़े वाली परियोजना से हमनी क देश के खाद्यान्न के उपज दूगुना बढ़ि के ४५ करोड़ टन हो जाई आ हमनी क बढ़त आबादी सुख चैन से जीही, बाकिर अइसन होई तब नऽ ? हमहन किहाँ त आजादी का तुरंते बाद बनल नर्मदा-परियोजना आज ले पूरा ना भइल। कारन ऊहे, क्षेत्रीय राजनीति, कानूनी दाँवपेंच, लालफीताशाही आ स्वयंसेवी कार्यकर्त्तन के भारी विरोध।

पड़ोसी देश चीन अइसने नदी-जोड़ो परियोजना पर काम शुरु-कइलस आ निर्धारित समय से पहिले, १८३०० मेगावाट के क्षमता वाला थ्री चार्ज बाँध बना के तइयार क दिहलस। चीन के दक्खिन-उत्तर जल परियोजना, अंतर बेसिन जल-स्थानान्तरण वाली संसार क सबसे बड़हन परियोजना हवे। आज चीन ओकरा सुखद लाभ का स्थिति में बा। ई बात कहल जा सकेला कि उहवाँ लोकतंत्र नइखे, बाकिर का ईहो कहल जा सकेला कि हमहन किहाँ राष्ट्रीय सोच के मूर्त रूप देबे के

प्रस्तावित नदी जोड़ो परियोजना के रूपरेखा

एन0डब्लू डी ए के प्लान का मोताबिक हिमालय से निकले वाली नदियन आ भूटान, नेपाल से आवे वाली नदियन के जोड़ि के 30 गो नहरन का जरिये आपुस में जोड़े के रहे। एमें हिमालय से निकले वाला एरिया का ओर चौदह गो नहर आ प्रायद्वीपी क्षेत्र से सोरह गो नहर जुड़ती सन।

बरिस 2002 में अनुमानित लागत 16000 करोड़ हर साल का हिसाब से 5 लाख 60 हजार करोड़ आँकल गइल रहे। कुल 30 जोड़ में 21 गो स्वतंत्र आ अंतर आश्रित 9 गो लिंक्स नदियन के आपुस में जोड़ पइतन स।

मानसून मे गंगा, ब्रह्मपुत्र आ मेघना बेसिन में जल अधिकता विनाशकारी बाढ़ लिया देला, जबकि पच्छिमी भारत आ प्रायद्वीपी बेसिन में पानी के कमी हो जाला। एकरा संतुलन खातिर, आइ डब्लू टी (अंतर बेसिन जल स्थानान्तरण) एकमात्र उपाय रहे, जवन नेशनल वाटर डेवलपमेन्ट एजेन्सी सुझवले रहे।

निश्चय, साहस आ प्रतिबद्धता नइखे। चुनौती सकारे के मजबूत दिलेरी का बावजूदो अनिश्चय बा।

जल के प्राकृतिक, पंरपरागत सोत हमन का विशाल भू-भाग वाला देश में एतना कम ना रहल। नदी, झरना, झील, ताल आ दह हमनी का संस्कृति के पोषक आ पालक रहल। एही से मानुस आबादी पानी का एही सोतन का आसपास आपन आश्रय लिहलस। अब जब एह सोतन के, पर्यावरन प्रदूषण, प्राकृतिक कारनन से हमन ना जोगा-बचा सकलीं जा त एकर दोस केकरा माथे मढ़ाई ? साफ-सफाई, शुद्धीकरण आ सटीक देखभाल का अभाव में, आ पर्यावरण-असंतुलन का कारन धीरे-धीरे ताल, झील, दह आपन अस्तित्व गँवावे का कगार पर पहुँच गइलन। कम से कम इन्हन के बचावे आ फेर से एह जल संरक्षा वाला क्षेत्रन के जल-प्रबंध खातिर त नदी-जोड़ परियोजना का भूमिका का रूप में हमनी आ हमनी का सरकार के जल्दी से जल्दी कदम उठावहीं के चाही। एह परियोजना में एह बात के पक्का बेवस्था जरूर होखे के चाही, कि गंगा नदी के अविरल-गतिमान धार ना टूटे आ ओकरा जल के मौलिकता के क्षरण ना होखे। प्रदूषण खातिर कठोर कानून बने आ कठोरता से लागू होखे।

●●●

सुरहा–झील

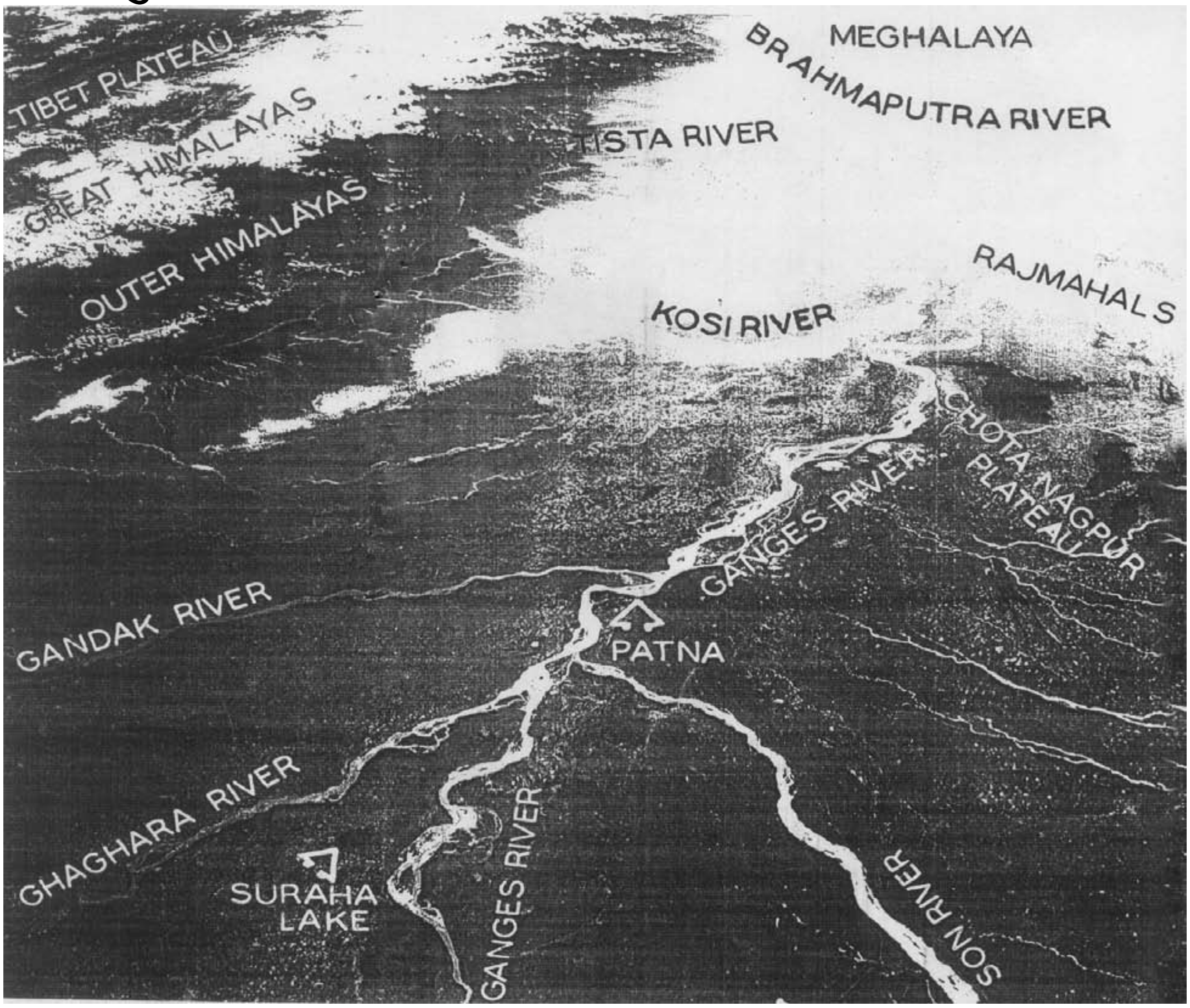

सुरहा–झील

147 नाटिकल माइल, बलिया के उपर से लिहल गइल फोटो (अपोलो–7 से साभार)

राजा सुरथ के ताल : बलिया के 'सुरहा ताल'

[पूर्व प्रधानमंत्री माननीय चन्द्रशेखर जी के सत्प्रयास का बावजूद, पर्यटन जोग आकर्षक मनोहारी ताल सुरहा आजुओ अपना पुनरुद्धार, उचित रख-रखाव आ जल प्रबंधन के बाट जोहत बा]

❑ डॉ0 श्रीराम सिंह

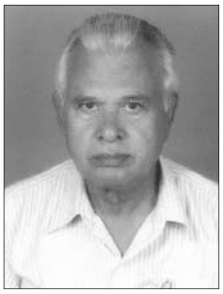

हरियर भरल-पुरल खेती वाली जमीन, फलदार फेंड़ आ जलसोत का दिसाईं पूर्वी उत्तर प्रदेश भगिगर बा। गंगा जइसन पवित्र नदी का साथे, सरयू, गोमती, घाघरा, राप्ती आ टोंस जइसन नदियन का एह क्षेत्र में कई गो ऐतिहासिक प्राकृतिक झील अपना विशाल जल-संपदा का सँगे-सँग खेती-बारी आ पर्यटन का लेहाज से लोगन के ध्यान बरबस खींचेली स। एह में सर्वाधिक चर्चित सुरहा ताल, बलिया शहर से आठ किलोमीटर उत्तर २६०२.१८ हेक्टेयर क्षेत्र में बा। बरसात में एकर एरिया बढ़ि के ३६४२.२५ हेक्टे० हो जाला।

मधहा, गरारी आ कटहर नाला जइसन जल स्रोत वाला नाला एके क्रमशः पच्छिम-दक्खिन आ पच्छिम-उत्तर आ गंगा का ओर पूर्वी ओर से जल से भरे-पुरे में सहायक बा। कटहर नाला २२.५३ किलोमीटर राह तय करत गंगा नदी से 'लिंक' करेला। गंगा-सुरहाताल के जल-स्तर से मिलल पानी के बढ़ला-घटला क अनुसार जल के बहाव कबो गंगा से सुरहा का तरफ आ कबो सुरहा से गंगा का तरफ होला। ई नाला एक तरह से सुरहा में जल भराव आ ओकरा बाद जल निकासियो क काम करेला।

सुरहा से जल निकासी के अउर तीन गो सोत बा। नकटा ड्रेन (७.३४ कि०मी०), सुरहा-ताल नहर (४७.७ कि०मी०)। एह नहर के हेडवर्क मैरीटार गाँव के पच्छिमी छोर, आ ताल के उत्तरी किनार प बा। एही से पाँच गो उपनहर - कैथवली माइनर, देवडीह माइनर, खरौनी माइनर, केवरा माइनर आ सहतवार माइनर निकलल बाड़ी सन। इन्हनी से सिंचाई खातिर १६.८ मिलियन क्यूबिक मीटर पानी ताल से निकालल जाला। ई बात अउर बा कि सिंचाई खातिर बनल एह नहरन के हाल अब बेहाल बा।

तिसरका सोत कटहर नाला, दक्खिन-पूरब से, बरसात का समय पानी से भर के ताल से मिलेला आ बरसात बाद नाला जल निकासियो क काम करेला। एह नाला पर शहर में अधिवक्ता नगर आ शहर के बाहर बहादुरपुर में दू गो रेगूलेटर बा। कटहर नाला, साफ-सफाई आ व्यवस्थित देखभाल क माँग अबहियों कर रहल बा।

किंवदन्तियन में इहाँ पहिले राज करे वाला राजा सुरथ चर्मरोग से ग्रस्त भइला पर, वैद्यन का गंगा स्नान का सलाह पर, गंगाजल के सुगम प्राप्ति खातिर एह बड़हन झील क निर्मान करवलन आ नाला खोदवा के गंगा नदी से जोड़ववलन। एह गंगा जल से नियमित नहइला से उनकर चर्मरोग दूर हो गइल। तबसे नाला क नाँव कष्टहर आ ताल क नाँव सुरहा हो गइल। सुरहा, साँच पूछीं, त घाघरा आ गंगा का बीचोबीच संगम डोर से बन्हाइल लागेला। कटान आ मार्ग-परिवर्तन प्रक्रिया में घाघरा आ गंगा का बहाव का कारन बनल 'आक्स-बो-झील', 'दह'-मुड़ियारी आ 'दह' रेवती बा। ई आजो-एह समय में, बरसात का समय घाघरा नदी आ सुरहा में मिल जालन स। नदियन का आकार लेखा ई दूनो दह (झील) अपना मनोहारी छटा आ मछली - धन खातिर प्रसिद्ध बाड़न स। बी०एच०यू० के भूगोलविद् डॉ० रामलोचन सिंह सुरहा के गंगा-घाघरा क मिलन-स्थल बतवले बाड़न। लोक मान्यता ई मानेले कि राजा सुरथ कटहर नाला लेखा, सुरहा के घाघरा से जोड़े खातिर दुसरको छोर क नाला खोनववले रहलन।

सुरहा के जल में रासायनिक परीक्षण से पता चलल कि एमे पी०एच०, पानी में घुलल आक्सीजन, स्वतंत्र कार्बन डाई आक्साइड, एलकैलिनिटी, कैल्शियम, क्लोराइड, नाइट्रेट, फास्फेट के जलीय सान्द्रता एके आदर्श उपजाऊ झील के मान्यता देबे खातिर काफी बा। एही तरे सुरहा के तल भूमि 'क्लेई-टेक्श्चर' (मटियार) वाली बा, जवन कृषि आ पेड़ पौधा खातिर त उपयोगी बटले बा, जलीय पौधन आ मछरी उत्पादन का लेहाज से अनुकूल बा।

जलीय पौधन में सेवार (शैवाल) प्रजाति के

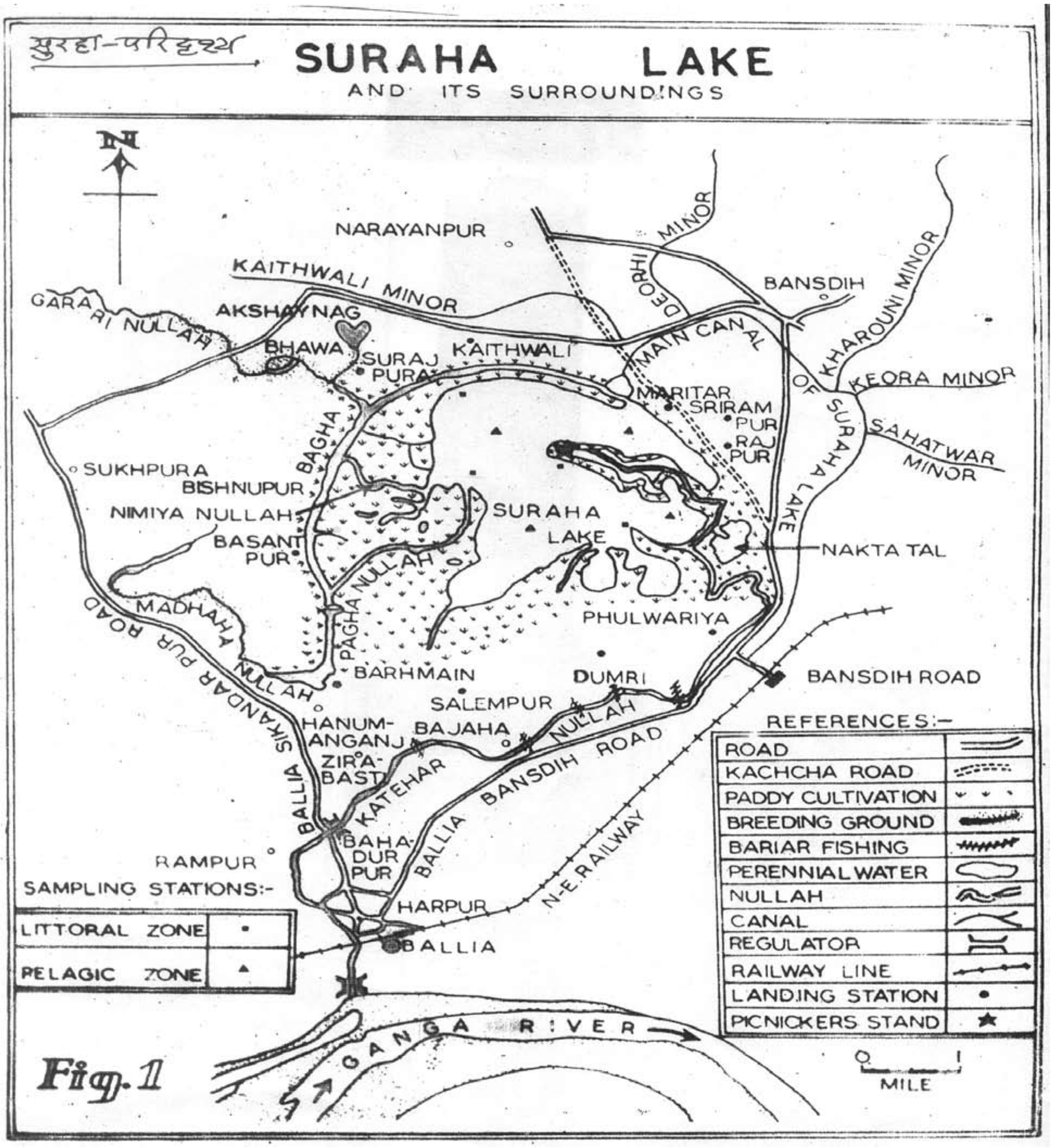

Fig. 1

आर्केनिया, पिस्टिया, ट्रैपा, नाजाज, एपोनोगेटान, निम्फिया, सालमीनिया, हाइड्रोराइज, सैजिटेरिया, ओराइजा, इलियोकैरिस आ लिरिक्स जइसन कूल्हि प्रजाति सुरहा में पावल जाली स। इन्हन की अधिकता का कारन, 'चेकिंग' से नाइ चलावल आ जाल डालल कठिन हो जाला आ मछरियनों के अनुकूल ना रहेला। देसी मछरी सेवार खाली स ना, एह से एतना ढेर संसाधन नष्ट हो जाला। उ० प्र० के लगभग कूल्हि झीलन क इहे स्थिति बा। माइक्रोस्कोप से लउके वाला जलीय पौधन के एगो प्रजाति फाइटोप्लैंकटान आ जूप्लैंकटान के रोहू, कतला आ नैनो प्रजाति के मछरी आहार करेली सन। उन्हनी के स्वास्थ आ विकास 'प्लैंकटान' के संख्या आ गुणवत्ता पर निर्भर बा। प्लैंकटान का रूप में उपलब्ध भोजन में ६७.४ प्रतिशत भाग 'फाइटो' आ २.६ प्रतिशत 'जू प्लैंकटान' होला, एहू 'फाइटोप्लैंक्टान' में ७० फीसदी 'ब्लू एलगी', ६० फीसदी अंश "माइक्रोसिस्टिस ऐरुजिनोसा" क होला, जवना के मुख्य देशी मछरी ना खाली सन।

सुरहा ताल का जरिये धान का खेती में- मुख्य रूपसे जयसुरिया, तुरहिया, सुगापंखी आ सिंगरवा का जवन पानी का संगे-संगे, ओही अनुपात में बढ़त चल जाला। ऊपरे ऊपर एकरा बालियन के काटल जाला, नीचे के हिस्सा आठ-नौ फुट पनिये में सरि जाले। जुलाजिकल सर्वे में, ई ताल मछरियन के ६० प्रजातियन (स्पीसीज) खातिर मानल जाला। हजारन बीन मलाह परिवारन के मुख्य आजीविका इहे बा। ए मछरियन में रोहू, नैन आ कतला मछरियन के माँग जादा बा। ई तीन से पांच किलो तक वजन के हो जाली सन। ई स्थिर पानी में अंडा ना देली सन। गंगा नदी से कटहर नाला का जरिये बरसात में आ जाली सन। दुसरका टाइप के मछरी, पानी के बाहर हवा में साँस ले सकेली स - एह प्रजाति में कवई, मांगुर, सिंधी होली सन। कवई के फेड़ा पर चढ़े वाली मछरी कहल जाला। १९६७-६८ आ बाद में २००९ में कम बरखा आ सूखा का कारन एह मछरियन के लुप्तप्राय मानल जाला। आजु स्थिति दोसर बा अब मत्स्य-उत्पादन के क्षमता आधो से कम हो गइल बा। सुरहा के जलीय पौधा 'फाइटोप्लैंकटान' प्राइमरी प्रोडक्शन के आधे भाग मछरी खातिर क्षमतावान बा। आजु सबसे बड़हन समस्या सुरहाताल में 'सेवार' आ 'माइक्रोसिस्टिस' नियंत्रण के बा। ऊहो नियंत्रण रासायनिक ना, जैविक होखे के चाहीं। एमें विदेसियो मछरी छोड़ल जाये के चाहीं। जइसे ग्रास कार्प आ सिल्वर कार्प टाइप के मछरी, जवन सेवार आ जलकुंभी के जरि खाली सन। ताल का साथे कटहर नाला के सम्मिलित नियंत्रण व्यवस्था आ रखरखाव होखे के चाहीं। गंगा सुरहा में मछरियन के प्रवाह में कवनो रुकावट आ जाल ना डालल जाय। तबे ऊ मछरी बाँच पइहन स, जवन चार-पाँच किलो क हो जइती सन, बाकि पचासे-सौ ग्राम के बेरा पकड़ लिहल जाली स।

जाड़ा में घुमन्तू, प्रवासी पक्षी, चिरइयन के झुंड अतिशीत से बाँचे खातिर सुरहा में आवत रहे लन सऽ आ डेढ़-दू महीना बाद लवटि जालन स। प्रवास आ प्रजनन का समय में बाहरी हस्तक्षेप आ चिरई मारे वालन पर कड़ा रोक आ देखभाल होखे त, ई ताल के शोभा आ सुन्दरता में चार चान लगा देलन स। सुरक्षा में कमी आ ढील का कारन अब एह प्रवासी चिरइयन क आइल-गइल लगभग बंद हो गइल बा।

अगर सरकारी भा गैरसरकारी संगठन का रूप में, सिंचाई-विभाग, मत्स्य पालन विभाग आ वैज्ञानिक लोगन का साथ मिला के एगो टास्कफोर्स आ मजबूत संगठन बनाके सुरहा आ एकरा सहायक झील, नाला आ दह के सुव्यवस्थित व्यवस्था, सुरक्षा आ नियन्त्रण कइल जाव एक साथ कई गो लाभ सामने आई। एक तरफ मछरी व्यवसाय से जुड़ल हजारन लोग के आजीविका चलित, दुसरा ओर बढ़िया जल-प्रबंधन आ संरक्षण से कृषि-कार्य के सहायता मिलित आ तिसरा ओर सुन्दर सुरम्य पर्यटन-स्पाट का रूप में विकास से व्यवसाय रोजगार करे वालन के सहारा मिलित।

कमल-कुमुदिनी, भरल बिपुल जल राशि वाली प्रकृति के अनुपम देन एह तरह के बड़बड़ झील आसपास के निवासियन का साथ, सरकार, स्वयंसेवी संगठन आ वैज्ञानिक-बुद्धिजीवियन के सम्मिलित प्रयास, सहयोग का साथ साथ रचनात्मक क्रियाशीलता के बाट जोहत बाड़ी स। बलिया से रेल, सड़क दूनो मार्ग का अलावा छोट-छोट सड़कन क संजाल से संपन्ना भइला का बादो जल-सम्पदा आ जैव-सम्पदा के खान एह सुरहा ताल के गहिराई, छिछिलापन में बदल रहल बा। ताल के चारू ओर चार-पाँच फीट गहराई वाला किनार के एरिया, मिट्टी-क्षरण आ कचरा भराव का कारन भरा गइल बा। ताल के जल-संरक्षण क्षमता घटत जा रहल बा। अधिकतम पानी क क्षेत्रफल जब ३४२७-६२६ हेक्टैयर होला, त पानी के सतह आर०एल० १८६-१६० फीट का आसपास रहेला। एह तरह से पानी के अधिकतम गहिराई मात्र १२-१४ फुट हो पावेला। ए गहिराई के चार-पाँच फुट अउर बढ़ावे के जरूरत बा जवना से ताल-सुरक्षा का साथ एकरा चारू ओर खेती लायक अउर जमीन मिल जाइत।

सुरहा के आकर्षक आ रमणीय पर्यटन स्थल आ पक्षी-बिहार बनावे का दिसाईं पूर्व प्रधानमंत्री चन्द्रशेखर जी के चिन्ता आ कोशिश से एगो बड़हन उमेद जागल रहे, सुरहा का पच्छिमी किनारा बसंतपुर का लगे एगो शहीद स्मारको बनल, बाकि उनकर कल्पना साकार करे में, सरकारी आ सामूहिक प्रयास के जरूरत बा। ●●●

भावानुवाद : डॉ० अशोक द्विवेदी

प्रभुनाथ मिश्र

[डॉ0 भगवत शरण उपाध्याय, प्रभुनाथ मिश्र के जनकवि क संज्ञा देत, उनुका काव्य-संगह 'हरियर-हरियर खेत में' के प्रस्तावना (1958) लिखले बाड़न। प्रभुनाथ जी बलिया के खाँटी भोजपुरी कवि रहलन। 'बिहान' प्रेस चलावत, ऊ अपना गाँव-जवार के खेतिहर, मजदूर आ खेत-खरिहान के श्रम, सरधा, विश्वास, सुख-दुख, पीड़ा आ आक्रोश के जियत रहलन]

– सम्पादक

'गरजि-गरजि अब गाउ रे कोइलिया'

तहरा कुहुँक से गुँजेला असमनवाँ
सुनि–सुनि फाटे फेड़–रुखवो क कनवाँ
तबो नाहीं सुतरल तहरो सपनवाँ
जियरा के पीर नाहीं बुझेला जमनवाँ
कुहुँकत–कुहुँकत बिति गइले जुगवा
गरजि–गरजि अब गाउ रे कोइलिया !

जब अइली बगिया सजावे क समइया
उलटा बयरिया बहेले पुरवइया
झरे नाहीं पावेले पुरनकी पतइया
मधुरितु देले पतझार के दोहइया
बइठि के नया–नया पतई के छँहियाँ
नया नया गितिया सुनाउ रे कोइलिया !

चारू ओर लउकेला झाड़ अ झँखरवा
पनखी के तोप तोपि देला पतझरवा
टहकत नइखे गुलाब टहकरवा
बगिया में बाटे दुपहरिये अन्हरवा
गाइ दे दिपक–राग, बरि जाइ बाती
बगिया में दियना जराउ रे कोइलिया !

नया–नया सुर वा में नया राग गाइ दे
आजु गाँछ गाँछ के सोहाग के सजाइ दे
बगिया के भगिया झुराइल, खिलाइ दे
बान्हि–बान्हि तान में बसन्त छितराइ दे
गीति के अवजवा गुँजाउ रे कोइलिया
सुतल धरतिया जगाउ रे कोइलिया !

चइत के कटनी

❑ स्व0 शिवदत्त श्रीवास्तव 'सुमित्र'

सजनी खेते चललि खियावे।
लहकल बेरा भइल कुबेरा, पछिवा घुँघुट उठावे ।
कइसो तोपल चढ़ल जवानी रहि–रहि के झलकावे ।
सजनी खेते चललि खियावे।।

मेटा भरल माथ पै छलके, सतुआ गिरे न पावे ।
तोपे आँखि अचरवा उड़ि–उड़ि धइ–धइ के बेलमावे ।
सजनी खेते चललि खियावे।।

धरती जरे दवँक के मारे, तलफल धूरि नचावे ।
माने ना बरइया झमटल चुभ–चुभ काँट गड़ावे ।
सजनी खेते चललि खियावे।।

डहरी–डहरी निहुकल रहरी, अँकुसा पेंच लगावे ।
के काटल केकरा से खूँटी बदला लागल सधावे ।
सजनी खेते चललि खियावे।।

फागुन के फगुनहट बीतल चइता झाँझ बजावे ।
आगा हसुँआ पाछा सजनी साजन के मुसकावे ।
सजनी खेते चललि खियावे।।

खनकल चूड़ी ठमकल हँसुआ,सजनी पलक गिरावे ।
लड़लि आँखि तिरिछा के अंखिया अंखिया के सरमावे ।।
सजनी खेते चललि खियावे।।

लहकल रहे जुड़ाइल जियरा, ना बोले बतियावे ।
चूल्लू भर पानी में लागल प्रेम लहर लहरावे ।
सजनी खेते चललि खियावे।।

सुख दुख के नइया दुइ प्रानी, हिल मिल डाँड़ चलावे ।
आन्ही चले न व्याकुल कोई एक जीव बनि गावे ।
सजनी खेते चललि खियावे..।। ●●●

गज़ल

❑ रामयश 'अविकल'

सोना–लेखा दिन जहवाँ आ चानी जइसन रात बा !
नीक, शहर से, अजुओ हमके आपन गाँव बुझात बा !

कान्ही से ओढ़नी ना ढरके, माथ से अँचरा सरके ना
रहनदार के बेटी जइसन अभिओ गाँव लजात बा!

जवन बात बा 'माई', 'बाबू', 'काका' अस संबोधन में
'मम्मी', 'मम्मा', 'डैडी', 'अंकल' में कहँवा ऊ बात बा!

हून–टून होखे त होखे, खान–पान छूटेला ना
आपुस में मिल–जुल के, देखऽ, कइसे ऊखि बोआत बा!

भलहीं चमक–दमक नइखे, पइसा नइखे अनघा 'अविकल'
डेग–डेग पर बाकिर इहँवा कुदरत के सौगात बा!

मिथिलेश गहमरी के चार गो गज़ल

(एक)

पतझर के दाह–पीर बतइलो प' रोक बा
अब बाग में बहार के अइलो प' रोक बा।

चर्चे कइल फिजूल बा फल के सवाद के
एहिजा त' अब पतइयो चबइलो प' रोक बा।

घट–बढ़ के चान कुछुओ करे सब सही अकास
तरइन के हाथ–पाँव हिलइलो प' रोक बा।

औरत बिना जहान के निस्तार बा कहाँ
फिर काँहें जग में बेटी के अइलो प' रोक बा।

बाटे हुकुम नकाब में पहिचान मत ढँकऽ
देखीं जुलुम कि सबसे चिन्हइलो प' रोक बा।

'मिथिलेश' उनके छूट बा काँटा गड़ावे के
हमनी के एको बून लोरइलो प' रोक बा।

(दू)

दुनिया के झूठ, साँच से ऊपर उड़े लगल
अब, एक साथे बाज–कबूतर उड़े लगल।

तूफान के गिरह में डवाँडोल बा जहाज
मौसम के रुख समझ के समुन्दर उड़े लगल।

साइत समा गइल बिया आन्ही, दलान में
बान्हल रहे जे रचिके, ऊ छप्पर उड़े लगल।

उनुका नजर के आजु चमत्कार, का कहीं
कागज त' कागजे रहे पत्थर उड़े लगल।

दुनिया के पास जब खरा सोना रहे हुजूर
तब, काहें रंग आग में ओकर उड़े लगल।

घरहीं के पोर–पोर में जब भर गइल अँगार
असमान के सिवान में बादर उड़े लगल।

(तीन)

सहयोग के बिना कहाँ, रौनक जहान के
नइखे अगर सुरुज, त' कवन मोल चान के।

रातो से बेलहज दशा जब दिन के हो गइल
लुतुकी मुँहे लगा दिहीं अइसन बिहान के।

जइसे बिना सुगंध के हो जाय कवनो फूल
हालत बा आजकल उहे हिंदोस्तान के।

रोटी, मकान, कपड़ा के जहवाँ तलाश बा
ओहिजा कथा बँचात बा पुष्पक विमान के।

कुछ लोग के नसीब में चउरो मुहाल बा
कुछ लोग खाए भात संगे घीव सान के।

जग के हरेक भाषा से हमके पियार बा
बाकिर, हमार भोजपुरी टुकड़ा परान के।

रउवा जो मन से चाह दीं तरई झरे लगी,
मुँ काँहे रउवा ताक रहल बानी आन के।

आपन परान दे दिही, ऊ पीछे ना हटी
'मिथिलेश' जेकरा बा पता कीमत जुबान के।

(चार)

पतझर उड़त गुलाल बा, हम–कइसे चुप रहीं
मधुबन भइल बेहाल बा, हम कइसे चुप रहीं।

खाली सेवार बा जहाँ, मछरी के नाँव पर
ओहिजे डलात जाल बा, हम कइसे चुप रहीं।

जुगनू के माथे ताज बा, बेड़ी सुरुज बदे
सगरो इहे तऽ हाल बा, हम कइसे चुप रहीं।

इस्कूल, अस्पताल, अदालत, अदब, धरम
सबका सिरे दलाल बा, हम कइसे चुप रहीं।
होरी के जिंदगानी रसातल में मिल गइल
'लहना' के गोटी लाल बा, हम कइसे चुप रहीं।

अबले सिरिफ जुलुम रहे बस रोटिये तलक
इज्जत के अब सवाल बा, हम कइसे चुप रहीं।

कुइयाँ, तलाब, झील, सुखाइल बा जल बिना
दरियाव सब निहाल बा, हम कइसे चुप रहीं।

'मिथिलेश' साँच–साँच कहल बा गुनाह अब
ऐना के ई मलाल बा, हम कइसे चुप रहीं।

●●●

अरे सरकार होली में

❑ तंग इनायतपुरी

गज़ल लिखनी हं सातो रंग से चटकार होली में।
बोलवले बा केहू हमरा के, देके तार होली में।।

कबो हमनी लगवले जे रहीं, कचनार होली में।
उ बढ़के हो गइल बा कें तरे छतनार होली में।।

कबो एकरार होली में कबो इनकार होली में।
गजब उल्टा भइल बा दिल के कारोबार होली में।।

चलल बानीं अगर लिहले अकेले रूप के दौलत।
रहीं हुशियार, बाड़े सन इहाँ बटमार होली में।।

बिरज मशहूर बा लठमार होली से त, बा लेकिन
इहाँ घायल भइल बा दिल, इ कनखीमार होली में।।

उ सरदी के सतावल तऽ महिनवन पर उठल बानीं।
कहा जाएब बुढ़ौती में चचा, इ कनखीमार होली में।।

हई देखीं सुलखना के, उ दारू पी के सूतल बा
आ घरनी कह रहल बीआ कि बा बीमार होली में।

बड़ा भागे से मिल जाला कबो ससुरार में गारी।
तनिक अनराज मत होखीं अरे सरकार होली में।।

मुहब्बत के बा लिहले जाल केहू दिल के दीअर में।
कि चिरई के बझावे आ गइल मिसकार होली में।।

कहीं त 'तंग साहेब' छोड़ के हितई निकल जाईं।
कि महंगी में सम्हारी हाय हम घरबार होली में।।

अंकुश्री के दूगो कविता

(एक) पत्थर कोइला

करिया कोइला
ओकर रंग बदलल
जर के लाल हो गइल।
जतना ठंडा रहे
लहलहाते,ओतने
गरम धमाल हो गइल।

केहू के गरमी
देर ले ना ठहरे
त उहे हाल हो गइल।

पत्थर जस कोइला
कस आग के इयारी
ओकर काल हो गइल।

(दू) ढिबरी

चुल्हानी क एक तरफ
बरत रहे ढिबरी।

अन्हार हटावे बदे
बरत रहे ढिबरी।

तेल पिये बाती आ
बरत रहे ढिबरी।

जरत रहे बाती आ
बरत रहे ढिबरी।

समय–सन्दर्भ के व्यंग

नया साल के नया 'उपहार' महँगाई के चौतरफा वार !!

❑ शिलीमुख

ए बेरी, चइत शुक्ल प्रतिपदा वाला हमहन के नया साल जिला-जवार, प्रदेश आ देश खातिर बहुत हलचल वाला रहल। दुख-बेमारी, संकट आ तकलीफ झेले के त हमनी के आदत बा, ठीक ओइसहीं हर तरह के उत्पात, घपला, घो. टाला, बेवस्था के परेशानी झेले के सरकारो के आदत परि गइल बा। अब कहाँ-कहाँ, का-का ठीक कइल जाव ? ए बेरी अगर हमन खातिर नया साल महँगाई आ टैक्स के नया कमर तोड़ सौगात दिहलस त सरकारो के सोझा कबो बजट, कबो सेना, कबो साख के, कम धरमसंकट ना खड़ा भइल। सरकार चलावे वाला लोग सामरथ वाला होला। ऊ हर समस्या आ संकट से निपटे क तरीका खोजिए लेई, बाकि हमनी का पास, सिवाय धीरज आ सहला के, दोसर का उपाय बा ?

ओइसे महँगाई त पहिलहीं हमनी के सुख चएन सपना छिनले रहलि हा बाकिर नवका बजट का बाद जवन आगम लउकत बा ओसे त खाना बेसवाद हो गइल बा आ सपना देखे वाली नीनो आँखि से उड़ि गइल बा। कई बरिस बाद आजु, अशोक द्विवेदी के गज़ल के कुछ शे़र जबान पर आवऽता -

"चूल्ही में आगि बा तऽ कराही में भरल राखि
चउका से उभरि आवेले खाँसी कबो कबो।
महँगाई में बा टेंट हलुक, मन दबल-मुवल
गरदन प' बा सरकारी गँड़ासी कबो-कबो।"

बात जरूर कुछ अटपट बुझाई, बाकि बड़का-बड़का महानगरन में पहुँचल नोकरी-पेशा के खाली-पेट्रोले-डीजल ना, खाना पकावे वाला गैस का साथे साथ, सुख-सुविधा आ जरूरत के हर चीज के भाव बेभाव हो गइल बा। का खाईं, का पीहीं, का लइका-लइकी पढ़ाईं, का बचा के, दवा-दारू - कराईं ? इहाँ त अपने के सम्भारल कठिन, ऊपर से बाल-बच्चा तवना पर कहीं हीत-नात, दोस्त-मीत गाँव-जवार से आ गइल त, खाली सोचि के करेजा काँपे लागऽता। मतारी-बाप, भाई-बहिन के सपना अलगे बेधऽता, आ इहाँ सकून मोहाल बा।.... बम्बे में हमार एगो छोट भाई बा, फोन प' बतावे लागल कि सरकार चवन्नी देके, अठन्नी वसूले का फेर में बिया, (कइगो नया टैक्स बढ़ि गइल) भइया मन करऽता कि नोकरी छोड़ि के चलि आईं ?

चुनाव-फुनाव होते रहेला। कबो विधानसभा, कबो लोकसभा, कबो नगर निगम। सरकारो का करो, कहाँ कहाँ अनुदान, सब्सिडी देव ? 'वोट' खातिर चाउर-दाल, रुपया-पइसा त केहू के नीक ना लागी, आचार संहिता बा। टैब्लेट कम्प्यूटर, मोबाइल, टी बी दियाई, बेरोजगारन के मजदूरन के सपना बँटाई, रोजी रोटी कमाए के छूट रही, किसानन के खाद-बिया, बिजुली, कर्जा माफ होई, लइकन क फीस ना दियाई, घूमे के साइकिल आ किताब-कापी जवन चाहीं, दियाई बाकि महँगाई? ना भइया ना एकरा पर, सरकार के हाथ बन्हाइल बा। रेल चलावे, जहाज उड़ावे, सड़क बनावे, विकास लियावे आ सरकार चलावे खातिर खर्चा कहाँ से आई ? खजाना खाली, सगरो घाटे-घाटा, त घाटे के सही, बजट त बनावही के परी। दाम ना बढ़ी, टैक्स ना बढ़ी किराया ना बढ़ी, त भला के तरे देश चली ? विकास के रथ जाम हो जाई, कुलि योजना लटकि जइहें स। सरकारी बेवस्था के तामझाम, खइला-पियला, बोलला-बतियवला, अइला-गइला, उद्घाटन आदि में रुठला-मनवला, सरकार चलवला आ सरकार बँचवला का खर्चा में कटौती ना नूं हो सकेला। ई मशीनरी चलत रही, तबे देश चली।

लोकतंत्र में सबकुछ देखे-सुने आ सहे के परेला। बोले, कहे के सबकर अधिकार बा, बाकिर सुनि के, गुने आ करे क अधिकार संसद आ सरकारे के बा। ऊ नीति-नियम बनाई, ऊहे सबकुछ चलाई। ऊ जइसे चाहीं, वइसे करी। भीतर से मन ना होई, तब्बो। भाड़ा, किराया, दाम, टैक्स आ आमदनी क जरिया बढ़ावे के 'पावर' ओकरे बा, ऊ जेंतरे, जवन रस्ता निकाली ओही तरे, ओपर हमन के जाए के बा। त का फायदा मीन मेख निकलला के ? ढेर अनकुस बा, नइखे पोसात त लवटि जा गाँवे-घरे, खेती करऽ, मजूरी करऽ। हम त भाई का साथ

साथ बेटो-भतीजा लोगन से कहि दिहनीं कि शहर में गइल बाड़ऽ 'दु पइसा कमाये कि मीन मेख निकाले आ बिरोध करे !' हमार त ना औकात बा आ ना बेंवत कि केहू के चुनौती दीं, ऊहो सरकार के ? अरे भइया ना त हम बिरोधी पार्टी के राजनेता हईं, ना अन्नाा हजारे, ना रामदेव, हम त गइल-गुजरल जनता हईं - कँहरे आ दर्द बरदास करे के आदत बा। जवन बिधाता चहिहें, ऊहे होई, जवन जूरी-आँटी खाइल पियल जाई ! महँगाई से चउँड़ चरचराव, चाहे करिहाँव टूटो एम्में हमन के कवन बश बा ? ●●●

कविता

औकात

❑ **डॉ. अयोध्या प्रसाद उपाध्याय**

आइल, गइल साल
ना बुझाइल
अझुराइले रहि जाता सब
नून, तेल, लकड़ी में
जे पसीना बा बहावत, चइत, बइसाख आ
जेठ में खून बा जरावत
काँखत महँगी के बहँगी तर-
नइखे भरत ओकर पेट
नइखे आँटत
ठेठवलो प' जांगर
कमीना, कामचोर कहात
बाटे सतावल जात बेचारा मजूर !
बनि के फरियादी-
बेर-बेर गोहरावत बा 'हजूर'
तबो होखत बा नामंजूर
समय के अजबे बा बात
खाये के चाहीं जेके लात
ऊ देखत बा ओकर औकात !
बेचारा बाटे घिघियात...
"पेट पर मति मारीं लात !
जवने देबि तवने लेबि,
बाकिर मत दीहीं गारी,
बाड़ी एहिजे बेटी-महतारी
हमार इज्जत बा रउरे हाथ में
आखिर जिये-मरे के बा हमनिये के साथ में !!"

●●●

लघुकथा

एगो अउर इन्द्र

❑ **अतुल मोहन प्रसाद**

आज इन्द्र के सिंहासन पर बइठते, लागल कि उनकर सिंहासन हिलत बा। पसीना के बूंद चेहरा पर चुह-चुहा आइल। तुरन्ते तीन बेर थपरी बजवलन।

- 'का बात बा ? हमरा बुझाता हमार सिंहासन आज हिलत बा। केहू तप करत बा का ?'

- 'आज के जमाना में तप कहां बा ?' पहिलका सेवक कहलस।

- 'तब का कारन हो सकेला ? बिना कारन त सिंहासन हिली ना।'

- 'अन्नाा अन्ना लिहल बन कर देले बाड़न। आज उनका अनशन के दसवां दिन हऽ।'- दुसरका सेवक जबाव देलस।

- 'अन्नाा अइसन काहे कइले बाड़न ? उनका के हमार सिंहासन चाहीं का ?'

- 'रउरा सिंहासन से उनका कवनो मतलब नइखे। ऊ एगो अइसन लोकपाल बनावल चाहत बाड़न, जवन रउवा से लेके चौकीदार तक के हरकत पर आपन नजर रखले रहो।'

- 'तिसरका सेवक अन्नाा के अनशन के खुलासा कइलस।'

- 'रउवा तीनों जना जाके अन्नाा के अनशन तुड़वावे के प्रयास करीं। हमार संदेशा अन्नाा के देब कि जइसन ऊ लोकपाल चाहत बाड़न, ओकरा से मजबूत लोकपाल के व्यवस्था में हम लागल बानी। उहों के दाना-पानी लेवे शुरू करीं।'

इन्द्र के तीनों सेवक अपना मिशन पर तुरंत चल देलन स।

●●●

कविता

जो, जो रे लला....

❑ प्रकाश उदय

लाख लगा कोचिंग करववलीं
दसहन लाख पढ़ाई में
ए बबुआ, तू आस पुजइह ऽ–
'पैकेजदार' कमाई के।

करजा से त गतरे–गत्तर
लदले बानी अपना के
तहरा के त बबुआ, खाली–
एगो अपना सपना से।

सपना, कतना सुन्दर रे
घुस जो पूत समन्दर में....।

नाक मूंद के बूड़ी मरिहे
पर टँगरी तर मूड़ी करिहे
मोती पइबे अन्दर में
घुस जो पूत समन्दर में।

तनिका नीचे घोंघा–घोंघी
तेकरा नीचे हींरा–मोती
कस के गांठ लगइहे धोती
खरके ना अभडंगर रे
घुस जो पूत समन्दर में

ऊ मोती बाजारे जइहें
लाख टका में उहाँ बिकइहें
लाख टका नौ लाख कमइहें
नौ से नौ–नौ लाख कमइहें
दुख दारिद छू–मन्तर रे
घुस जो पूत समन्दर में।

बेटा लाल लंगोटा कसले
हँस के रो, रो–रो के हँसले
इनकर–उनकर–सबकर गछले
सबहर देवी–देवता भखले

निचवा झँकले उपरा तकले–
उखड़ल गोड़वा भूपर से तऽ
घुसले पूत समन्दर में....

हाथ हिलवले हूब.... हूब भर
पाँव पटकले खूब....खूब, पर
अँटकत–भटकत गटकत पानी
गइल बेचारा डूब...डूब, तब

'' बेटवो गँववलीं
लंगोटवो गँववलीं
तोरो के गँववलीं गे धो–ति–या.......
धोतिया के तरे–तरे मो–ति–या.......

मोतिया में लाख टका
लाख में नौ लाख टका
नौ में नौ–नौ लाख टका
तवना में लाल मोरा

हिरवा हेराय गइल
अँखिया लोराय गइल
मोतिया त मछरी में–
पानी में घोराय गइल...

नाइ खोल ऽ पाल तान ऽ
मछरी धराइ गइल
गाँव में बिकाइ गइल
नून–तेल–लकड़ी

लकड़ी खाती कँकड़ी–
हाली–हाली खो
बाप गइले नाव ले के,
खायक लेके जो !

●●●

नेता चलीसा

❑ केशव पाठक 'सृजन'

हमरे देस क नेता अइसन।
चन्दन पेड़ क पहरू जइसन।।
पहिले डारत रहलँऽ डाका।
अब भइलँऽ जनता कऽ आका।।
जब वोटे कऽ पारी आई।
बरियारन में छिड़ी लड़ाई।।
गल्ली–गल्ली मानरि बाजी।
भिच्छाटन पर अइहँऽ गाजी।।
चारा डरिहँऽ, जाल बिछइहँऽ।
सबके चनतारा पहिरइहँऽ।।
लूटल रुपया खूब लुटइहँऽ।
गदहन के अब्बा गोहरइहँऽ।।
चरित हनन कऽ बान चलइहँऽ।
अपने हरिस्चन्द बनि जइहँऽ।।
मूरख जनता के भरमइहँऽ।
धौराहर कऽ ख्वाब देखइहँऽ।।
बाकिर जब बनि जइहँऽ राजा।
खूब बजइहँऽ देस क बाजा।।
दिन–दिन नया कमाल देखइहँऽ।
नित–नित एक मिसाल बनइहँऽ।।
सुरसा बनि जाई महँगाई।
दाना–दाना बिन तरसाई।।
खोटा सिक्का धाक जमाई।
तन का हऽ मनवों बिकि जाई।।
चोर–उचक्का चानी कटिहँऽ।
हाकिम जी कऽ जूता चटिहँऽ।।
सौ अपराध करी अपराधी।
तेके कोरट रच्छा बाँधी।।
थाना में पहुँची दुखियारी।
इज्जति थानेदार उतारी।।
जे हऽ ठेकेदार धरम कऽ।
ते हऽ माहिर दंगा बम कऽ।।
अपने तऽ बनि जइहँऽ टाटा।
बाकी जनता खाई चाटा।।
मरी गरीबी बिना दवाई।
अरबन कऽ माला पहिराई।।
कहिया कब केकर दल बदली।
दइबेऽ जाँनऽ काँटा–किल्ली।।
संसद में मसला सुलझइहँऽ।
चप्पल, कुरसी–मेज चलइहँऽ।।
नियम बनइहँऽ जनता खातिन।
खून बहइहँऽ सत्ता खातिन।।
घोटालन कऽ रोटी कटिहँऽ।
मानवता कऽ बोटी कटिहँऽ।।
कागज में पुरकाम लिखाई।
मौका पर वीरानी छाई।।
जनता कऽ हक खूब दियइहँऽ।
ऊपर से नीचे ले खइहँऽ।।
ई नफरत कऽ आगि लगइहँऽ।
भाई–भाई के लड़वइहँऽ।।
हिन्दू–मुस्लिम सीधा–साधा।
बालल जाई आधा–आधा।।
सोने कऽ सुगना उड़ि गइलँऽ।
मधुबन में कउआ मेड़रइलँऽ।।
केसे, के अब दुखड़ा रोई ?
सब कऽ सब दुरजोधन होई।।
लाज भइल निरलज्ज तमासा।
नैतिकता कऽ टूटल आसा।।
आजादी कऽ नाम बिकल बा।
अपराधी कऽ राज भइल बा।।
संकठ में बा लाज देस कऽ।
खतरा में बा ताज देस कऽ।।
बापू कऽ सपना अन्हराइल।
अमन–चैन कऽ दिया बुताइल।।
अबकी पारी सोचे के बा।
नागफनी के नोचे के बा।।

ई सूरति बदले के चाहीं।
सबके साथ चले के चाहीं।।
सागर महि के रतन निकारा।
राम–राज कऽ सपन सँवारा।।
जरल पेट जब काटी पूरी।
तब होई भारत जमहूरी।।
'नेता जी' अस नेता अइहँऽ।
तब कलजुग में त्रेता अइहँऽ।।
कवनो इनकलाब ले आवऽ।
नये 'सृजन' के राहि बनावऽ।।
जन कऽ मन जहिया अगियाई।
जन–गण–मन तहिया फरियाई।।
दया करीं मइया वागीसा।
असर करे नेता चालीसा।।

●●●

का विकास के गोड़ इहे हऽ ?

❑ प्रो0 विजयानंद तिवारी

ए गोइँया, तू बहुत छिपवलऽ
अब तऽ भाँड़ा फूटी
चकमक के पाकिट में धइलऽ
तोहरो धुरछुक छूटी !

अरूआइल सपना परोसि के
सभका थरिया–थरिया
अइसन तू लुकार भाँजेलऽ
लउके करिया करिया !

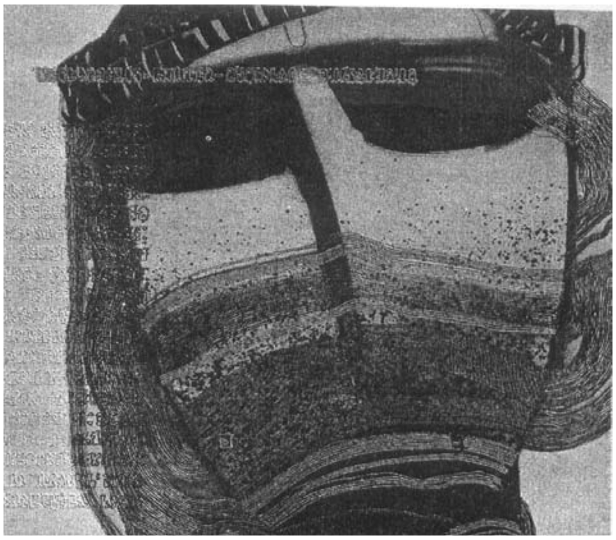

भकसी में बा लोग कि
साँसत में डललऽ तू जान
तातल नारा जीभ जरावे
मेहराइल पहिचान।

ऊल्हमेल लेसले दिल्ली से
बिजुरी केने जाले ?
आयें–बायें, नीचे–ऊपर
करिखा पोति तँवाले।

भइल मलामत सभका खातिर
ई बिछिली के दाँव
का विकास के गोड़ इहे हऽ
सिकठी भा फिलपाँव ?

●●●

सामयिकी

ज्वार भाटा

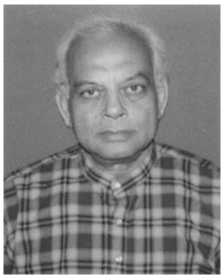

❑ राजगुप्त

अन्हारा में अँजोर करे खातिर सब हाथ में मोमबत्ती लिहले अपना-अपना घर से बहरिआइल बा। देश से भ्रष्टाचार मेंटावे के किरिया खाके सज्जी लोग सड़की पर उतरि आइल बा। एतना त साफ होइये गइल कि सगरी देश एक्के साथ जागि गइल बा। 'देखा देखी पुन्ना, देखा देखी पाप'। बुझात नइखे कवन करिश्मा भइल बा। एकबयके गाँधी टोपी, आ झन्डा के एतना बिक्री बढ़ि गइल बा कि देखि-सुनि के अचम्भा होता। हरान होखे वाला बाति इ बा कि लागता अब सचहूँ के सोरि धइले बुराई उखड़ि जाई। अब जे कुर्सी पाई उ ए राजा आ कलमाड़ी हरगिज ना बनि पाई। 'पूत के पांव पलने में चिन्हाला'। अब हर हाल में घूस, गबन, घोटाला, भ्रष्टाचार सेतिहे में समाप्त हो जाई। भ्रष्टाचार के विरोध में जहाँ हेतना आदमी जूटल बा, कुछ ना कुछ करिश्मा करबे करी। डाक्टर, इन्जिनियर परेम विआह करी। ताम-झाम से बारात ना निकली। नाऊ, पन्डित, बैन्ड-बाजा, डिस्को आ जयमाल के रस्मो-रिवाज सुनामी में दहि-बहि जाई। जहवाँ पूरा देश जागि उठल बा, ओइजा भ्रष्टाचार के कवनो माने ना रहि जाई। संसद में बिल पास होखला के पहिलही काला धन के नांव अपनी देश से मिटकि जाई। जइसे पानी पीटला पर पानी पर कवनो दागि ना रहि जाला। अब केन्द्र एक रुपया गाँव में भेजी त चलत चलत कम ना होई। आटा चक्की भले घिसि जाउ। मनरेगा के विकास के पइसा रत्ती भर ना कम होई।

सज्जन पुरुष एतना हो जइहें कि बैर-विरोध, दुश्मनी, गदहा के सींग लेखा अलोत हो जाई। मिलावट के जमाना समझी ! चाम के सिक्का लेखा इतिहास बनल रही। हर हाथ के काम, हर खेत के पानी मिली। पलानी के जगह पक्का मकान। रामराज्य सब भुला जाई।

'गाय' हमार माता हई। जेकरा पर लाखन देवता के वास रहेला। अब केहू सूई मारि के दूध ना दूही। एह अनशन के बाद आगा खातिर अनशन, हड़ताल, बाजार बन्दी, चक्का जाम के नाव मति लीहीं। सज्जी बेमारी छू-मन्तर हो जाई। चोर; चउकीदार हो जासु तऽ देश के सगरी बुराई बेलमि जाई। देश दोहरउवा सोना के चिरई कहाये लागी। सोना चांनी के पइसा चले लागी। पुरनका जमाना अस गिनाई कम, तउलि के रखाई जेयादा। मुहम्मद गजनवी सोमनाथ के मन्दिर के सोना चांनी, मोती माणिक, पन्ना लूटत रहो ना, उ लूटत-लूटत थाकि जाई तब्बो ओराई ना। जवना देश के मन्दिरन के केवाड़ी-जंगला में कीमती रत्न लागल होखे पद्नाभम मन्दिर में सोना के पलंगरी तक ले बा, का ओहु से अधिका काला धन केहू विदेश में रखले होई ? जाने के बाति बा ओह जमाना में सीता जी सोना के मृगा देखले रहली। चीन में अजुवो सोना के छरदेवालि बा।

खचाखच पंडालन में साधु संतन के प्रवचन सुनत महाकुम्भ के भीड़ि देखि के आत्मा-परमात्मा दूनू जुड़ा जाला। हम सुधरबि, जग सुधरी। इतिहास गवाह बा, जाने केतना समाज सुधारक एह धरती पर जनम लिहले। ओकरा बादो हमनी का केतना सुधरलीं जा ? तू डारि-डारि, हम पात-पात। तू कहत रह कि शराब जहर से जेयादा जहरीला होखेला त का, हम त पिअब। जाने के बाति बा। अरस्तू, चाणक्य, शंकराचार्य, बिनोबा, गाँधी से जेयादा केहू समाज सुधारक होखी का ? हेतना बड़का देश में देसवाला ओह लोगन के चले ना दिहले। ज्वार की तरे अइलें, भांटा की तरे उतरि गइलें। अब सोमार के, के भात ना खाला ? संतोषी माता के व्रत के राखऽता ? हेमा मालिनी उहे हई, भले ऊ पर्दा पर दुर्गा जी के पाठ करे।

प्यारे लाल चुनाव में का का ना बांटि के चुनाव जीति गइले। कवनो गम्हीर बेमारी के चलते साले भर में मरि गइले। उनका मुअला के बाद ओटर उनका मेहरारू पर मोहा गइले, टूअरि के नफा मिलल। अनपढ़ मेहरि चुनाव जीति गइलि। जे बरिसन से राजनीति करत रहे ओकरा मुँहके खाये के परल।

विलास बाबू अपना चुनाव में करोड़न खर्चा कके अरबन कमइले। एतना जनला के बादो जनता उनका खिलाफ मुँह ना खोललसि। विलास बाबू के विरोध ना कइलसि। से बाति ना कहलसि कि हमनी के हक काहे मारताड़ऽ ? मुर्गा-दारू खूबे अपना वोटरन के चँपवले रहले आ ऊपर से पाकिटो पूठ कइले

रहले। अइसना में उनकर नून खाके के नमकहरामी करित ? जवना पत्तल में सब खाइल ओमे छेद के करित ? सभे समझत रहे कि पूंजी लगवले बा त कमइबे करी। अइसना में कवन पाल काम करी। चोर-चोर मउसिआउत भाई।

जंतर मंतर आ रामलीला मैदान में उद्बेगला के बादो सरकार के कान पर ढीलि ना रेंगलि। फरियाद ना सुनल गइल। जनता के जुटान, तहरीर चौक अस करिश्मा ना कऽ पवलसि। बुझला बीच ई परल कि पहिला हाली लाख कोशिश के बादो अपना होती, गैर के मंच पर चढ़े ना दिहले। बाद में चिट्ठी भेंजि के विरोधी पार्टियन के बोलवले। कवनो पार्टी के होखऽ हमरी मंच पर आव। सजि धजि के आवऽ। दोस्ती के बढ़त हाथ एह से रूकि गइल कि ऊ खुदे ललकारि के कहले कि सज्जी सांसदन के बिल पास होखला तक घेराव होखे के चाहीं। एतना ललकरला, हँकला के बाद खुदे संसद के 'दर्शक-दिर्घा' में बइठे के आज्ञा मांगे लगले। रेगिस्तान में विरिछ ना होखे ई त समझ में आवता बाकिर बालू ना होखे, ई समझ में नइखे आवत। का करताड़े, आगा कवन-कवन अधातम करिहे, कुछ समझ में नइखे आवत। उहाँ का कहलीं कि तोहरा घर के सोझा बइठि के अनशन करबि। एतने से बुझाये लागल के खिसियाइल बा, के नधियाइल बा। छान पगहा तुड़ावता के ? कहल जाला बिलाई के गर में घन्टी बान्ही के ? बाकिर अन्नाा जी अपने गर में घन्ट बान्हि के रामलीला मैदान में भ्रष्टाचार मेटावे के किरिया खा के अनशन पर बइठि गइले। त उनका पाछा केतना हाथ, गोड़, मुँह हो गइल कि ओकर वर्णन कइल मोसकिल हो जाई। ओह भीड़ि के सम्हारे खातिर केहू के जरुरत ना पड़ल।

कुम्ह के भीड़ि में सभे नहनिहार होला। बाकिर जंतर मंतर के भीड़ि में अन्नाा की लेखा सब दूध के धोवल रहे। दूध में पानी फेंटे वाला लोग कइसे अपना पैदावार के खांटी कही ? कहे वाला के एतना करेजा आ जाई। ना त लोकपाल के जरूरत पड़ी नाहीं कालाधन बाकि देश के मरहम बनी। हम त इहे जानत रहली जे जनेउ पहिर लीहल उ मांस-मंदिरा से परहेज करी। भीड़ि के अद्भुत नजारा देखि के लागल अब तब में समाज में जगरम हो जाई। सब रालेगांव के ऐनक में आपन-आपन करतब देखी। बाकिर भीड़ि के भहराते पानी थीर हो गइल। एगो ढेला पोखरा के पानी में कबले हलचल मचवले रही ?

भीड़ि देखि के खुशी के ठेकान ना रहे। मरद त मरद मेहरारूओ सड़की पर उतरि आइल रहली स। तब जनलीं कि अब अपना देश के 'ड्रेस कोड' बदलि जाई। घर के लक्ष्मी घर वाली कबो विदेशी ना बनी। विदेशी के होली जर जाई। भाषण से श्रमदान के पूछ होई। मेहनत के जमाना आई। अस्पताल में भीड़ि कम हो जाई। जज लोग पुररुतिहा जइहे। रालेगांव अस देश के सज्जी गांव लउके लागी। बाकिर उ काहे के, सब कुछ बिसरि गइल। ढाक के उहे तीन पतई। अब अंगूर काहे खट्ट हो गइल ? के नइखे जानत कि बे हेलमेट लगवले मोटर साइकिल ना चलावल जाला। सीट से अधिका सवारी ना बइठावल जाला। कटिया मारि के बिजुली ना जरावल जाता। बाकिर का कहीं, अपना देश के रिवाज ? सोमार के जवन गाना हिट भइल रहे शनिचर के उ चित्त से उतरि गइल। सूचना के अधिकार के कारन केतना अधिकारी जुर्माना भरताड़े त बाति-बाति पर मोकदिमा बढ़ि जाई त देखी के ?

देखि लिहलीं, देखि लिहलीं।
भीड़ि के अद्भुत नजारा देखि लिहलीं।
साड़ी पहिर के भागत गुरु के देखि लिहलीं।
इतिहास में चुनाव के जे मील के पत्थर बनल,
अइसन दमदार शेषन के हारत देखि लिहलीं।
काजर के कोठरी से, जे छरकि के भागि गइल,
अइसन हरदेव बाबा के राजनीति करत देखि लिहलीं।
पार्टी पर अछरंग लगा के छोड़ि दिहले
अइसन नेता के थूकि के चाटत देखि लिहलीं। ●●●

भाषा–संसार

भोजपुरी भाषा-साहित्य के वर्तमान: कुछ ऊँच-नीच बाकि बहुत जरूरी बतकही

(विश्वभोज0–सम्मेलन,बलिया अधिवेशन में पढ़ल गइल आलेख)

❑ विष्णुदेव

ग्लोबलाइजेशन आ उदारीकरण के वजह से हर समर्थ भाषा के पूछ बढ़ल बा आ जब अमेरिका जइसन देश भोजपुरी के सामर्थ्य आ थाह के बारे में कुछ कहत बा तऽ एकदम से ओकरा पीछे ओह बादशाह के भोजपुरिहा लोगन के गलबॉही से अधिका उनकरा पाकिट के गहराई प्रिय बा। टीवी चैनल्स, विज्ञापन, गीत-गवनई, कैसेट्स, फिल्म, काज-परोज, धार्मिक अनुष्ठान आ जातीय-विजातीय समागम पर एह भाषा के लहरात परचम एकरा के परिचायक बा, बाकिर कवनो प्रभुता-सम्पन्न नियामक-निकाय के अभाव में भारतीय लोकतंत्र के घिनावन स्वंच्छद वृत्ति के कारन, अधिकांश ऊर्जा पेट आ हेठ के भेंट चढ़ जाता। सृजन के सोगहग सरोकार नइखे बन पावत। कबो भोजपुरी भाषा के महान सर्जक लक्ष्मी-सखी हृदय में वृध्दि के लय करत, कहले रहले-

मने मने करेली गुनावन हो पिया परम कठोर
पाहन पसीजि-पसीजि के हो, बहि चलत हिलोर।

एही सुंदर-सुखद-पावन भाषा के प्रयोग यदा-कदा छिछिल जघन्यता से हो रहल बा आ लोक-मन बेहयाई से मुसुकात, कूट करत, एह तरी निकल जाता,जइसे कल्पवृक्ष के छाँह में जुड़ा के आवत होखे । भोजपुरी के हर ललित माध्यम अनुभवहीन , उद्देश्यहीन, बुध्दिहीन आ लम्पट लोगन के जरोह हो गइल बा, जे अपना बसात सॉस से, नीक से नीक लोगन तक के ओकाए खातिर बेबस कऽ देले बा। बक्सर के एगो सिनेमा-हॉल में चल रहल भोजपुरी भाषा के फिल्म 'कइसन पियवा के चरित्तर बा' के पहिलका हप्ता के पोस्टर पर, हिन्दी में देखनउक रूप से लिखल "खुदा ने हुस्न दिया है, एक बार नहीं....तो क्या अँचार डालोगी। ठेठ भोजपुरिहा भूमि के ओह चरित्र के चिन्हासी बा, जेकर सम्बन्ध ना कबो कुँअर सिंह से रहे, ना आचार्य शिवपूजन सहाय से। एहजे अंदाजा लगावल जा सकत बा कि जब पोस्टर पर 'अइसन' तऽ परदा पर 'कइसन'? पइसा कमाए खातिर, अब भोजपुरी में का का होखी? उपनिषद के ऋषि सूर्य से प्रार्थना करत कहत रहे।

हिरण्यमयेन पात्रेण सत्यस्यापहितं मुखम्।
तत्वं पूषन अपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये।।

आजुओ सत्य सोना के ढकना से तोपाइल बा अलचार, कसमसात। जे भाषा के हूब-सहूर के पारखी बा, ऊ पिछुआइल जा रहल बा। भाषा के भस्मासुर जीवन-परिधि पर कल्याणकारी शक्तियन के गॅड़थइया के नाच नचावे खातिर हुरपेट रहल बा। एकरा पहिले कि ऊ केन्द्र में पहुँचे, अस्तित्व-रक्षा खातिर सचेत-सन्नद्ध होखे के अवसर आ गइल बा। दैन्य आ पलायन के केंचूल उतार के धावा बोले आ प्रभुत्व स्थापित करे के बेरा आ गइल बा। अन्हार के विकल्प अँजोर के अलावा अउर कुछ ना होखे। काँट के विकल्प फूले होला आ सिहुर-सिहुर के 'मर्दानगी'। भाषा के ध्रुवस्वामिनी शकन के कोरा में जाव, एकरा पहिले रामगुप्तन के ककहरा पढावल जरूरी बा। सबसे पहिले ऊहे मोरचा खुले जहाँ हारे के डर होखे। जनता के हर पीढ़ी मउगड़ ना होले। ओकरा के सही विकल्प दीं, ऊ रउआ के निराश ना करी। ऊ आजुओ 'गंगा मइया तोहे पिअरी चढ़इबो' जइसन क्लासिक के दरस-परस खातिर हॉले-हॉले छिछिया रहल बिया। भोजपुरी साहित्य में बिंदिया (रामनाथ पांडेय), फुलसुंघी (पाण्डेय कपिल), तोहरे खातिर (गणेश दत्त किरण) से लेले 'आवऽ लवटि चलीं जा' (डा० अशोक द्विवेदी) तक स्वस्थ प्रणय-कथा भरल परल बाड़ी स, जेकरा में अपना समय के वैयक्तिक आ सामूहिक सत्य सुघरतम कला-रूप में अभिव्यक्त भइल बा। यदि फिल्म माने प्रेम त, बने एह उपन्यासन पर श्रेष्ठ फिल्म। महेन्दर मिसिर से लगाइत अशोक द्विवेदी से प्रकाश उदय डा० कमलेश राय मिथिलेश गहमरी आदि तक नवो रसन के बाँकपन से उपरवँछत काव्य बा, होखे एकर गायकी, कैसेटी करण, वीडियोग्राफी। नालंदा, विक्रमशिला, कसिया, बक्सर, गोरखपुर कतने भोजपुरिहा शहर, नगर, गॉव ऐतिहासिक-पौराणिक महत्व के बाड़े सऽ, बने

इन्हनी पर डाक्यूमेन्ट्री! गोरखनाथ, भर्तृहरि, घाघ, भड्डरी, धरनीदास, दरिया साहब, मंगल पाण्डे, कुँअर सिंह, फत्ते बहादुरशाही, डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, जय प्रकाश नारायण, चन्द्रशेखर आदि विभूतियन पर बने सीरिअल, वृत्त-चित्र। भोजपुरी भाषा त गंगा ह, जब गुहथर में अतना सजोर बिया, तऽ नंदन कानन में ओकरा जोर के थाह के ले पाई?

बाकिर समय के बहत तरंग में सबकुछ संकल्पित होखलो पर, स्वाभाविक होखे तबे नीक कहाई, जोर-जबरजस्ती नीक ना। हर पतनशील धारा के बाद, बदलाव के हिलकोरा उठेला, जइसे हर रात के बाद दिन उठेला। जवन जोत खतम हो गइल रहेले, ऊहो लवट आवेले। सबुर के साथ निःस्वार्थ कर्म करत चलेके, स्वाभाविक गति खुदे पैदा हो जाई।

ई भारतीय राजनीति के थेथरई के प्रमान बा कि बेर-बेर उद्घोषणा-लालच के अछइत, कबीर, गोरख आ सोरठी-बृजभार के भाषा, संसार के सबसे बड़हन लोकतंत्र के, आदर ना प्राप्त कर सकल। जेह भाषा में सुंदरतम राष्ट्रगीत 'बटोहिया' रचे के कूबत रहल, जेकरा आगे 'जन-गण-मन-अधिनायक' चाहे 'बंदे मातरम्' चाहे 'हिमाहि तुंग श्रृंग से' तनी छोट, तनी ओछ, तनी कमजोर जनाला। भारत के समग्रता में, ओकरा सांस्कृतिक सर्वोच्चता में, भौतिक उत्कर्ष, करूणा आ उदारता के पराकाष्ठा में, ओकरा सूक्ष्मता, विस्तीर्ण स्थूलता, मौलिकता आ पर्यावरणीय चारूता के सहज सौम्यता में देखे के होखे तऽ रघुवीर नारायण के राष्ट्रगान सुन्दर सुभूमि बाँचीं। ओहिजा कवनो व्यक्ति के हीनता जन्य आत्मनिष्ठा 'अहं' ना, समग्र भारत के उदात्तता बोली, भगवत शरण उपाध्याय जेकरा के 'साउंड इकोईगं सेंस' कहत बाड़े, ऊ आनन्दवर्द्धन के ध्वनि बोली।

अइसनो हो सकत बा कि भोजपुरी भाषा के आठवीं अनुसूची में शामिल होखला से, एकरा साहित्य के श्रेष्ठता प्रभावित होखे। सुभाव आ दबाव एह दूनो के गति जा प्रभाव के बारे में कुछ कहल ना आ सके। डोगरी, कोंकणी आदि भाषा 'सूची' में शामिल होखला के बाद का कऽ लिहली सऽ? कुछ राज्यन जइसे, बिहार, आ दिल्ली में गठित 'भाषायी-अकादमी' कवना पारिजात के फूल भाषा के माधवी-लता में उगवली स? नइखे कहत जा सकत, कुछ 'व्यक्ति' भा 'व्यक्ति-समूह' के कुछ हित सधत होखे, तऽ दोसर बात बा। बिहार के पुनर्गठित भोजपुरी अकादमी तऽ लगभग डेढ़ साल से आपन त्रैमासिक पत्रिका के प्रकाशन के बाट जोहत कबो रचनाकारन के पांडुलिपियन का ओर, तऽ कबो छूँछ आकाश का ओर, तऽ कबो सरकार का ओर भुखाइल बबुआ अस, जब तब निरेख-निरेख के छपिटा रहल बिया, जब समूचा सरकारी बिहार शताब्दी वर्ष में अरबो रूपया पर बिछलहर खेल रहल बा।

कबीर के जे आज संसार पढ़त बा, ऊ एह से ना कि सिकंदर लोदी उनकरा भाषा के राजकीय भाषा घोषित कऽ दिहले रहे। आज ना त काल्हु ई भाषा अपना बल-बेंवत से, अपना के ओह जगहा पर आसीन करवाइए ली, जेकर ऊ कहिए से हकदार बिया। बकवास से विकलांगता के दउर शुरू हो सकत बा, जे कबो-कभार भाषा के श्रेष्ठतम रूप लिखित साहित्य में लउकियो जाता।

जें तरे, देश के स्वतंत्रता मिले के पूर्वानुमान लगा के राजा-महाराजा आ धनिक वर्ग कॉंग्रेस में शामिल हो गइले सऽ आ जे साचहूँ के योद्धा आ सेनानी रहे ओकरा के दरमेसत 'सुराज' के बाद, सत्ता पर काबिज हो गइले सऽ, ओइसने स्थिति भोजपुरी भाषा-साहित्य के क्षेत्र में गॅवे-गॅवे पैदा हो रहल बिया। कतने कवि, लेखक, संपादक, राजनीतिक आ लोर चुवाटत बु(जीवी रातो रात जनम ले रहल बा, जइसे बड़की बरखा के बाद पियरा बेंग, जिनकर मनसा बहत दरियाव में हाथे धोवल ना, मूतल बा। ई लोग भाषा आ साहित्य के हित का करी? जे घर के चउकठ नइखे लॉघ पावत आ सपना देखत बा सनातन सत्य के अँकवारी में बान्हे के।सत्य रूइया मिठाई ना ह, जेकरा के बे-कुँचले घोंट लिहल जाला। कुछ दिन से झारखंड से एगो पत्रिका निकलत बा। ओकरा नयका अंक में, मुख-पृष्ठ पर संपादक जी के संगे उनकर छोटकी भतीजी आ हीत-मीत परिवार के लोगन के फोटो छपल बा। भतीजी के जन्मदिन के केक काटल देखावल गइल बा। काल्हु संपादक बाबा, पत्रिका के अंक में, अपना नहानो-कक्ष के विभिन्न मुद्रा में फोटो छाप सकत बाड़े आ भोजपुरी पाठकन के सहृदय वक्ष पर आत्मघाती भृगुलात मार सकत बाड़े।

भोजपुरी साहित्य के विद्यार्थी ई पढ़त आइल बाड़े कि एकर आधुनिक साहित्य बिना कवनो आन्दोलन से प्रभावित होत, स्वाभाविक रूप से हिन्दी साहित्य आ दोसरो-दोसर साहित्यन के, जेकरा सहज संसर्ग में ऊ रहल बा, वृत्तियन के पचावत,

मौलिकता के साथे आपन राह बनावत गइल आ अनधा काव्य, कहानी, उपन्याय आ निबंधन के सिरजन करत, बिना केनियो मुड़ले, आगे बढत गइल, बाकिर अब लागत बा कि एहिजो, कोना डँड़ारी में गन्हवा-रोग लाग रहल बा आ भोजपुरियो साहित्य, 'गोलबंदी' में फाट-बेफाट होके अझुरा में पड़े खातिर मकनात चल देले बा। कविता गीत के बात होखे आ संधिदूत, कमलेश राय, अशोक द्विवेदी, गायब होखसु, कहानी के बात होखे आ कृष्णानंद गायब होखसु, निबंधन आ भाषा-विज्ञान के बात होखे आ डॉ० विवेकी राय, डॉ० गदाधर सिंह आ डॉ० रघुवंशमणि पाठक गायब होखसु, नेतृत्व क्षमता के बात होखे आ डॉ० अरूणेश नीरन गायब होखसु तऽ का कहल जाई? यदि अइसन सामग्री के अनुपलब्धता, साहित्यिक दृष्टि के अभाव भा अशरफी के लूट कवनो वजह से होता, त अनुचित बा आ एकर समुचित उपचार-परिष्कार होखे के चाहीं। आज भोजपुरी साहित्य के पास सर्वाधिक ऊर्जावान आ समर्पित रचनाकार बाड़े। एकरा साहित्य में एके साथ कई-कई पीढी एकरा वर्तमान रूप के सुघर बनावे में अहोभाव से लागल बा। सैकड़न लोग साहित्य के माध्यम से जनता से संवाद करे खातिर आ सुसंस्कृति के निर्माण खातिर, प्रयत्नशील बा आ उनकर ई प्रयत्न आकाश में छेद कइला अस त नाहिंए बा। हालांकि चित्र विचित्र के पाखंडी-विदूषकनों के संख्या बढ़ल बा, तबो भगजोगनी, तारा आ चनरमा के अंतर फरियावे के जरूरत नइखे। जरूरत त एह बात के बा कि विभिन्न मंचन आ पत्र-पत्रिकन से 'भाषा' के 'अनुसूची' में शामिल करे के हल्ला हुड़दंग के साथ एकरो घोषणा होखे कि 'पोसुआ' चितकबरा पहाड़ वाला गाँव (अशोक द्विवेदी), चढ़त चढ़ावत भेँड़हर फोरी (अरूणेश नीरन), पियासल पंडुक (प्रेमशीला शुक्ल), चंपा परधान (रामदेव शुक्ल), 'तृष्णा' (बरमेश्वर सिंह) आ 'कथा सतनरैना के आठवाँ अध्याय' (प्रकाश उदय) आदि श्रेष्ठ साहित्य जवना भाषा में बा, ओह भाषा के 'हेलऽ हेलऽ' पँजरे हेलान बा' के नपना से ना नापल जा सके। रामेश्वर सिंह 'काश्यप' के कहानी 'मछरी' नारी विमर्श के पुरोधा कहानी ह, जेमे नारी के शील, श्लील आ पीर के, मानवीय धरातल के सर्वोच्च विन्दु 'प्रेम' के रक्तांजली अर्पित क के उरेहल गइल बा।जब जगन्नाथ गजल ई कहऽ तिया कि- ''दर्द के दाह जब सुधि से सेयान हो जाला जिन्दगी से बहुत उघटा पुरान हो जाला'' तऽ एह में एके साथ कालिदास, भवभूति, प्रसाद आ निराला से लगाइत अँग्रेज कवि पी वी शेली तक साकार हो जातारे। भाषा आ साहित्य के वर्तमान में अइसन ना होला कि नदी के धारा निअर ओकर धारा में दुबारा गोड़ ना डालल जा सके। कालजयी साहित्य के सबसे बड़ खासियत इहे होला कि ऊ हरमेसा वर्तमाने में होला। ऊ 'ध्रुवतारा' ह 'टूटा तारा' ना।

भोजपुरी क्षेत्र में अपना साहित्य के पठन-पाठन में रूचि के उदासीनता के वजह, खाली साहित्यिके ना हो सके। समाज के मनोविज्ञान के एह खाली कोना के भाषा के पढ़ाई शुरूआती कक्षन से शुरू क के भरल जा सकत बा। काहें कि भाषा-संस्कार जीवन-संस्कार के तरह मन-प्राण में तबे पेहम होई, जब एकर आदत शुरूए से लागी।

कवनो श्रेष्ठ साहित्यिक कृति के ऊपर, चर्चा के अभाव भोजपुरी साहित्यिक हलका में ढेरे खटकेला। हिन्दी साहित्य में जब असगर वजाहत गाँधी के जिआ के साहित्य रचत बाड़े, तऽ ओकर खूब चर्चा होत बा। हिन्दी फिल्म 'मुन्ना भाई एम बी बी एस' के गाँधीगिरी सुपर-डुपर हिट हो जाता, ओहिजे भोजपुरी 'जीवाश्म' नामक रचना, जे आज से लगभग बारह-तेरह वरिस पहिले 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के कहानी विशेषांक में छपल रहे आ ओही स्थितियन-परिस्थितियन आ पूर्वापर सम्बन्धान के गाँधी के पुनर्जीवन के गाँधीवादी आन्दोलन अस आन्दोलन के भविष्यवाणी कइले रहे तऽ ओकरा पर भोजपुरी साहित्य के कवनो कोना-अँतरा से कवनो आवाज ना उठल। खाली मोती बीए जइसन स्वनामधन्य मनीषी बड़ा निश्च्छलता में अंतने कहि के रहि गइल रहन कि ई कहानी त उनका कुछ बुझइले ना रहे। आज अन्ना-आंदोलन के बादो एकदम चुप्पी बा।

ढेर आगे बढ़ला के बावजूद भोजपुरी साहित्य अबे सम्यक आलोचना सुने में सहिष्णु नइखे हो सकल। चार अंकन में डॉ० विवेकी शय पर विशेषांकित 'सम्मेलन पत्रिका' उनकरा 'अमंगल हारी' उपन्यास पर 'सम्मेलने पत्रिका' मे पूर्व प्रकाशित आलोचना एह से ना छपलस कि ओह में 'अहो रूपम्! अहो ध्वनि!' ना जइसन रूप, ओइसने ध्वनि के विधान रहे।

कन्हैया सिंह 'सदय' भोजपुरी के एगो नीमन कहानी लेखक हवन। 'इतिहास के आँगन में भोजपुरी कहानी' नाँव के अपना एगो लेख में ;जेकरा में कुछ जोड़ घटा के 'भोजपुरी कथा साहित्य के उद्भव आ विकास' नाँव से पुनर्प्रकाशित कइल बा।द्ध ऊ भोजपुरी कहानी साहित्य के काल-विभाजन एह तरी करत बाड़े-

१. आरंभिक काल (१६४८-१६६० तक)
२. उन्नयन काल (१६६१-१६७२ तक)
३. उत्कर्ष काल (१६७३-१६६० तक)
४. आधुनिक काल (१६६१-अब तक)

एहिजा 'उन्नयन' आ 'उत्कर्ष के बीच के अंतर स्पष्ट कइल जरूरी बा आ तब 'आधुनिक काल' के सम्यक सीमांकन अब विश्व साहित्य 'उत्तर आधुनिक काल' के बात करत बा तऽ भोजपुरी में ओकर लूक चली कि ना? परिवर्तनशील संसार में इतिहासो बदलेला। भोजपुरी भाषा-साहित्य के ठीक से इतिहास लिखावल जरूरी बा। एमे डॉ० अरूणेश नीरन, डॉ० अशोक द्विवेदी जइसन द्रष्टा साहित्यकार, जो नेतृत्व करी, तऽ भोजपुरी भाषा-लोक-हित में बहुत बड़ काम होई।

श्री दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह अपना ग्रंथ 'भोजपुरी के कवि और काव्य में भोजपुरी साहित्य के इतिहास के निम्नलिखित पाँच काल-विभाग में रखत बाड़े-

(१) प्रारंभिक अविकसित काल (सिद्ध काल) सन् ७०० ई० से ११०० ई० से
(२) आदिकाल (ज्ञान-प्रचार-काल तथा वीर-काल) सन् ११०० ई० से १३२५ ई०
(३) पूर्वमध्यकाल (भक्ति-काल) सन् १३२५ ई० से सन् १६५० ई०
(४) उत्तरमध्यकाल (रीति-काल) सन् १६५० ई० से सन् १६०० ई०
(५) आधुनिक काल (राष्ट्रीय काल और विकास-काल) सन् १६०० से १६५० ई०

एगो दोसर इतिहास लेखक श्री रासबिहारी पाण्डेय 'आधुनिक काल' के जगहा 'वर्तमान काल' लिखत एकर सीमा सन् १६०० से १६८६ मानत बाड़े। त ई कइसे सकारल जा सकेला ?

मौलिकता, तटस्थता आ सार्वकालिता कवनो श्रेष्ठ रचना में ई गुण अइसहीं घोराइल रहेला, जइसे हवा में आक्सीजन हाइड्रोजन आ नाइट्रोजन। भोजपुरी कविता में यथार्थ के सँगे जादुई करिश्मो बा, जेकरा के 'फिशर' कला के अनिवार्यता घोषित कइले रहे।

भाषा आ साहित्य आपन राह खुद बनावेला। डार्विन के 'सरवाइवल ऑफ द फिटेस्ट' के सर्वोतम उदाहरण ह भोजपुरी भाषा। एकरा खिलाफ खड़ा कड़ल गइल कवनो हउवा, आन्ही के झरकट अस उड़िया जाई, बाकिर एकरा नाँव पर उदापन करे वाला मतलबी लोगन से सचेत-सावधान त रहहीं के परी। ऊ अपना कपारे चउहत्तर चिरूकी राखस, हमनी के आपन मंच उनके ना देबे के चाहीं। काहें कि उनकर महतारी आ मेहरारू में अंतर करे वाला विवेक सूख चुकल बा। ●●●

अनुरोध

अपना मातृभाषा के स्तरीय, कला संस्कृति आ भाषा–साहित्य के संरक्षा आ विकास खातिर, भोजपुरी दिशाबोध के पत्रिका ''पाती'' के सालाना सहयोग राशि भेजि के नियमित गाँहक/सहयोगी बनीं। सालाना सहयोग, डाक व्यय सहित रू0 130/– एकल भा सामूहिक रूप से नाम, पता (पिन कोड सहित), मोबाइल नंबर का साथ, मनीआडर भा ''ड्राफ्ट'' डा0 अशोक द्विवेदी, संपादक ''पाती'', बलिया के नाम से भेजीं। जवना भाई लोग के पास पहिले से (डाक से) पत्रिका पहुँच रहलि बा, ओहू लोग से आगा सहयोग के उमेद पत्रिका परिवार करत बा।

भाषा–चरचा

भोजपुरी के विकासमान वर्तमान

❑ डॉ. रामरक्षा मिश्र 'विमल'

अपना प्रिय अंदाज, मिसिरी के मिठास आ पुरुषार्थ के दमगर आवाज का कारन भोजपुरी शुरुए से आकर्षण के केंद्र में रहल बिया। भाषा निर्भर करेले विशेष रूप से भौगोलिक कारन आ बोलेवाला लोगन के आदत, रुचि आ प्रकृति पर। विशेष परिस्थिति एह में आपन बरियार प्रभाव छोड़ेले। भोजपुरिया लोगन के अलग-अलग क्षेत्रन में प्रभावित करेवाला अलग-अलग कारकन का चलते भोजपुरियो के कई गो रूप लउकऽता आ अभी तक कवनो महाबीर एकरा के अनुशासित कऽके मानक रूप ना दे पवले। वर्तमान में ई काम आसान नइखे रहि गइल, बहुत कठिन बा। खासकर अइसना में जब इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के जबर्दश्त प्रवेश भइल बा भोजपुरी में। जब भी अंकुश चली त मुद्रिते माध्यम का हाथ से, ओकर कवनो विकल्प नइखे बाकिर इलेक्ट्रॉनिक माध्यम के प्रभाव सौ गुना अधिक रही। बहुत सोच समझ के, पूर्व योजना बनाइके ई काम करेके परी। एकरा बादे भोजपुरी भाषा अउर साहित्य के गत्यात्मक आ विकासमान वर्तमान स्वरूप कवनो भाषा के ईर्ष्या के विषय बन सकऽता।

भले भोजपुरी के मानकत्व खातिर अधिकांश साहित्यकार एकर ध्यान रख रहल बाड़े कि अइसने प्रयोग चलावल जाव, जवन मानकीकरण का चौहद्दी में समा के, जवन सभका खातिर सुग्राह्य होखे आ तर्कसंगत होखे। जे अपना क्षेत्रीय बोली का मोह से ऊपर ना उठि पाई ओकर मेहनत कुछ पानी में जाई, एह में कवनो संदेह नइखे। कुछो होखे, लेखन कार्य चलत रहे के चाहीं आ आजु तक के भोजपुरी साहित्य संपदा पर खाली संतोषे ना गर्व गइल जा सकऽता जेकरा भंडार में कवनो विधा के स्तरीय रचचन के अभाव नइखे। भोजपुरी प्रकाशक का अभाव आ छपाई में बेसी खर्च का चलते ढेर पुस्तक बरिसन से प्रकाशनाधीन बाड़ी सन आ प्रकाशितो पुस्तकन के अशेष सूची बनावल शोध कार्य के विषय हो गइल बा। राष्ट्रीय आ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एकाध गो पुस्तकालयन का निर्माण से एह कार्य में सहूलियत मिल सकऽता, जो हर रचनाकार आपन किताब ओहिजा भेजे तऽ। हालांकि अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पटना, भोजपुरी अक. ादमी, पटना आ रामसखी रामबिहारी स्मृति पुस्तकालय-सह-शोध संस्थान, सारण का सङहीं पांडेय नर्मदेश्वर सहाय, पं. गणेश चौबे, पांडेय कपिल, श्री जगन्नाथ, डॉ. नंदकिशोर तिवारी, डॉ. राजेश्वरी शांडिल्य आ 'पाती' का जरिये अशोक द्विवेदी जइसन एकसदस्यीय संस्था एह संदर्भ में आपन भूमिका बखूबी निभवले बाड़ी सन आ आजो निभा रहल बाड़ी सन बाकिर ओके पर्याप्त नइखे कहल जा सकत।

वर्तमान भोजपुरी के पत्र-पत्रिकन पर संतोष कइल जा सकऽता। एह घरी जबकि हिंदी में साहित्यिक पत्रिका कुछ रचनाकार सदस्यन का भरोसे चल रहल बाड़ी सन ओहिजा भोजपुरी में लघु पत्रिकन के अतना संख्या कम नइखे। कई गो पत्रिका बुता गइली सन बाकिर कई गो उदितो भइल बाड़ी सन। कुछ पत्रिकन के कलेवर आ व्यक्तित्व अपना रंगीनियत में काफी आकर्षक बा। एह में 'संडे इंडियंस', 'भोजपुरी संसार पत्रिका' आ 'सिने भोजपुरिया' के नाँव खासतौर पे लिहल जा सकऽता। नियमित रूप से मासिक तौर पर छपेवाली पत्रिका में 'भोजपुरी माटी' के ना भुलावल जा सके। अपना ठोस, संतुलित आ स्तरीय रूप के बरकरार राखे वाली पत्रिका में 'सम्मेलन पत्रिका', 'पाती', 'कविता' आ सुरसती के नाम गर्व के साथ लिहल जा सकऽता। 'माई', 'पनघट', 'परास', 'भोजपुरी जिंदगी', 'भोजपुरी विश्व', 'सिरजनहार', 'साखी' आदि पत्रिकन के अंक बढिया निकलतारे सन। छमाही पत्रिका 'सूझ-बूझ' प्रवेशांके से भोजपुरी पत्रकारिता के एगो नया संभावना के रूप में लउकऽतिया। भारत का अलावे दोसरो देशन से पत्रिकन के निकले के खबर मिलत रहऽता बाकिर देश में ओकरा अनुपलब्धता के कारण एह विषय पर गंभीरतापूर्वक कुछ कहल नइखे जा सकत।

इंटरनेट पर अँजोरिया डॉटकॉम, भोजपुरिया डॉटकॉम, भोजपुरी मूवमेंट डॉटनिंग डॉटकॉम, भोजपुरीलिरिक्स डॉटकॉम, जय भोजपुरी डॉटकॉम, चौराचौरी एक्सप्रेस, भोजपुरी अर्ग डॉटकॉम, बिदेशिया, पूर्वांचल एक्सप्रेस डॉटकॉम आदि पत्रिका अपना-अपना खास तेवर का साथ काम कर रहल बाड़ी सन। खुशी के बात ई बा कि एह में हर साइट कवनो खास विधा खातिर विशेष रूप से जानल जाले सन। कवनो समाचार त कवनो साहित्य-संस्कृति, कवनो सोशल नेटवर्किंग, कवनो भोजपुरी अस्मिता, कवनो खूबसूरत पत्रिका त कवनो भाषायी आंदोलन

खातिर चर्चित बाड़े सन। कवनो साइट के तेवर अग्र बा त कवनो के धीर, गंभीर, प्रशांत, कवनो के तेवरे नइखे त कवनो के एक से कवनो मतलब नइखे - ईश्वर का कृपा से जइसन बन जाए। साहित्य, संस्कृति से लेके गीत, संगीत, फिल्म, टी०वी० - हर क्षेत्र में सर्वाधिक चर्चित लगभग पचीस-छब्बीस गो वेबसाइट बाड़े सन। ई भोजपुरी खातिर गर्व के विषय बा। अतने ना कुछ वेबसाइट समाज आ संस्कृति खातिर घातक वेबसाइट, संस्था आ कार्यन पर निगाह जमवले बाड़े सन - भोजपुरी माटी खातिर ई शुभ संकेत बा। नेट का माध्यम से छठ के परसाद भेजाए लागल बा देश का कोना कोना में - ई सराहना के बात बा।

कवनो भाषा आ भाषायी संस्कृति के व्यापक प्रचार-प्रसार में सिनेमा के महत्वपूर्ण भूमिका होले। भोजपुरी में ई अनमोल आ सुखद घड़ी आइल पहिल फिल्म 'गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो' के १९६२ में रिलीज भइल से, जेकर मुहूर्त भइल रहे १९६१ में। एकर निर्माता नाज़िर हुसैन जी के भोजपुरी संसार कबो ना भुलाई। तब से कई गो फिल्म भोजपुरी भाषी क्षेत्र में हिंदी फिल्म के समानांतर सफलता के झंडा गाड़े शुरू कइली सन। १९८६ तक के फिल्मन में लागी नाहीं छूटे, बिदेशिया, 'हमार संसार 'दंगल, दुलहा गंगा पार के विशेष रूप से चर्चा कइल जा सकऽता। लगभग सात बरिस का अंतराल में भोजपुरिया दर्शक त जइसे भोजपुरी फिल्म के भुलाइए गइल। दरअसल ओह घरी तक भोजपुरी फिल्म का ऊपर हिंदी फिल्म के मसाला फार्मूला पूरी तरह हावी हो गइल रहे। मौलिकता से कोसो दूर आ अपना माटी से भटकल भोजपुरी फिल्म के २००३ में फेरू से एगो नया जन्म मिलल ससुरा बड़ा पइसा वाला से, जेकर अभिनेता रहन लोकगायक मनोज तिवारी आ तबसे जे भोजपुरी फिल्मन के दौर चलल त नया-नया प्रयोग करत अजुओ पूरा गति में बा। ई बात दीगर बा कि आज कई गो भोजपुरी फिल्म बक्सा में बंद बाड़ी सन आ ढेर त मुँहहीं का भरे गिरतारी सन बाकिर तबहुँओ निर्माता लोगन के आकर्षण का केंद्र में त ई बिजनेस बड़ले बा। एहिजा ई कहल ज्यादे ठीक होई कि भोजपुरी फिल्म निर्माता लोगन के एह विषय पर मंथन करेके चाहीं कि काहें अतना असफल होतारी सन फिल्म। फिल्म के कथानक का साथ-साथ गीत आदि के भी पृष्ठभूमि जो भोजपुरी के आपन मौलिक ना रही त नीमन दिन देखे के लोभ छोड़हीं के परी।

लोकोगायन के चर्चा कइल ओतने जरूरी हो गइल बा काहेंकि भोजपुरी समाज पर ओकर खासा असर बा। एह में कवनो संदेह नइखे कि आज भोजपुरी संगीत मड़ई आ चौपाल से उठिके राष्ट्रीय आ अंतर्राष्ट्रीय मंचन पर आसीन हो चुकल बा आ ई बहुत खुशी के बात बा बाकिर एकर आयोजन अतना महङा होखे लागल बा कि मड़ई आ चौपाल से ई जइसे अलोपिते हो गइल बा। पइसा आ प्रचार का लोभ में लोकसंगीत का सङे खेलवाड़ों खूब भइल। नया धुन का चक्कर में कवनो अवसर के धुन कवनो अवसर के गीतन में भी खूब ढुकावल गइल बा। अगिला पीढी खातिर लोकगीतन के वास्तविक धुनन के पहिचानल बहुत कठिन काम हो जाई। फूहड़ गीतन के बाढ़ि एकर रहलो-सहल कोर-कसर पूरा कऽ दिहलसि। फूहड़पन आ असभ्य भाषा के लोकगायन में जबर्दश्त प्रवेश भोजपुरी संस्कृति खातिर बहुत बऽड़ खतरा बा। भोजपुरी संगीत खातिर लिखे जाये वाला गीतन के रचनाकारन में साहित्यकार लोगन के संख्या ना के बराबर बा - ई एगो बरियार कारन बा एकर। संस्कार गीत, धोबी गीत, जँतसार, रोपनी के गीत, पचरा आदि लोकगीतन के संरक्षण आज के महत्त्वाकांक्षी गायकन का मिलावटी प्रवृत्ति का कारण चुनौतीपूर्ण हो गइल बा। एही तरह से सोरठी बृजभार, लोरकी आदि लोकगाथा आ गोंड़ऊ नाच, हुरका के नाच आदि लोकनृत्यन के बचावल बहुत जरूरी बा। एह संदर्भ में वर्तमान बाजार में प्रतिष्ठित गायक लोग आ महुआ, ईटीवी आदि चैनल जो रुचि देखाई त संरक्षण के उमेदि कइल जा सकऽता।

पिछला कई साल में संविधान के आठवीं अनुसूची में भोजपुरी के दर्ज करावे खातिर प्रयास चल रहल बा। एने एह में अउर तेजी आइल बा बाकिर सिवाय आश्वासन के कवनो परिणाम नइखे। एमें कवनो संदेह नइखे कि भोजपुरी भाषियन के संख्या भारत में बड़हन बिया, एकरा सङही विश्व के कई गो देशन - मारिशस, सूरिनाम आदि के मुख्य भाषा हऽ भोजपुरी। अइसना में एकरा साहित्य, संस्कृति आदि के विकासमान रूप में अउरी बढ़ंती खातिर जरूरी बा कि संविधान के आठवीं अनुसूची में एकरो नाम दर्ज होखो।

अब त कई विश्वविद्यालयनो में भी भोजपुरी के पढ़ाई चालू हो गइल बा आ कहीं न कहीं भोजपुरी से संबंधित चर्चा चलिए रहल बा- ई संतोष के विषय बा। बाकिर अतने से काम ना चली। खाली साहित्य-सृजन से बात ना बनी। साहित्य का अलावे भोजपुरी के भाषा रूपो पर मंथन कइल बहुत जरूरी हो गइल बा। भाषा शास्त्री लोगन के चाहीं कि बिना कवनो पूर्वाग्रह के बिना समय गँववले एह काम में लागि जाईं। जब

तक भोजपुरी के मानक रूपो के एगो मोटा-मोटी रूपो सामने ना आई तक तक व्याकरण आदि के लेखन ओतना महत्वपूर्ण नइखे।

लेकिन, एह सभसे जरूरी ई बात बा कि भोजपुरी के गैरसाहित्यकार वर्ग में ई जागरूकता ले आइल जाव कि लोग बाहर-भीतर हर जगह खुलके भोजपुरी बोलसु, खरीदके भा माङ्गिके भोजपुरी के किताब आ पत्र-पत्रिका पढ़सु। एह तरह के जागरूकता अभियान भोजपुरी के अग्रणी संस्थान के चलावे के परी। बुद्धिजीवी वर्ग के दायित्व त अभी शुरूए नइखे भइल। अभी तक भोजपुरी के स्थिति ई बा कि ऊ अपने लोगन के नजर में सम्मान के भाषा नइखे। हमनी के बियाह, जनेऊ आदि हर तरह के परोजन खातिर नेवता, पोस्टर आदि हिंदी का सङ्हीं भोजपुरियों में लिखे शुरू करेके परी। भोजपुरी सम्मान के क्रांति अब ज्यादा प्रासंगिक हो गइल बिया। जब तक एह शून्य से सम्मान यात्रा के शुरूआत ना कइल जाई आ जब तक हर जुबान से भोजपुरी स्वाभिमान के रस ना बरिसे लागी, तब तक एह विषय पर कवनो गंभीर टिप्पणी महत्त्व नइखे राखत।

●●●

गज़ल

❑ शशि प्रेमदेव

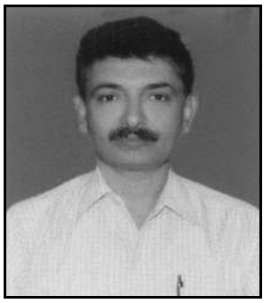

कदर भले ना कइलसि दुनिया जंगल आ अमराई के
मोल खूब समुझेले बाकिर गमला में बिरवाई के।।

खनिहारन के चलते बकरा आपन प्रान गँवावेला
कइसे मानीं एह में बाटे खाली दोष कसाई के।।

चीन चढ़ल जाता छाती पर, दिल्ली दाँत चियरले बा
देखि रहल बा देश नमूना, सरकारी मउगाई के।।

आमद तऽ शहरी जमीन–जस, दिन–पर–दिन घटले जाता
फइलल जाता बाकिर सुरसा जइसन मुँह महँगाई के।।

बेबस बा कानून–कायदा, संविधान एकरा सोझा
लोकतंत्र में खद्दर जइसे परमिट बा लुटहाई के।।

करनी पर अपना पछताई, चैन कबो ना पाई ऊ
सात जनम ले रही दलिद्दर, हक लूटी जे भाई के।।

का बतलाई मन–बैरागी अचके कइसे बहक गइल
कुछ तऽ असर रहे फागुन के, कुछ तोहरी अँगड़ाई के।।

चंदा अउर चकोरी जइसन हमनी के रिश्ता नइखे
हमनी के रिश्ता, रिश्ता बा तीली अउर सलाई के।।

गीता, ग्रंथ, कुरान, बाइबिल–सबकर बा कहनाम 'शशी'
सुखी रही ऊ, काम करी जे, नेकी अउर भलाई के।।

●●●

हस्तक्षेप

सक्शन पम्प

❑ कृष्ण कुमार

'गर्भपात' पर मार्मिक सवाल उठावत, लिंग–अनुपात में कमी के पड़ताल करत चिन्तनपरक आलेख

'सक्शन पम्प' एगो हथियार हऽ, जवन आदमी के शरीर में प्रवेश कऽ के आदमी प हमला करेला आ ओकरा के गजरा-मुरई लेखा कतरि देला। लागऽता हम बहकि गइनी। आदमी ना मेहरारून पऽ हमला करे वाला ई एगो हथियार हऽ। छोंड़ी एह हथियार पऽ बतकही बाद में कइल जाई। आईं, पहिले दुनियादारी बतिआ लीं जा...।

सभ जीव के जनम माई के गर्भ से होला। ओकर शुरूआती जीवन माई के परिछाहिं के नीचे गुजरेला। माई के लोरी आ मीठ-मीठ थपकी से लड़िकाईं पालाला। जीवन के पहिला शिक्षा माई से मिलेला। बेटा-बेटी के छोट खरोंच से माई परेशान हो जाली। सब केहु के रक्षा-कवच से तोपे के काम माई करेली। उनकर दिहल हथियार ना कबो भोथर होला आ ना कबो टूटेला। जीवन समर में बढ़े के साथे ओकर धार अवरू तेज होत जाला। माई के ममतामयी संरक्षण में जीव के सोगहग विकास होला। माई के त्याग आ समर्पण अटूट बा। जीवन-पथ पऽ चले के लूर माई सिखावेली। संतान के उत्तम संस्कारन से लैस करेंली माई। बिना खिअवले ऊ ना खाली आ बिना सुतवले ना सुतेली। वेदव्यास जी कहऽ तानी -

"नास्ति मातृसमा छाया, नास्ति मातृसमा गतिः।
नास्ति मातृसमा त्राण, नास्ति मातृसमा प्रिया।।"

बाकिर ई बड़ा दुःख के बात बा कि तेज गति से बढ़त वैश्वीकरण आ आधुनिक प्रतिस्पर्धा वाला युग माई के ममता पर गरहन लगा देले बा। २०११ ई० के जनगणना एह बात के गवाह बा। ऊ उभरत भारत के एगो धोवल-धावल चित्र देखावत बा। सभ मिला के जनसंख्या वृद्धि-दर में खास कमी जरूर आइल बा। एह में दू राय नइखे। बाकिर ० से ६ आयु वर्ग के लइकिन के अनुपात पहिले से अधिका घटि गइल बा। ई सोच-विचार करे लायक बा। सबसे बेहतर लिंग-अनुपात १००० मरद पऽ मेहरारून के संख्या केरल में १०८२, पुडुचेरी में १०३८ आ सबसे कम लिंग-अनुपात दिल्ली में ८६६ बा। अइसन में लइकिन के अनुपात में कमी देश में लइकन के जनम आ लालन-पालन खातिर अधिका झुकाव बतावऽता....।

जहंवा तक बेटियन से प्रेम करे के सवाल बा ऊ ना तऽ शिक्षा से जुड़ल बा आ ना सम्पन्नाता से। एह बात के कवनो गारंटी नइखे कि एगो पढुआ बाप अपना बेटी से प्रेम करत होखे आ एगो स्कूल-कॉलेज ना जाए वाली बेटी के अनपढ़ बाप ओकरा के दुत्कारत होखे। ई दुनिया तऽ एहसास कइला के चीज हऽ। हमनिन के जेहन में बरोबरी क ई एहसास जबले बनल रही, तबले बेटी मारल जात रहिहें सऽ। जाहि दिन ई एहसास हमनिन के खुश करे लागी, ताहि दिन से मेहरारू-मरद लिंग-अनुपात पऽ चरचा करे के जरूरते ना रहि जाई...।

संविधान में मेहरारू का सुरक्षा के उद्देश्य से उपयोगी प्रावधान करे खातिर दूगो तालिका में अधिनियम बन. ावल गइल। जवना में दुसरका तालिका के एक नम्बर पावदान पऽ भ्रूण हत्या अधिनियम के जगह मिलल बा (तालिका-२), गर्भावस्था में नष्ट करे के उद्देश्य से, मादा भ्रूण के पता लगावे से रोके खातिर 'प्रसव पूर्व निदान तकनीक अधिनियम १९९४ बना के लागू कर दिहल गइल बा। एकर उल्लंघन करे वाला पऽ १० से १५ हजार रोपेया तक जुर्माना आ पांचि साल तक के सजा के प्रावधान कइल गइल बा। बाकिर असली बात ई बा कि एह स्थिति के' बदले खातिर तमाम सरकारी आ कानूनी प्रयास तबे अधिका कारगर होई जबकि समाज के सभ लोगन के सम्पूर्ण सोच, रवइया पूर्वाग्रहपूर्ण धारणा में उनका प्रति बदलाव आ जाई। दावा आ नारी आंदोलन का बावजूद एह सोच में जवन बदलाव आ रहल बा, ओकर रफ्तार बहुते धीमा बा।

एह सोच में बदलाव ले आवे खातिर देश से लेले विदेश तक एक से एक लाम-चाकर भाषण, बहस-अधिवेशन भइल। 'नेशनल राइट्स टू लाइफ' सम्मेलन कन्सा सिटी, मिसौरी में भइल रहे। एह सम्मेलन के एगो प्रतिनिधि श्रीमती सैंडी रिसल डॉ बंनार्ड नॉथनसन के द्वारा गर्भपात पऽ

एगो अल्ट्रासाउण्ड मूवी बनववली- जेकर विवरण, उनके शब्दन में प्रस्तुत बा -

"गर्भस्थ ऊ मासूम लइकी अबे दसे सप्ताह के रहे। काफी चुस्त-दुरूस्त। हम ओकरा के अपना माई के कोखि में खेलत, करवट बदलत आ अँगूठा चूसल देखत रहीं। ओकरा दिल के धड़कनों के हम देखत रहीं। ऊ ओह समय एक सई बीस के साधारण गति से घड़कत रहे। सभ कुछ बिल्कुल सामान्य रहे। बाकिर जसहीं पहिला औजार (सक्शन पम्प) गर्भाशय के देवाल के छुअलसि, ऊ मासूम लइकी डरे एकदमे घूमि के सिकुड़ि गइल आ ओकरा दिल के धड़कन काफी बढ़ि गइल। हालांकि कवनो औजार ओह लइकी के छुवले ना रहे। बाकिर ओकरा अनुभव हो गइल कि कवनो चीज ओकरा अरामगाह, ओकरा सुरक्षित क्षेत्र पऽ हमला करे के कोशिश करि रहल बा...।"

"हम डेराइले ई देखत रहीं कि केवना तरे ऊ औजार ओह नन्हीं-मुन्नी गुड़िया अइसन लइकी के गजरा-मुरई लेखा टुकड़ा-टुकड़ा अइसन काटत जात रहे जइसे ऊ एगो जीवित प्राणी ना होखे। आ ऊ लइकी दरद आ पीड़ा से छटपटात सिकुड़ि-सिकुड़ि घुमि-घुमि के तड़पत एह हत्यारा औजार से बचे के कोशिश करत रहे। ऊ अतना बुरा तरीका से डेरा गइल रहे कि एक समय ओकरा दिल के धड़कन दू सई तक पहुँचि गइल। हम स्वयं अपना आंखिन से ओकर आपन सिर पीछा झटकत आ मुँह खोलि के चीखे के कोशिश करत देखनी। जेवना के डॉ० नॉथनसन 'साइलेंट स्क्रीम', 'मूक चीख' चाहे 'मूक पुकार' कहलें। अंत में हम ऊ नृशंस आ विभत्स दृश्य देखली जब सँड़सी ओकरा खोपड़ी के तूरे खातिर खोजत रहे। काहे कि बिना खोपड़ी तुरले सक्शन ट्यूब के माध्यम से ओकरा के बाहर निकालल मोसकिल होइत। हत्या के एह विभत्स खेल के पूरा होखे में पनरह मिनट के समय लागल...।"

एह दर्दनाक दृश्य के अनुमान एही से लगावल जा सकऽता कि जवन डॉक्टर ई गर्भपात कइलस आ कौतुहलवश एकर फिल्म बना देलस, ऊ जब स्वयं एह फिल्म के देखलस तऽ ऊ आपन क्लीनीक छोड़िके चलि गइल आ फेरू दोबारा वापस ना आइल। गर्भस्थ लइकी के बर्बर हत्या आ ओकर वेदना देखावे वाली एक फिल्म के जब भूतपूर्व अमरीकी प्रेसीडेंट रोनाल्ड रीगन देखले तऽ ऊ सब एह सांसद फिल्म के देखे के अनुरोध कइलें। रीगन 'एबार्शन' कानून के बदले के इच्छुक रहलन।

जवना दुनिया में एगो माई जब अपना बेटी के हतेया करि सकऽतिया, ओइजा दोसरा से ई कइसे कहि सकऽतानी कि अउर लोग दोसरा के हतेया मति करी। जवन देश गर्भपात के मान्यता देता ऊ अपना नागरिक के प्रेम के शिक्षा ना दे के, अपना इच्छापूर्ति खातिर हिंसा अपनावे के शिक्षा दे रहल बा। विश्वशांति के राह में सबसे बड़ रोड़ा गर्भपात बा। जे जीवन देले बा एकमात्र ओकरे अधिकार होता जीवन लेबे के। ओकरा अलावे दोसरा केहु के ई अधिकार नइखे बनत, चाहे ऊ माई होखे, बाप होखे, डॉक्टर होखे, कवनो संस्था होखे, कवनो सम्मेलन होखे, चाहे कवनो सरकार होखे। गर्भपात के द्वारा केहु के जीवन लेबे के अधिकार केहु के नइखे...।

गर्भपात उचित बा कि अनुचित, एकर फैसला अब रउआ करे के बा। आ साथे इहो जानि जाईं कि ईश्वर के अदालत में रउआ एकर जबाब देबे के बा। कुछुओ करबि, जान ना बांची।...

बेटा-बेटी में कवनो फरक नइखे। मानीं तऽ देव ना तऽ पत्थर। ई सब सोच के फेर बा। एह सोच के कानून के जरिए नइखे सुधारल जा सकत। एकरा खातिर सामाजिक आ पारिवारिक सोच में बदलाव जरूरी बा। भारतीय मेहरारून के खुद ई सोच बदले के होई कि ऊ अबला हई, कि ऊ कमजोर हई आ कि प्रकृति उनका के शोषण खातिर बनवले बा ?

●●●

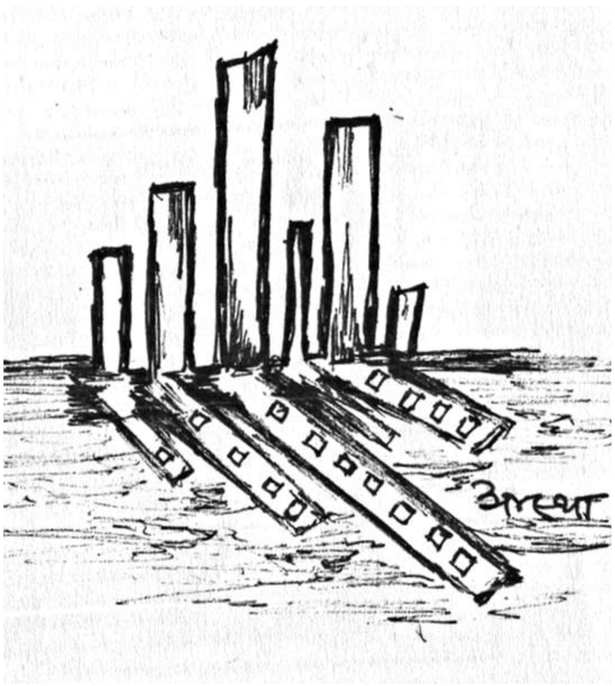

कहानी

कायर

❑ विष्णुदेव तिवारी

हमनी किहाँ लाश जब उत्तर-दक्खिन रखाले, त ओकर गोड़ एकदम ओने हो जाला, जेने से कबो नाइ वाला पुल उजियार चल जात रहे। आज त नगसर गोलंबर से, आसमान के ठोर के ठीक नीचे, सीमेंट छड़ वाली बड़की पुल बन गइल बिया, जे सीधे भरौली चल जाले। अब ई जाए वाला के भाग-संजोग कि ऊ ओहिजा से पुरुब पयान करी कि पच्छिम।

चिल्होर पाँड़े उजियार से पच्छिम अपना ममहर गाजीपुर में पैदा भइल रहले आ जनमते ई भेद खुल गइल कि दोसरा जनमतुआ अस, बाहर के अँजोर से, उनकर आँख बन ना होइहें स। तीन बरिस के रहले त उनकरा महतारी के तेरहवाँ हो गइल आ ऊ ऊपर जाके अपना देखनउक बेटा के बढ़न्ती निरख-निरख खुश होखसु। उनकर दिन सरग के फुलवारी में कटे शुरू हो गइले स आ उनकरा बेटा के मृतुलोक के बँसवारिन में।

स्कूले गइला पर ऊ ढेर अँखफोर भइले। जवन मास्टर बाचा क्लास में पढ़ावे आवे, ऊ मेठ रंगबाज रहे। जाड़ो में, शर्ट के ऊपर से तीन गो बटाम खोल के राखे। एकदम सटल मोहरी वाला मैरून कलर के जींस जोमाइ के पहिने। बीच से माँग झारे आ भर दिन स्टेशनरी के दोकान पर गुटका के पाउच फारे। एकदिन त चिल्होरो के चटवलस। ओइ दिन ऊ बेर-बेर हुलिअइले आ तिली-तिली मुतले। ओठ सुखते रहि गइल। तब मस्टरवा उनकर कपार धोवत कहले रहे - वेतू बुरबक ! अनेरे नू ओकात बाड़े ? मये छोटका आदमी इहे खा के नू बड़का बनल बा, जइसे हिटलर, मुसोलिनी, गोड़से....।

चिल्होर के स्कूल के संघतिया रहे, रामजनम मिसिरवा। बड़ा टाँठ आदमी रहे। एक बेर, टिफिन के बेरा, झरखंडी मास्टर एगो लइकी के हाथ पर भुड़ुली रख दिहले। जब ऊ ओही घरी झट् दे हाथ झरलस त भुड़ुलिया चिल्होर के गरदन पर फेंका गइल। रमजनमा भुड़ुली जी के चुटकी में दरमेसत मास्टर जी के उठा के बेंचे पर अस पटकलस... कि मुए के दिन तक, दूनो गोड़ पसार के सूते के उनकर सवख पूरा ना हो सकल।

जब चिल्होर के दूनो मामा लोग के हाड़े हरदी लाग गइल आ मउसियो सेयान हो गइली त उनकर ममहर छूटल। नाना-नानी मर बिला गइल रहे लोग आ ऊहो पाँच बरिस से मैट्रिक के इम्तहान देत थाकि गइल रहले। उनकर मामा बड़ा अचरज करसु लोग कि 'पँड़या' काहें फेल हो जाता ! संगी-साथी लोग बतावल कि इम्तहान में उनकरा भिरी कवनो ना कवनो लइकी के सीट पर जात रहे आ ऊ आपन कॉपी डेस्क पर अहथिर ध के, ओकरे लिखे शुरू क देत रहले। बाद में ऊ लइकी उनकरा के आइसक्रीम चभवावत रहे आ फोकचा चँपवावत रहे। रिजल्ट निकले त दूनो जाना फेल।

हम तिरपाल पर से उठ के चिता तक आ गइल बार्नीं। आसमान एकदमे साफ हो गइल बा। मरघट में धुआँ गँउजात नइखे, धीरे-धीरे ऊपर उठत चलल जात बा। बुझाता, ओकर मन धरती के अँकवार में बन्हाए के एकदम नइखे। उजियार से भरौली तक के मए अँजोर हलकोरा मारत लहरन पर एह तरी चमकत बा जइसे ऊ पाताल लोक के जलपरियन के आँखिन से अटूट धार निकसत होखे।

बबुआ जी आ चिल्होर पाँड़े में छत्तीस के छाव रहे... इनिका ओर से ना, उनुके ओर से। इरिघी-बिरिघी बोले में आ दोसरा के काज बिगारे में चिल्होर के जोड़ के आदमी हमरा आजु ले ना भेंटाइल।

एक बेर रामलाल चाचा अपना लइकी खातिर लइका खोज के ओहिजा ओकर दू गो फोटो रख के आ गइल रहन। लइकवा रेवले में फोरमैन रहे आ दशहरा के छुट्टी में आवे वाला रहे। घर के लोगन के, फोटो में लइकी पसन रहे, बाकिर ऊ लोग बात ए से आगे ना बढ़ावत रहे कि लइको देख लेउ त बाकी जोग-टोटरम सुचिताहे पूरा होखो।

चिल्होर के एह बात के पता कसहूँ चल गइल। ऊ पल्सर दउरावत बेटहा के दुआरे हाजिर ...

- आजी, रउआ हमरा गाँव के रामलाल मिसिर के लइकी के फोटो रखले बार्नीं नूं ?

लइका के बाबू जिअतारे कान खोदइला अस चिहुँकले - कवना गाँ ? कवन रामलाल ?

- पंचम पथ ! आरा-बक्सर रोड प पड़री से सटले बा - 'रोली, पड़री, पंचम।' मोटर साइकिल से रोब गाँठत, उतरत चिल्होर मोंछ पर हाथ फेरले। मोंछ नदारथ रहे। आँख झुक गइल।

- अच्छा ! याद परल ! हँ ! हँ !'

- लइका के बाबूजी कहले आ तेल लगा के, अंडरवियर पर घाम सेंकत एगो लइका के पानी पीए खातिर कुछ ले आवे के दउरा दिहले। लइकवा सिसकारी मारत चल गइल त लइका के बाबूजी चिल्होर से पुछले - रउआ रामलाल जी के, के लागब ?

- केहू ना।

- फेर ? - फेर का ? 'हमरा अपना लइकी के बिआह करे के बा।'

तले ईंटा ढोवत ट्रैक्टर के धुधुका बाजल - ए ... रे .... रे... रे.... !

लइका के बाबूजी आगे पुछले... 'अच्छा... पहिले ई बताईं कि .... 'पंचम पथ' माने ?'

- गाँव के नाँव ह।

- जहाँ के लोग कुरस्ता जाले... इहे नूं पंचम पथ ?

- दिमाग ठीक बा नूँ ?

- कवन जाति हईं ?

- बाबाजी....!

- अच्छा ।.... कइसे ?

- जनम से।

- आ करम से ?

- का ?

- लाज नइखे लागत ?.... ओही गाँव के, ओही जाति के लइकी के फोटो.... जब पहिलहीं से विचार करे खातिर धराइल बा... तक हई चढ़ा-उपरी ?

- ई चढ़ा-उपरी भइल ?

- त का भइल ? हमार लइकवा तिरपन गो बिआह करी का ?

- देखऽ।... ठीक से बोलऽ ! हमरा के चीन्हत नइखऽ अबे।

- रहऽ चीन्हऽतानी।' लइका के बाबूजी खूब जोर से चिचिअइले - 'पानी ना रे, ... लबिदा ले आवऽस लबिदा !'

चिल्होर ओह आन गाँव से परइले त घरहीं आके रुकले, थहरइले।

रामेलाल चाचा ई बात बबुआ से कहत रहले। हमूं ओहिजे रहीं। जेकरा-तेकरा से कहत फिरसु। आखिरस उनुकरो लइकी के बिआह ओहिजा ना भइल। लइकवा जेने नोकरी करत रहे, ओनिए तारकुन-बारकुन क लिहलस। एने चिल्होर तरनात फिरसु- त्रिभुअन हमार हँसी उड़ावऽ तारे। कबो त भेंटइहें साले, मोहटी प ! ओही घरी देखाइबि कि असली गजबाँक कइसन होला !

बबुआ बिआह ना कइले से नीक कइले। आजु जो उनकर परिवार रहित, त कतना अफदरा में पड़ित ? चिल्होर के बिआह बारून भइल रहे। मउसी अपना गोतिनी के लइकी से करववले रही। बड़ा सुनर-सुभेख आ सोझिया रहली इनकर मेहरारू। तबे नूं ई कबो हिन्हिका के लेके, कबो हुन्हुका के लेके मड़ई में, खोंप में भा चरन के अलोता संगम नहासु। बाप के सातो-सतरोहन में एके लइका रहले चिल्होर। गोर अतना कि कपूर में छेद हो जाउ आ करिया अतना कि अमावस उलट जाय। जइसे-जइसे उमिर बढ़त गइल चित्ती भर काजर के चिन्हासी हुँकुड़ा पहाड़ हो गइल रहे।

खरउरिया उनका से दस बरिस छोट रहे आ ओकर मेहरारू उनका मेहरारू से चउदह बरिस कि.... मध दुपहरिया में....

मध दुपहरिया में मस्तराम बाबा रमे-रसे संसार के नश्वरता के बातकरत बुढ़वा पीपर के मए पतइन के बुढ़वावे के अघातम करत रहले। काम से खलिहा आ सुलता से बाँचल जे रहे, लगभग सभे अंडे-बच्चे ओहिजा जूमल रहे। हवा रंजो भर ना डोलत रहे आ आँख आ काँख के के कहो, दाँत तक से पसेना टघरत रहे।.... तले बीचे में खरउरिया खाड़ होके, मए प्रवचन भाँड़े शुरु कर देलस... 'सब झूठ कहत बाड़ऽ !'

मस्त राम एक उड़त तिलंगी में पोंछ साटे वाला। कड़क के कहले... चोप्प ! क्या बकता है ?

- एकदमें ना चोप्प ! हम इहे कहता है कि तुम लोग मए झूठ बोलता है। भगवान तुम्हारा पोंछिटा में लुकाया है

कि तिरपुंड में घुसाया है? देखाओ !.. "केने छुपाया है ?"

- बाबा अगिया - बैताल बन गइले। मतलानी चूरन के चार फाँका ! नाक पनछा फेंकलस त टायर फटला अस फुटले... मिनिस्टिया है क्या, माधड़...... ! ?'

खरउरिया जले कुछ कहे, तले कई लोग ओकरा के ओहिजा से टँगले-टँगले ले आके बुढ़वा इनार तर एह तरी पटक दिहले जइसे ऊ बनिहार के सोरही होखे... कल् से बइठऽ एहिजे !'

- ना बइठब !' सुरुज के सातवाँ घोड़ा प सवार खरउरिया हलुक होते, इनार के जगत पर लोघड़िया गइल।

- क्या नाम है उसका ?' बाबा फेंकरले।

- जाए दीं, बाबा । छमा कऽ दीं। खात-पीअत रहेले। आजु जनाता, कुछ अधिका चढ़ा लेले बाड़े।" पंडी जी लोग के खभऽ-खभऽ के बीचे एगो कवलेजिहा हाथ जोरले बोलल।

- हें ! तुम कौन हो ??

...... तले दू फायर। लागल.... सौरमंडल के नवो ग्रह आली-आली क के आपुसे में टकरा गइल होखसु लोग।..... ढेर जाना के नाभ सटक गड़ल। फेंड़ पर के चिरई-चुरगुन त उड़िए गइल लोग, कतने कूँड़ी गिरगिट अस मूड़ी ऊपर पठवली त डरने एह से नीचे ना कइली कि का जाने जो.... गरदन के नीचे तिसरकी गोली छटकल त मस्तराम अछइत, उनका भगवानों के हाथ से बाहर के केस हो जाई।

बबुआ जी तरियानी से आवत रहले। गरमी के पार ना। गाँव के सिवाना बलधुस के भुभुर चप्पल के निचहूँ से दवँक मारत रहे। ऊ कुछ दोचित, कुछ सोचत, टाँड़ पर अइले त हवा के हुक भक् से खुल गइल आ ओह में दक्खिन टोला से उठल हाहाकार के सुर उनका रग-रग में अनहोनी के जहर-टूँड़ गोभी गइल। ऊ देखले कि जे जेने बा ओनिए से भागत जा रहल बा, पता ना कवना चक्रवात का ओर !....

रामलाल चाचा गोंड़ टोली देने से दउरल आवत रहले। जइसे अथाह समुंदर में पँवरत जलयान के कवनो टापू भेंटा गइल होखे, बबुआ जी दूरे से चिचिअइले.... का भइल बा हो, चाचा, गाँवे ?

- मउर हो गइल बा।

- हें ! केकर हो, दादा ?

- चिल्होर-बो के।

जइसे हरिअर गाँछ पर बजर टाँगी मारल गइल होखे, बबुआ जी एड़ी से कपार तक झनझना गइल रहले।

जब काँपत साँस कुछ अहथिर भइल त रामलाल चाचा कहले.... 'लवट'। बगसर चले के होई.... थाना में !'

- चिल्होर कहाँ बाड़े ?

बारून, ... अपना ससुरारी.....

- के कहल हा ?

- उनकर माई

- बाकिर..... !

- बाकिर का मरदे ! ई मस्तरमवा जे ना करवावे। साधू-संत होके बेलाम जतिआँव करत बा। खुलला मुँहे केहू के खोल के रख देता। खरउरिआ कुछ कह देलस हा त.... कहत बा कि एह गाँव में परलय होई.... संन्यासी के अपमान हो गइल.... आ.... तूं जे उँड़ारि पारि-पारि गरिआवत बाड़ऽ.... से कुछुओ ना ? ना चाहीं हमनी के अइसन संन्यासी !.. भागि गइले ससुर सोनबरिसा।.... जासु.... ओहिजे ताल ठोकसु....। .....एहिजा त कइए देले, जवन चाहत रहले। अब का ?

- ए में मस्त राम के कुछ हाथ बा का ?

- से हम ना कहुईं।.... असगुन त भरवले हा नूं ?

चिल्होर पाँड़े के मेहरारू भुसहुन में मुहकुरिए फेंकाइल रही। महमंड फाटि गइल रहे आ आँख बिदोरा गइल रहली स। खाँची भर भूसा... जनाइ खून से घेंवड़ा सानल गइल होखे।... जइ मुँह, तइ बात। जइ बात, तइ घात। एक बात-घात में नयकी-पुरनकी अदावत के कँटहिया घास फेर से हरिअरा गइल। चिल्होर के तीन गो जाई के ओर कमें लोग के आँख गइल रहे, जे अब माई-बिहून हो गइल रहऽ सऽ।

..... लोग कहत बा कि लाश जरे में अबे एक घंटा से कम ना लागी। रामलाल चाचा हमरा ओर आवत बाड़े। उनका के देख के हम लोरे सउना जात बार्नी... चाचा' !

- चलऽ चाह पी आईं जा।

- ना, ए चाचा ! हम कतहूँ ना जाइबि।

- चलऽ ! अउरी लोग बा।.. लगले आ जाए के।

- ना ए चाचा ! हमार जान-प्रान चलि गइल।.... हम कतहूँ ना जाइबि। हम बबुआ जी के छोड़ के कतहूँ ना जाइबि।

- अपना के संभारऽ बाबू ! तहार बबुआ जी अब

बाड़े ?

गाँव के फेर से खुले-खिले में महिनवन लाग गइल रहे। चिल्होर हेह हितई से होह हितई भागत फिरले।

- ओह घरी त शिवनारायण हदसे केहू से कुछ ना कहलस, बाकिर जब कबो एकांता में होखे आ भाभी मन पर जासु त.... ओकर रोआई बरे त.... पटइबे ना करे। अइसहीं, ... एक दिन दलानी में बइठल पढ़त रहे कि अनसोहाते .... भाभी के मुँह सोझा नाचे लागल। ओकरा जनाइल..... मस्तराम के प्रवचन वाला माइक दलान के मए देवाल में बिआछ गइल बा आ ओसे भाभी के चिहाइल मुँह से हाँफत निकले वाली धुकधुकी मोम अस चू रहल बा। कलम थम्हले ओकर हाथ कॉपी पर थथम गइल आ ओकर आँख सामने वाली देवाल में जइसे जाम हो गइली स। ओहिजा लउकली चिताने गिरल ओकर भाभी आ उनका ऊपर बन्दूक दागत ओकर चिल्होर भइया !.... ओकर मए देंह जड़इनी बोखार लगला अस काँपे लागल रहे आ ऊ अचकचा के जोर से रोवे लागल रहे.... आरे भाभी हो !....

भाभी ओकरा के अपना लइका अस मानत रही।..... एक दिन हँसिए में ऊ कहले रही.... सिनरायन बबुआ के बिआह हम अपना बहिन से करवाइब।'

चिल्होर हुडुका के डोरी ठीक करत रहले। बीचे में चोंच मरले... कहें हो ?

- काहें का ! बढ़ियाँ लइका के बँढ़िए लइकी नूं चाहीं ? - भाभी कह के मुसुका देली।

चिल्होरो तिरिकट मुस्किअइले.... 'तहरे निअर बँढ़िया नूं ?'

शिवनारायण के भइया के ई गाभी नीक ना लागल रहे। ओकर मन कइले रहे कि कह दे.... हँ हो ! इन्हिके निअर !.... तहरा निअर राछछ के ई बड़भाग कि इनका निअर मेहरारू मिलली।.... ना.... त.... कवनो लइकी के जो चुने के होखे आपन वर त.... ऊ भले कुँवारे रह जाई, तहरा गरे जूही के गजरा ना डाली। ..... बाकिर भइया के डरे ओठ तक ना हिलले स'। भाभियो कुछ ना बोलली। वस... तनिकी-सा मुसुका के रह गइली.... बाकिर दूनो बेकती के मुसुकी में पुरुब-पच्छिम के अनतर रहे।

शिवनारायण के रोआई अतना जोर से रहे कि बगले में ओठँघल ओकर माई चकचिहा के जाग गइल। ऊ आँख मींसत अपना लइका के मुँह का ओर देखलस त ओहिजा डबरा लागल बा.... आ ऊ एह कोशिश में बा कि ओकर सरवत आँख दोसर केहू मत लखे।

माई के अपना ओर देखत देख के ओकर हिचकत आँख बान्ह टुटला पानी अस धक्का मारत बह चलल। ऊ अचकचा के अपना माई के ध लेलस आ जले ऊ कुछ कहसु, एकरा पहिलहीं ओकर मुँह खुल चुकल रहे- 'माई रे ! भाभी के भइए मार दिहुअन।.... हम सब देखुईं..... ए दादा... उनुका इचिको दाया ना लगुए.... भूसा प पटकि के.... एकरा पहिले.... खरउरिया बो.... ओहिजा से लूगा सरिहावत भागल रहुए।'

- चुप्प बाचा ! सपना देखलऽ का ? चुप्प ! चुप्प ! अइसन ना कहे के !

.... बाकिर हई पुलिस वाला ? लउकत नइखन स। ललका खोजत होइहें सऽ। ना। जनाता.... अन्हारा में बइठल बाड़े सऽ- सिआर अस घात लगवते आ हुँड़ार अस खाए-चबाए खातिर।..... हमार देंह कदंब के फूल हो गइल बा।.... पुलिस के आँख में आग होला आ मुँह में तेजाब। अपना बापो पर थूके में देरी ना करऽ सऽ त हमार कवना कियामे बा ?

.... एगो लाश फेर आइल।.......

बबुआ एक बेर कहले रहले - 'चंदन, पाप आ पुन्य के ममिला बड़ा अझुराह ह। कबो मन में आवेला कि पुलिस के आगा जाके चिल्होर के मए कर्मनासा खोल के रख दीं। कबो सोचेलीं - ए से का हो जाई ? चिल्होर के पॉकिटे नू तनी खलिहाई.... आ जदि कुछ होइयो हवा गइल, त मए सितलहरी इनिका लइकने पर न बही !.... तऽ.... अहथिर बइठऽ।.... धर्म के ठीका का हमीं ले ले बानीं ?'

- हम के हईं हो, चंदन ? - बबुआ जी पुछले रहले।

- एगो आदमी।

- आदमी माने ?

- जेकरा में गुन होखे, अवगुन होखे। चाहे अउरी कुछुओ होखे भा मत होखे, प्रेम जरूर होखे।

- चिल्होर आ खरउरिया - बो निउर प्रेम ?

- ना।

- त..... कइसन ?

- हम का करीं ? ...... कहऽ ?

- जवन अचंचल मन कहे।

- चिल्होर के परिवार ?

- विधाता आदमी के कमजोरी से हरमेस बरिआर होला। हमरे वजह से कुछ होई, ई समुझल आदमी के सबसे बड़ कमजोरी हऽ।

- तऽ...... पुलिस से जाके गड़ल मुरूदा उखाड़े के कहीं ?

- हम का कहीं ? राउर मरजी। बाकिर.... रउआ का जानऽ तानी.... पुलिस कुछ जानते नइखे ?

- बाकिर .... !

- बड़ा सोझिया बानीं। इहे तऽ नाश करेला।

- कहीं इहे कहलका के पराछित त ना लाग गइल बबुआ के ? ई त चिल्होर के लागल चाहत रहे।

हमार मन एकदम सकदम में परल बा।

लाश जर गइल। गया नाऊ फूला सेरवावे खातिर पानी में पइसत बाड़े। मए राख पानी उबिछ के गंगा जी में बहवा दिहल गइल बा। हम देखऽ तानी सब आदमी रमरेखा घाट नहावे आवे खातिर तइयार हो रहल बा। हम सोचऽ तानी... दोसरा के सिखावल कतना आसान होला। आजु हमरा पर परल बा, त मन के पचासो बोकला छूट गइल।...... हम बबुआ के अछरंग ना लगाइब। हमीं दोहपच में परल अन्हर-खोह में गिरल बानीं। बाकिर.....

हम उठे के करत बानीं। हमरा झाईं.... हम मरघट के धरती पर चिताने फेंका जात बानीं। ओकरा बाद हमरा कुछ नइखे बुझात....

..... कि जइसे दंडक वन के सब बाँसन में आग लाग गइल होखे। तड़ ! तड़ ! तड़ !... तड़ !... तड़ !..... बाँसन के चटकला के साथे-साथ सैकड़न सूरजन के उजोत। लफ् मारत, आकाश चूमत आग। खाली उजोत आ.... ओह में हम अकेले बिलबिला रहल बानीं।..... दूर-दूर ले खाली उजोत अउरी किछुओ ना.... नू आदमी, नू जानवर.... हँ.... नूं फेंड़-रुख, नू मुर्दघटिया के हड्डी निचोरत कुक्कुर, नू गया नाऊ, नू दान असूलत मोछवल्ला डोम।.... हवो नइखे, आसमानो नइखे, धरतियो नइखे। हम अइसहीं, बे-आधारे के टँगाइल छपिटा रहल बानीं।

...... कहीं हम अर्जुन त ना हईं जेकरा के गीता सुनावे खातिर भगवान विराट रूप धारन करे वाला बाड़े? सचहूँ हमरा कुछ बुझात नइखे. तले. एगो आवाज.। एकदम साफ सुनाई पड़त बा... 'डरो मत बच्चे' ! पुलिस से क्या डरना ? कल सूरज की किरण फूटेगी, उसके पहले आज ही जान लो, कल क्या होगा......'

.... हमरा जनाता, हमरा के केहू ग्लेसिअर के बर्फ में गाड़ देले होखे। हमरा इहो नइखे बुझात कि हम जीअतानी कि मू गइलीं।.... तले उहे आवाज, जनाता, कहीं नगीचे-पास से सुनाई पड़त बा.... इधर देखो ! इधर.... जिधर सूरज डूबता है ....

...... हमार आँख ओने नइखी स घूमत बाकिर जनाता, हम ओने देखत बानीं। ओने के मए आसमान अखबारन से भरल परल बा। पारा-पारी हर पन्ना, जइसे एगो रील में लपेटाइल हमरा सोझा उघरत चलल जा रहल बा। हम हेडिंग पढ़त बानीं....

दबंगों ने दलित महिला के साथ बलात्कार कर उसे नंगे गाँव में घुमाया

एक की मौत

हम जोर से चिचियाइल चाहत बानीं। जइसे हमरा कंठ में अँगर-फोरा हो गइल होखे, लाख छपिटइला के बादो सबद नइखे निकलत। हम भागल चाहऽ तानी बाकिर कइसे भागीं ? हे भारत !.... ई झूठ ह ! एकदम झूठ।.... मए अखबार झूठ कहत बाड़े स। हम का करीं ?

.... हम बरफ में धँसत जा रहल बानीं।

..... कि अचके बरफ फाट गइल आ हमार मूड़ी, धड़ से अलग होके उड़त, बीच आसमान में टँगा गइल।.....

.... ए चंदन ! ए चंदन ! ए चंदन ! आँख खोलऽ !

हमरा कटल मूड़ी के ऊपर पाँख फड़फड़ावत बड़का-बड़का कउआ चोंच मार रहल बाड़े स। हम अक. बकाइले जाग जात बानीं। आँख के सोझा गँवे-गँवे-गँवे सब कुछ साफ होखल आवत बा.... बुबुआ के बाबूजी लग्गी लिहले.... रामलाल चाचा .... बबुल.....

- तीन दिन के बाद होस आइल बा।' हमरा के खटिया से उठा के बइठावत माई कहत बिया।

- 'कइसन तबीयत बा ?'-बाबूजी पूछऽ तारे।

- हमरा का भइल रहल हा ?

- 'कुछु ना।' रामलाल चाचा कहऽ तारे, 'मन करी त नहा-धो के कुछ खा-पी लीहऽ। जीव हलुक लागी त थाना चलि के गवाही दे दीहऽ।'

- गवाही ? हमरा लागत बा, हमरा फेरू झाईं आ जाई।

- हँ ! चिल्होर आ खरउरिया के पुलिस पकड़ के ले गइल। अउरी लोग खोजात बा। खरउरिया के मेहरारू परसँवे से लापता बिया।

हम गँव से आँख बन क लेत बानीं। बन आँख के सोझा बबुआ जी मुसुकात खाड़ हो जा तारे... ए चंदन ! ए चंदन !

हम खटिए पर बइठल-बइठल सोचत बानीं - जिनगी अतना आसान कब हो जाले ?

हमार आँख खुल जा तारी सऽ।

●●●

लोकराग

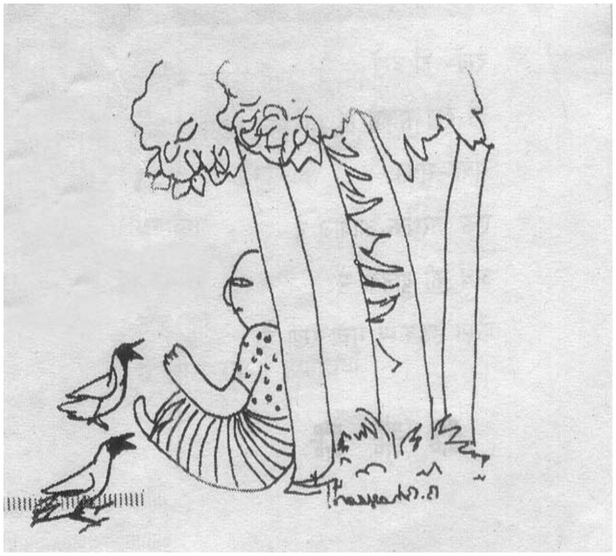

बृजमोहन प्रसाद 'अनाड़ी'

बइठलि दुअरिया पर, झँखत बाड़ी गोरिया राम,
से ना हो अइले नाऽ,
पियाऽ आँखी के पुतरिया राम....नाहीं अइले नाऽ !

फेर-फार फरकता सगरे अलँगवाऽ,
मधिमें होखत बाटे एंड़ियाऽ के रंगवाऽ
खुँटिया पर हहरऽतारी.... टँगल सरियाऽ राम नाहीं अइले ना....

दिनवा आ रतियाऽ दूनों, बाउर बुझाताऽ,
घर शमशान-घाट, अइसन जनाता,
मारे हुहुकाराऽ मये, गँउवा-नगरियाऽ राम नाहीं अइले ना..

जरला पर फोरा देताऽ, ललका सिन्होरवा,
धड़के करेज अउरू दिया के अँजोरवा,
हाथ चमकावतियाऽ, टह-टह अँजोरियां राम,नाहीं अइले ना....

माटी आ माहुर भरल, लागऽता मिठाई,
भितरा से उठे हूक आवताऽ रोवाई,
पोवाऽ अस लागे मोरा गरवाऽ के सिकरिया राम,
नाहीं अइले ना....

●●●

कहानी

हूक

❑ सुमन कुमार सिंह

एगो किसान रहन। उनकर नाम रहे राधा किसुन। राधा किसुन के तीन बेटा। एह तीनों के बाद एगो पेट पोछनी बेटियो भइल। खूब सुंदर। गोर, धपऽ धपऽ। राधा किसुन बो खूब खुश रही। गोतिया गोतिनी के बीचे इहे पाके उनकर पीढ़ा तनी ऊँच हो जात रहे। राधा किसुन बड़ी मेहनती रहन। गाँव के कतने किसानन लेखा उहो एगो छोटहन किसान बाकिर जवने खेत-बारी रहे ओकरा में उ मन लगा के खेती करस। उनका खरिहान के गल्ला देख के नीक-नीक लोग चिहा जाय। बाकिर जे जानत रहे उ इहो जानत रहे कि राधाकिसुन खातिर खेती का हऽ ! बिया-बाल बरावे में नगरी। तायम पऽ खाद-पानी देबे करिहें, चाहे जे हो जाय। जाड़ा होखे, लूक होखे भा बरसात, खेती के तास न बिगड़े देस राधा किसुन। घरे जवन पैदा-पैदाइस आवे राधा किसुन बो ओकरा के जतन से संगोरस। साल भर के खरची, भइया-बहिनी से लेन-देन आ धरम-करम सभ एह खेतिये के आसे-भरोसे चले।

तब अतना मँहगी ना रहे। रोपेया-पाँच रोपेया बहुत ना कहात रहे। तबो ओकर मोल कम ना रहे। दस रोपेया में तियन-तरकारी हो जाय। चवन्नी-अठन्नी के गिनती रहे। रोपेया किलो आलू आ रोपेया किलो टमाटर सस्ता ना तऽ मँहगो ना कहात रहे। राधाकिसुन चाउर-गेहूँ आ आलू के खेती से नून-तेल आ लाता-कपड़ा सभ सपरा लेत रहन। एहितरे पेटे-खेपे उनकर गिरहती के गाड़ी आगे बढ़त रहे। दिन बितल जात रहे।

राधाकिसुन छोट किसान तऽ रहन बाकिर खेती के कवनो साइत उनका केहू से माँगे के ना परे। कुदारी-खाँची, हर-हेंगा, रामी-डंटा लेखा कुल्हि जरूरी साइत उ धइले रहन। बाकिर एहू सभ से उनका खेती के बड़ सिंगार रहऽ सँ उनकर एक जोड़ी बैल। खूब सवख से खियावस-पियावस। गाँव में जब से ट्रैक्टर आइल तब से लोग के ध्यान ओकरे ओरे रहे लागल। ट्रैक्टर से खेती करे वाला लोग के खेती अगुआ जाय। बड़े-बड़े किसान आपन बैल बेचे लगलें। गाँव में पहिले एगो ट्रैक्टर आइल। फेरू एक से दु, दू से चार भइल। राधाकिसुन अपना अरिया-सरेह के अगुआइल खेती देखस त मन ललच जाय। जोताई के हराई साफ हिगिरा जाय। बैल के दोखार आ ट्रैक्टर के चास बराबर। खेत के हलफा कबर जाय। धीरे-धीरे सभके खेत में घूमे लागल ट्रैक्टर। जेकर सँावग ना रहे उ कसहूँ मन मार के रहे। बड़का पेंच ई रहे कि अरिया-सरेह जे सभकर रोपनी-डोभनी हो जाय तऽ बाँचल-खुचल के आपन मन ना रहि जाय। खेती पछुआ जाय त बैल वाला होखे भा ट्रैक्टर वाला सभ फेरा में फँस जाय। तबो राधा किसुन अपना बैलन के भरोसे साल-माथ लगा लेस।

राधा किसुन बो के बार पाके लागल। तीनों लइका गाँव-बाजार के पढ़ाई पढ़ लेले सँ। रधोकिसुन के चिंता भइत। एहनी के आगे पढ़ाई कइसे होखो ? सोंचे लगलें। उनकर तीनों बेटा पिठिया ठोके बढ़ल जा सँ। पहिला बेर जब बड़का के नाम लिखावे के रहे, खूबे सोंचलें-बिचरलें। दोंपँच में परल रहन। का करीं, का ना ! एही बीचे रामासागर पण्डित सलाह देलें, “जजमान, मरद के भागि केहू ना जाने। सवाँग ह, पढ़ि-लिखि जाइ तऽ राउर एगो सहारा हो जाई। दस काठा ध दीं रेहन। नाम लिखवा दीं।” सुनले, राधाकिसुन मेहर के मन टोवलें। बाकि भीतरे अपने हिचिकत रहन। बाप-दादा के दू-तीन बिगहा जवनो बाँच गइल बा, कइसे रेहन ध दीं ? रात-दिन एहि में बुड़स-उतरास। बाकिर उनका इहो बुझाय कि लइकवा ना पढ़ी त एह काठा-कठुली से का होई ? इहे सोंच के उ उड़लें ना बुड़लें आपन एगो बैल बेच देलें। बड़का के नाम असही लिखाइल। काँख-कुँख के चाउर-चून बेचत-खुचत डेढ़-दू साल काम चलल। एह बीचे रधाकिसुन नारायन सिंह से भँजहर क लेलें। दूनों जाना के एकक गो बैल रहि गइल रहन सँ। एह तरे एक हर के खेती समिलाते एह भँजहर से खिंचाए लागल। मोका-कु-मोका ट्रैक्टरो से काम लेबे के परे। नारायन सिंह अब ही नवहा रहन। अपनहूँ बिगहा-डेढ़-बिगहा जोत लेस। बाकि राधाकिसुन अब थाकि चलल रहन। उनका, बिना अदिमी-जन के अब खेती ना पार लागत रहे। लइका-फइका जतने सेयान भइलें सँ, ओतने ऐह सभ काम से दूर होखत गइले सँ। कुछ

साल तक खेत-खरिहान में खाये-पानी पहुँचा के धरहर बनलें सँ। बाकिर धीरे-धीरे खेतवो चिन्हल भुलाए लगले सँ। समय अइसन आइल कि अब उ जोतलो खेत में लात लगावे लाएक ना रहि गइलें सँ। राधा किसुन के चिंता बढ़े लागल। खेतियो अब पइसे वाला के होके रहि गइल। मेहनत से जोता-बोआ जाव तबो खाद-खरी आ दवा-दारू में पइसा के जरूरत पड़े। घर के सवाँग आ समहुतिया लउर, दुनो के दुनो देखाउ साह के अल भर होके रह गइल। चरनी प के एकलौता बैल आ मैनी भँइस के गवत-भूसा, दाना-चोकर सभ दिने के परे। ऐहि में एक लगतारे तीन साल जे घामी परल, गोरू-बछरू तक प आफत आ गइल। राधाकिसुन दुनो बेकत सोचलें - 'हटावऽ इ माल-गरू।' पहिले भँइस बेचलें फिर बैलो बेचा गइल। भँजहर टूट गइल। ओने नारायनों सिंह खेती तूरि देलें। उ साल अइसन रहे कि छोटे-छोटे कतने किसानन के नाधा-पैना टंगा गइल। राधाकिसुन के बड़का के सँघे-सँघे दुनो छोटको डुमुराँव पढ़े लगलें सँ। गाँव से बीस-पचीस किलोमीटर दूर रहे कवलेज। रोज जा के चलि आव सँ। तब बस के भारा एक ओर से एक आदमी पऽ एक रोपेया लागत रहे। ओहनी के पढ़ाई पूरा करत-करत इ भाड़ा सात रोपेया तक बढ़ गइल।

मँहगी बढ़े लागल। राधाकिसुन जब से खेती तुरलें, उनका जिमे कवनो कामे ना रहि गइल। खेती मनी-बटइया पऽ लाग गइल। मनफेरवट खातिर सिवान में, चाहे बाग-बगइचा ओरे घूम आवस। अब चाउर छोड़ के सभ किनहीं केपरे। आगद घट गइल आ खाये वाला पेट बढ़ि गइली सन। समय अइसन रहे कि पढ़लो-लिखला के बाद घरे-घरे बेरोजगार नवही बइठ गइलें। दुअरा पऽ भर-भर दिन तास पिटाए लागल। राधाकिसुन बैल तऽ बेचिये देले रहन। बाकिर लोग कहस 'बी०ए०-बैल', त लागे कि साँचो उनुको किहाँ तीन गो बैल बइठल पगुरावऽताड़न सँ। कतने मजुरहा बहरा जा के नोकरिहा हो गइलें। राधाकिसुन बो साँझ के देखस कि नोकरिहन के माई के नाक आ उनका नाक में अब अंतर हो गइल बा। साल-दू-साल पहिलही कतने के घरे टी०वी० लाग गइल। रामायेन देखे के मन करे त उनका बाड़ा बुझाय। अइसन में उनका इ बुझाय अब उनकर चिरई-चुनमुन सभ चिल्हि-कउवा हो गइले सँ। उनका भागि के पाँख झरे लागल। रधोकिसुन एहि फिकिरे राते-दिन डुबल रहस, 'का करिहें सँ इ कुल्हि ?' एने पेट पोछनी बेटियो सेयान हो गइल रहे। हाई इस्कूल पढ़ला के बाद से उ घरे में बिया। कइसे पार लागी ? सोच-सोच के दुनो बेकत निझाइल जास लोग।

बुझाय ना, बाकि समय बाड़ा जल्दी-जल्दी बितत जाय। एहि बीचे राधाकिसुन के छोटका सिवालापऽ के पंड़ी जी के लइका सँघे दिल्ली चलि गइल। पंडी जी के लइका टी०वी० के मिस्तिरी ह। छोटको पहिले ओकरे लगे रहि के मिस्तिरियाँव सीखी। नारायेन सिंह समझवले, "ठीके भइल, -किसुन काका। कुछ कमइबे नू करिहें - छोटकू !" "का कमइहें उ, अब त उहे जनिहें !" मने-मने बुदबुदइलें राधाकिसुन। ओहि साँझे जब उ खाए बइठल रहन त उनकर बड़का आ मझिला दुनो उनका लगे आ के बइठलें सँ। मझिला धीरे से बोलल - "बाबूजी, एगो बड़ा बढ़िया जोगाड़ लागल बा। अगर कुछ पइसा होखे तऽ पुलिस में हम भर्ती हो जाइब।" राधाकिसुन तकले त देखलें कि दुनो उनकर मुँह ताकऽतारे सँ। बड़को बोलल- "हँ बाबूजी ! कुछ जोगाड़ ना लागी तऽ हमरे अस एकरो उमिर खतम हो जाई। सरकारी नोकरी आज-काल बे घूस के कहाँ होता ?" राधाकिसुन खाते-खात बोललें - "हँ हो ! बाकिर पइसा आई कहाँ से ? दू-तीन बिगहा खेत-बार बा। इहे नू आधार बा। जइसन कहबऽ लोग, कऽ देब ! फेरू आगे के तोहरे लोग के सोचे के बा। चाहऽतानी कि एगो बेटी बिया। कसहूँ एकर बियाह-सादी कऽ दीं। आगे के के जानऽता कि का होई। रधोकिसुन बो लइकवने लगे आ गइल रही। सब सुनत रहीं। कहली, "आज बेची भा काल्ह ! खेतवा तऽ बेचहीं के परी। बेटिया का सेतिहे बियहाई। का जाने मझिला के नोकरी हो गइल त दू-एक बरिस में घर सम्हरि जाई !" राधाकिसुन मेहर के इ बात सुन के सोचे लगलें - "ठीके कहतिया ! अउर का उपाय बा ?" उ मझिला के ठीक से देखलें। कइसन भइल जाऽता ! फूलल-पझाइल देह झुराइल जाता। उनका डर हो गइल। कहीं इहो बड़का उमिर पार क गइल तऽ का होई ? बाकिर उ कुछ बोललें ना। खाली अतने पूछलें- "कतना पइसा लागी ?" बड़का बोलल- "सत्तर हजार !" राधाकिसुन आँगन में से बढ़ि चललें। सुते के बेरा हो गइल रहे। खा-पीके सभे सुतल-परल।

रोज से पहिले जगलें राधाकिसुन। बुझाइल कि कवनो बहुत बड़ काम करेके होखे। रोजे लेखा बगइचा ओर निकल गइलें। बगइचा त बस उनकर नामे के रह गइल बा। बनरी के सँउसे बाग बेचा गइल। अब उनका हिस्सा रहिये

का गइल बा ? बस, पाँच फेड़ कटहर ! होत फजिर रोज एक फेरा मारे लन। लइकन के एने तनिको मन ना लागे। कवनो जुकुत ना भइलन सँ। गूह प ढेलो फेंके लायक ना ! राधाकिसुन ओहि कटहर तऽ बइठल सुस्तात रहन। कटहरन के लेंढ़ाए में अभी देरी रहे। अभी त पतइयो ना हरियाइल रहे। जब आमन पऽ मोजर धरे लागेला ओही घरी कटहरो हरियाये लागेला। फगुआ आवत-आवत लेंढ़ा एकक-डेढ़-डेढ़ सेर के हो जालें सँ। चतरी, सुअरमुँहा, लमेखा, कोनसिया आ छवरियाहा इ पाँचो फेड़वा एही नाम से जानल जालें सँ। बबे-दादा के बेर से।

मझिला के सत्तर हजार रोपेया चाहीं। बइठल सोचत रहन राधाकिसुन। जोड़-जाड़के बागे-बगइचा ले ले कुल्ह तीन-साढ़े तीन बिगहा से अधिका जमीन नइखे उनका। उ सोंचलें - 'इ जमीन रहिए के का करी ? लइकन के जिनिगी के बात बा।' उनका झपइनी लेत रहे। आज बहुत पहिलहीं जाग गइल रहन। उ जवना बाँस के मचान पऽ बइठल रहन ओही प ओठंघि गइलें। काँचे निनि जागला से, चदर में घुड़मुड़ियाते फोंफ काटे लगलें।

"तीन-चार-पाँच.... सभ गिन लेलीं। केहू एको नइखे तूरि सकत। हम सभ कटहर गिन लेले बानी। के कहेला कि आम-कटहर ना गिनल जा सके। हम सभ गिन के राखीं ला। आजु-काल्ह के लइकन के का बुझाई इ कुल्हि ! अबकी छवरी प माटी फेकवा के जटहिया काँट बो देब ! चतरी के चुहऽ चुहऽ हरियर लेंढ़ा केकरा ना भावे। लमेखा कोवा खातिर मसहूर ह। छवरियाहा फरि गइल बा। गोतिया-भाई, टोला-मोहाला सभके बाएन फेरा जाई। अबकी बड़का के माई एको घर छोड़ी ना। अरेऽ, इ कोनहवा के डाढ़ त झनके लागल भाई ! बुझाताऽ अब ना बाँची। मुखियवा के भाई जब ले छवरी प सोलिंग के ठिकदारी करवलस, तब ले इहे हाल बा कोनहवा के। हाथ-भ दबा के माटी कटवा देले बा। जर कटा गइलीं सँ। कोनहवा पऽ नजर गड़ गइल। इ का, अरेऽऽ, कोनहवा पऽ रोपेया कतना फरल बा ! बाप रे, हर साल से अधिका-रोपेये-रोपेया ! अरेऽ मझिलाऽ, बड़काऽ रेऽऽ ! आउऽ आवऽ सँ। तूरि ल सँ सत्तर हजार !" खड़ऽ खड़ऽऽ खड़ाकऽऽ। एगो सूखल छियुंकी खड़खड़ाके गिरल। उठि के बइठ गइलें राधाकिसुन ! "हूँ ऽऽ, कइसन सपना बा ? फेड़ा पऽ रोपेया फरेला ?" उ बुद-बुदात निहारे लगलें पाँचो फेड़न के। 'कइसन उझँख भइल जा रहल बाड़े सँ इ कुल्हि फेड़ !'

राधाकिसुन अपना कटहर तऽ से उठके पछेयारा डेरा ओरे चल देलें। बैजू अहिर से भेंट करिहें। पुछिहें कि "ना होखे तऽ एके जगे सवा-बिगहा खेत बा, ले लेउ। गाँव-घर में जवन भाव चलऽता ओह हिसाब से डेढ़-पौने दू लाख हो जाई। मझिला के कामो हो जाई आ बेटियो बियहा जाई, हमरे जिनिगी में।" बड़ा समय से निकलल रहन। पहुँचते बैजू से भेंट भइल। सभ बातचीत हो गइल। लागल कि राधाकिसुन के कपार प से एगो बहुत बड़ बोझा उतर गइल।

घरे पहुँचले तऽ अपना मेहरारू से बतइलें। बैजू दस दिन के भीतरे पइसा दे दिहें। सुन के बड़का आ मझिला अपना जोगाड़ में धावे-धुपे लगलें सँ। बड़का बेटा सोचत रहे कि हम ना सही मझिलो के जे सरकारी नोकरी हो जाई तऽ बाबू-माई के बुढ़ापा के साध पूरि जाई। घर के दिन-दसा फिर जाई। बाबूजी का कहलें ? जिनिगी भर हाड़ ठेठवलें तऽ हमनी के कसहूँ-कसहूँ पोसइनी जा। बे नोकरिहा के आजु-काल्ह खेतियो नइखे हो पावत। राधाकिसुन एने बैजू से खेत बेचे के बात तऽ कऽ लेलें बाकिर मन सोरहो घरी उचटल रहत रहे। केहू से बाड़ा कम बोलस-चालस। राधाकिसुन बो सभ समुझत रही। जानत रही कि उनकर बुढ़ऊ के परान खेते में बसे ला। बाकिर उनका हिम्मत ना होखे कि राधाकिसुन से कुछ पूछ-पाछ करस। अपना कहला के मोताबिक बैजू पइसा दे देलें। तय भइल कि पहिले काम भ पइसा दे-देतानी। फेरु बकियवा लिखा-पढ़ी के बेरि देब। दलाल बढ़िया मिल गइल रहे। पइसा देत कहीं कि मझिला के सिपाही में भर्ती करा लेलस। राधाकिसुन बो खुश। छोटको के पता चलल। फोन पऽ आपन खुशी सुनवलस। मझिला ट्रेनिंग में चल गइल। बाकिर तबो राधाकिसुन के मन का जाने काहें ना भरे। उ घुर-फिर के घरे आवस तऽ पहिलहीं अस कुछ सोचत, कुछ गुनत। बहरी के लोग के बात उनका कान में बाजतऽ रहे- "अब का फिकिर कइले बाड़ऽ ? लइका सभ सम्हार लिहें सँ। बुढ़ापा में अब दुनो बेकत रमऽ-रमावऽ लोग।" 'अइसन भागि कहाँ बा ! आपन जाँगर थाकल। जब आपन आँख-ठेहुन थाकल त अब केकर भरोसा रहल। सभकर आपन-आपन जिनिगी बा।' उ मने-मने इहे बिचारत रहन।

अबहीं मझिला के ट्रेनिंग ना खतम भइल रहे। बड़का फेर इ रहे कि अबहीं बड़का बेटा कुँवारे रहे।

लइकियो कपारे चढ़ल आवत रहे। का करस राधाकिसुन दुनो परानी ? कई लोग, कइगो सलाह देव। एने घर खरचियो बढ़ल जात रहे। मँहगाइयो ओतने चाँप चढ़वले रहे। खेती थउसल, तब से हींग ले हरदी तक बनिये किहाँ से खरीदे के रहे। कइसे रोकस तिलकहरू के कि 'हमरा किहाँ मत आवे केहू !' बाकि धीरे-धीरे सभे जान गइल कि अभी उनका बड़का के बियाह करेके बा। एही बीचे बैजू बकिया पइसा दे के खेत-लिखवा ले लें। दुनो बेकत पइसा जोगा के धइल। मने-मने तय भइल कि बेटी खातिर लइका खोजाव ! बाकि मँहगी अइसन दिन दूना, रात चौगुना बढ़ल जाय कि बँचलका पइसा से बेटी बियाहल अब मुस्किल रहे।

एक दिन के बात ह। मन ना लागत रहे तऽ राधाकिसुन निकल गइलें कटहर ओर साँझ हो गइल रहे। उनका घर के पिहुती से सीधे जवन आरि गइल बिया उहे धइले जात रहन उ। गहूँ कटात रहे। ओही राही भगलू कटिया से चलल आवत रहन। दुनो जाना में भेंट भइल। राम-सलाम के बाद पुछलें राधाकिसुन - "का हो, मजगर भइल बा नू गहूँ ? असो तऽ खूबे सुतार रहल हा।" "का- सुतार रहल हा काका ! खाद-खरी, बिया-बाल आ थरेसर से बाँचल तऽ मेहनतियो ठीक से कहाँ आइल। अब खेती में कवनो तरी ना रह गइल काका !" कहत-सुनत दुनो जाना अपना-अपना राहे चललें। एक बेर फेरू सोंचे लगलें राधाकिसुन - 'अब माजा ना रहल खेती में !' सोचते बढ़ि गइलें अपना कटहर ओरे। दू-तीन दिन पहिले लमेरवा के एगो झनकलकी डाढ़ गिर परल बा। उ एही चिंता में परल रहन। आरि छोड़ के जसही उ छवरी प चढ़ल चहलें, डगमगा गइलें। झूठी परि गइल। डाँड़े के भरे एक अलँगिये फेंका गइलें। आँखि मुदा गइल। फेरू कुछु ना बुझाइल कि उनका का भइल। होस भइल तऽ उ डॉक्टर किहाँ रहन। बड़का बेटा आ गाँव - घर के उनकर कुछ साथी-सँघी लाद-पाथ के ले गइल रहे लोग। बाकिर बाजार पऽ के लोकल डॉक्टर किहाँ बहुत व्यवस्था ना रहे। भइल कि जल्दी पटना ले जाएके परी। बहरी बड़का बेटा आ घरे ओकर मतारी-बहिन। सभे हरान-परसान। कसहूँ पटना लेके पहुँचल लोग। जब पटना के डॉक्टर सभ जाँच कइलस तऽ पता चलल कि राधाकिसुन के एगो कुल्हा टूट गइल बा। अपरेसन ना होई त कवनो उपाय नइखे। सवाल फेरू पइसा के आ गइल। छोटका आ मझिला बेटन के खबर देबे के बिचार भइल। बाकि बात इहो रहे कि अबहीं ओहनी भीरी पचास हजार रोपेया कहाँ से मिली। तबो खबर दियाइल। अइसन में खेतवा बेचलका पइसवा बड़ा कामे आइल। अपरेसन भइल। राधाकिसुन में खून के कमी रहे। उ रहि-रहि के रोये लागस। बेटी आ मेहर के देखि-देखि उनकर रोआई अउर तेज हो जाय। उ कमजोर हो गइल रहन। रहि-रहि के हाथ जोड़ लेस- "हमरा के मुआ द लोग। जहर दे द लोग। अब बरदास नइखे होत !" जब उनका ई पता चलल कि अपरेसन में उनकर खेत बेचल कुल्हि पइसा लाग गइल तऽ धीरे-धीरे उ बोल-चाल बन क दे लें। कसहूँ-कसहूँ परल रहस।

महीना-डेढ़ महीना बाद जब पटना से घरे आ गइल लोग तबो राधाकिसुन ठीक से उठि ना पावस। उ एकदमे देह छोड़ देले रहन। ऊपर के टूट आ भीतर के टूट दुनों उनका देहीं पऽ रोहानी ना फेरे देलस। छोटका लइका आ गइल रहे। बाकिर मझिला के आवे में अभी देर रहे। छुट्टी मिले में बड़ा परसानी रहे। राधाकिसुन कबो एक रोटी तऽ कबो आधा रोटी खास। बेटा-बेटी आ मेहर रात-दिन छापा परल रहस। सुतला में एक रात राधाकिसुन के कफ बढ़ गइल रहे। धउरा-धउरी लाग गइल। तबो केहू कुछ ना करि पाइल। राधाकिसुन के सुगना उड़ गइल। कसहूँ किरिया-करम भइल।

राधाकिसुन बो के हाल अब पगली अस हो चलल रहे। बेटा-बेटी सभ समझावे। उ केहू के सुनस ना। जेहि मिले ओकरे से कहस- "हाथे जोड़ले निकल गइलें। डाँड़े के भरे गिरलें तऽ उठलें ना। जवन खेत-बेचाइल, ओही क हूक धरा गइल उनका। ओही हुके चलि गइलें !" ●●●

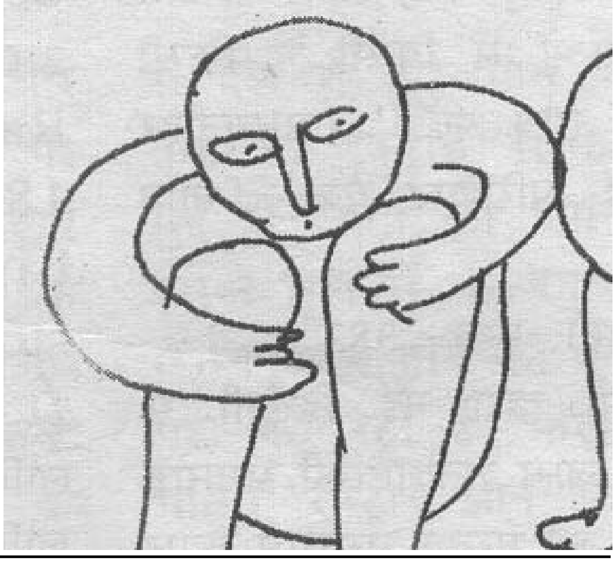

कहानी

बैसाखी के आँख

❑ कन्हैया सिंह 'सदय'

अइसे त प्रकाश जी हर साल अपना बियाह के वर्षगाँठ मनावे सपत्नीक, बइसाख के पहिला पख में कवनो दर्शनीय स्थान के यात्रा प निकलेलें आ वापस लवटला पर संस्मरण के खजाना दिल खोल के लुटावेलें। बाकिर, अबकी के अनुभव कहे जोग नइखे। ऊ अइसन विचित्र बाऽ जवन उनका अंतर के झकझोर देले बा। लाली देखे के चक्कर में ऊ लोग खुदे लाल होके लपटल बा...।

प्रकाश जी लंगड़ बाड़ें आ उनकर औरत विभा, जन्मजात कानी। राम मिलवलन जोड़ी...। तबो ओह लोग के प्रेम में, समुन्दर के गहराई, आत्मीयता के अनुबंध, फलदार वृक्ष के समर्पण आ फूलन के सुगंध केहू सहजे महसूस कर सकेला। उनकर पिता देवनंदन प्रसाद जी टाटानगर रेलवे स्टेशन से अवकाश प्राप्त रेल-कर्मी बानी। पत्नी के असामयिक निधन का बाद, जब उहां का अपना एकलौता विकलांग बेटा के पालन-पोषण करे में ख़ुद के असमर्थ पवनी त उनका के चेसायर होम में भरती करा देहनी। ओही संस्था का माध्यम से संचालित जीवन ज्योति माध्यमिक विद्यालय से ऊ प्रवेशिका पास कइलें। विभो ओही विद्यालय के छात्रा रही। दूनू जाना एके क्लास में पढ़त रहे।

विभा, ऑपरेशन से भइल रही। ओही दौरान चिकित्सकीय लापरवाही का चलते उनकर बाईं आँख क्षतिग्रस्त हो गईल। जान त बच गइल। बाकिर, एक आँख से ऊ कान हो गइली। एह बात के पता तब चलल जब ऊ होश संम्हरली। उनकर बाबूजी इहवें एगो माध्यमिक विद्यालय में शिक्षक बानी। बेटी के हीन भावना से बचावे खातिर उहां का विकलांगन के माध्यमिक के माध्यमिक विद्यालय में उनकर नाम लिखवा देहनी।

ओही विद्यालय के उपजाऊँ जमीन प ओह लोग के प्रेम अंकुरित भइल। प्रेम त पूजा ह जवन आत्मा से कइल जाला। शारीरिक-विकलांगता एमें बाधक नइखे बन सकत। इहे बोने रहन कि ओह लोग के आपसी आत्मीयता, बढ़े आ फुलावे लागलि। ओह दिन, जहिया प्रवेशिका के परिणाम घोषित भइल, दूनू जाना के खुशीयन के पाँख त लाग गइल। बाकिर, गतिशील ना हो सकल। जुदाई के अहसास से आहत, ऊ लोग परिसर के पलाश-पेड़ वाला चबूतरा प बइठल एक दोसरा के डबडबाइल आँखिन के भाषा पढ़े लागल। जब ना रहाइल त प्रकाश जी मौन तुरत पूछलें -

'हमार बैसाखी बनबू ?'

'तूं हमार आँख बनब ऽ ?'

जब सवाल के जबाबा सवाल बन जाला त सहमति आँखिन में उतर जाले। उहे भइल। बाकिर, एह शर्त पर कि बेरोजगारी के अभिशाप दूर कइला का बादे बियाह होई आ फिलहाल परिवार में एकर चर्चा ना कइल जाई।

विद्यालय से निकलला का बाद प्रकाश जी रेलवे कॉलोनी के निकट, सिलाई-बुनाई के प्रशिक्षण लेके एगो महिला दरजी के दोकान में काम करे लगली। एही बीच रेलवे में क्लर्क के भैकेंसी निकलल। प्रकाश जी फारम भरलें, परीक्षा देहलन आ विकलांगन के आरक्षित कोटा में उनकर चयन हो गइल। विभागीय पैरवी का चलते उनकर तैनातियों टाटा नगर रेलवे स्टेशन में हो गइल। ऊ फेर से रेलवे कॉलोनी के क्वार्टर में आ गइलें।

संतान जब सेयान हो जाला, तब बाप-महतारी के ओकरा बियाह के चिंता स्वाभाविक बा। बाकिर, एह विकलांगन से बियाह के करित ? बड़-बड़ घोड़ा दहाइल जास त गदहा पूछस, 'केतना पानी' बियाह, बाजारू बन गइल बा। लड़िकावाला, सुन्दर, सुशिक्षित, गृह-कार्य दक्ष मालदार बाप के लइकी खोजत बा आ लड़कीवाला बिना दहेज के स्वस्थ, सुन्दर, सुशिक्षित, नौकरीशुदा सम्पन्न परिवार के लइका खोजत बा। जवन मिलत नइखे आ एही पचड़ा में लड़का-लड़की बुढ़ाये लागत बाड़ें। विभा के बाबूजी, लड़िका खोजत-खोजत जब परेशान हो गइनीं आ प्रकाश के बाबूजी पलक पांवड़ा बिछाके लड़कीवाला के इंतजार करत-करत आजिज हो गइनी तब प्रेमी युगल आपन प्रस्ताव परिवार का सोझा राखल। बिलार के भागे सिकहर टूटल। पहिले त कुछ नाकुर-नुफुर भइल। बाद में दूनू पक्ष मान गइल। बिना कवनो ताम झाम के मंदिर-प्रांगण में शादी-समारोह भइल आ विभा-प्रकाश एक

दोसरा के जीवनसाथी बन गइलें।

हर साल अइसन असवों आपना शादी के पांचवा वर्षगांठ मनावे ऊ लोग 'पूरी' गइल रहे। पहिला दिन ऊ लोग भगवान जगन्नाथ जी के पूजा-अर्चना कइल। दूसरका-तीसरका दिन पुरी आ भुवनेश्वर के दर्शनीय स्थानन के चक्कर लगावल। चउथा दिन के सुबह साढ़े पाँच बजे ऊ लोग समुन्दर में सूर्योदय के नजारा देखे आ जल तरंगन के साथ कलोल करे खातिर पूरा तइयारी के साथ होटल से बाहर निकलल। समुद्र-तट होटल से बहुत दूर ना रहे। मात्र पन्द्रह मिनट में ऊ लोग उहवां पहुंचके देखता-

दूर-दूर तक फइलल समुन्दर के किनार प इकट्ठा-जनसमूह। ओमे से कुछ लोग सूरुज-दरसन के नजारा अपना अनुभव के अलबम में सजावे खातिर पुरूब मुँहे खाड़ बाड़ें... कुछ लोग खारा पानी के फेनाइल बलुवाइल तेज लहरन के धक्कम-धुक्की आ खिंचाव के आनंद लेबे में मस्त बाड़ें.... कुछ लोग ताड़-पत्तन आ बाँस से बनावल अस्थाई झोपड़िन में चाय के चुस्की ले रह बाड़ें..... कुछ मोती बेंचे वाला लड़िका बीच-बीच में दर्शक लोग के ध्यान भंग कर रहल बाड़ें। कुछुवे देर बाद, समुन्दर के अंक से नवजात अरूण ध ीरे-धीरे ऊपर उछिले लागल बाड़ें। गुलाबी चुनरी में दुलहिन अस सजल लहरन के मंगलगान के साथ जल तरंग बाज रहल बा..... सूरूज के लालिमा से जल-थल-नभ लाल हो चुकल बा। बेनिया डोलावत मादक पुरवइया के मस्ती बुलंदी प बिया....। ओह अनुपम दृश्य के चित्त में जोगवला का बाद ऊ लोग समुन्द्र का तरफ आपन ध्यान केन्द्रित कइल।

लहर लेबेवाला सैलानियन के संख्या बढ़ि गइल रहे। ज्वार-भाटा के गर्जन, कवनो हिंसक पशु के चिंघाड़ से कम भयानक ना लागत रहे। एही से ऊ लोग चुपचाप फरके खड़ा होके मस्ती लूटे में अपना के सुरक्षित महसूस करत रहे। प्रकाश जी के थथमल देखके विभा मौन तुरत कहली - 'काहें डेराइल बार्नी, चलीं अन्दर, हम बानी नूं, फेर अइसन मौका मिले ना मिले..... एतना लोग नहाते नूं बा। ऊ हिम्मत जुटवलें। बैसाखी के सामने वाली झोपड़ी वाला के हवाले करत विभा के पहुंचा पकड़लें आ लहरन के पहुंच में आ गइलें। कुछुवे देर में ऊ महसूस कइलें - आपत लहरन के साथ ऊ कुछ ऊपर जरूर आ जात बाड़ें। बाकिर, लपटत लहरन के साथ कुछ बेसिये अन्दर खिंचा जात बाड़ें। बालू के फिसलन प उनकर गोड़ जम नइखे पावत। विभा उनका के सम्हारे में विफल बाड़ी। जइसे कवनो विशाल अजगर अपना शिकार के धीरे-धीरे निगलेला ओसहीं समुन्द्र-दानव हमनी के निगल जाई.... आजुवे ले अरदोवाइ रहल हा.... अब, परान निकल जाई.....।'

एतने में एगो युवक छपाक से कूदके अन्दर आइल, आ उनकर दोसरका पहुंचा पकड़के ऊपर खींचे लागल। हलांकि लहरन के धक्का से उहो गिर गइल। बाकिर, हतोत्साहित ना भइल आ धीरे-धीरे ओह लोग के घसेटत ऊपर आवे में कामयाब भ गइल। जान में जान आइल। दिल भाथी अस धकूधकात रहे। प्रकाश जी ओकरा के 'धन्यवाद' कहलें आ विभा का मुँह से निकलल - 'बबुआ, तोहारा एहसान के हमनी जिनिगी भर ना भुलाइब..... तूं हमरा सेनूर के लाज रखल.... लखिया होख..... भगवान जगन्नाथ जी तोहार रक्षा करस....।'

'एमें एहसान के का बात बा, ई त हमार कर्तव्य रहल हा, पूरा कइनी हां.... अइसन-अइसन इहवां होते रहेला। रउरा सभ के होसिला देख के हम दंग बानी। अपना विकलांगता के बावजूद अपने सभ एह खतरनाक लहरन से मुकाबला करे खातिर समुन्दर के चुनौती स्वीकार कइनी। अइसन हिम्मत आ मनोबल के बलिहारी।'

'देख, विकलांगता हमनी के कमजोरी भा हीन-भावना के पोषक नइखे। हमनी खातिर त ई, ईश्वर के वरदान बा। एकरे चलते आज हमनी का आत्मनिर्भर बानी आ समाज में सामान्य नागरिक अस जी रहलबानी।'

'हमरा बात से जो रउरा सभ के चोट पहुंचल होखे त क्षमा करब। विकलांगता के खिल्ली उड़ावल हमार नेत ना रहल हा। हम कहे चाहत रहनी हां कि इहवां के समुन्द्र तल तिरछा बा, आये दिन खतरा होत रहेला। रउरा सभके निर्णय सुरक्षा का दृष्टिकोण से सही ना रहल हा। रउरा सभका समुन्द्र दर्शन आ स्नान खातिर दीघा जायेके चाहत रहे। ऊ तट समतल बा....।'

तब विभा चुप ना रह सकली, कहली- 'दीघा गइला से जगन्नाथ जी के दर्शन त ना होइत... पुरी आ टेम्पल सिटी भुवनेश्वर के भ्रमण-सुख त ना मिलित..... रहल जोखिम के बात त मारेवाला से बड़ हाथ बचावे वाला के होला....।' ऊ सकता में आ गइल। फेर मुस्कुरात पूछलस-

'रउरा सभ आपन परिचय दे सकिलें ?'

'काहें ना', जाने चाहत बाड़, त सुनऽ- '...'

प्रकाश जी के परिचय में जिनिगी के इतिहास रहे। ऊ भाव-विभोर हो उठल। अतने में विभा कहली- 'कुछ अपनो बारे में बतइब कि हमनिये के बारे में सुनत रहब ?'

ऊ असमंजस में पर गइल। फेर सोचलस, अइसन निश्छल दंपति से झूठ बोलल अपराध होई, काहें ना सभकुछ साँच-साँच बता दीं। ऊ अपना परिचय के क्रम में बतवलस-

'हम इहां के मोती-विक्रेता बानी। नकली मोती के असली बता के बेंचिले। कबो-कबो पर्यटक लोग के पॉकेटो प हाथ मारिलें। हमार नाम आशीस बा। बलिया के हईं। बी. कॉम. पास बानी। दू साल पहिले नौकरी के तलाश में इहां आइल रहीं। कुछ दिन ले प्राइवेट टेम्पू चलवनी। मालिक से झगड़ा हो गइल आ ऊ काम छोड़ देहनी। बहुत प्रयास का बादो जब नौकरी ना मिलल त निराश होके एही समुन्द्र तट पर ई कारोबार शुरू कइनी। हम मोती-माफिया से पचास रूपया में एगो मोती खरीदिले आ जइसन गांहक ओइसन दाम के हिसाब से बेंच दिले.... कम से कम एक सौ रूपया के एगो मोती। गांहक पटावे में जहिया असफल होइले, ओह दिन...।'

'ई त बड़ा बाउर काम बा.... कहियो पुलिस के चक्कर में फँस जइब, जिनिगी बरबाद हो जाई। अच्छा ई बतावऽ, अइसन करे खातिर तोहार आत्मा गवाही देला ?' प्रकाश जी पूछलें।

'आत्मा त गवाही ना देला। बाकिर, पापी पेट के सवाल बा। विभा कहली, टेम्पू खरीद के काहें नइखऽ चलावत ? नेक काम में प्रगति बहुत धीरे-धीरे होले। बाकिर, आत्म संतोष होला, शांति मिलेले.... छोड़ द ई धंधा.....।'

'हमहूं चाहत बानी, जेतना जल्दी हो सके आपन टेम्पू खरीद लीं। कुछ पइसो जमा कइले बानी। लेकिन, बैंक लोन खातिर केहू गारंटर नइखे मिलत। एही से योजना खटाई में परल बिया।'

'हम तोहार गारंटर बनब, तूं जमशेदपुर चलऽ.... उहवें से टेम्पू ले ल....।' आज पहिला बेर केहू ओकरा बारे में सोचले रहे। ओकर आँख भर आइलि। ऊ हकलात कहलस- 'एकर जरूरत ना परी, मकान मालिक से कहले बानी.... ऊ आश्वासन देले बाड़े। उम्मेद बा ऊ हमार जरूर मदद करिहें। जो अइसन ना होई तबो हम पूरा पइसा जमा कके टेम्पू खरीदे के कोशिश करब। हमार मोती खरीदब लोगिन ?'

'जरूर.... बकिर, एजा त भींजे के डर से हमन रूपया लेके नइखीं आइल। तूं होटल मेघदूत के कमरा नं० ६ में सांझ खां ४ बजे आव।'

'ठीक बा.....।'

'अब चले के चाहीं।'

विभा जब प्रकाश जी के कंधा में हाथ लगाके उठावे लगली त ऊ पूछलस - 'बैसाखी नइखे का ?'

'हमार असली बैसाखी त ई बाड़ी.... नकली ओह झोपड़ी में परलि बा।

प्रकाश जी के बात पर एगो गुलाबी मुस्कुराहट सभका होंठन प रेंग गइल। धीरे-धीरे सभे एक साथ झोपड़ी तक गइल, चाय पीयल आ अपना-अपना ठेकान का तरफ रवाना भइल।

होटल पहुंचला का बाद ऊ लोग नहाइल, धोवाइल, कपड़ा बदलल आ जब भोजनालय में नाश्ता करे बइठल तब प्रकाश जी के अंतर में एगो नाकारात्मक चिंतन के प्रेत प्रवेश कइलस। कहलें-

'विभा, हमरा त लागत बा आज जवन कुछ भइल, ई एगो नाटक ह, ठगी के नायाब तरीका ह.... विश्वास जीते के नैतिक साजिश ह..... जइसे मछरी के फँसावे खातिर मछमार अपना बंसी में चारा डालेला, कहीं उहो त अइसन नइखे कइले....।'

'ना... ना...., अइसन विचार अपना मन से निकाल दीं। ऊ एगो भल आदमी बा, मजबूरी में गलत काम कर रहल बा। कवनो काम के अच्छाई-बुराई ओकरा परिणाम से निर्धारित कइल जाला। झूठ बोलला से जो साँच के जान बच जाव त ओकरा के का कहब ? पूण्य कि पाप ? ऊ नेक दिल इंसान बा....। अपना अस्तित्व के रक्षा करे खातिर मजबूरन ऊ गलत काम करत बा। ओकराके सही राह प ले आवे खातिर हमनी का ओकर मदद करेके चाहीं।'

'साइत तूं ठीक कहत बाड़ू। हमहूं इहे सोचत रहीं। अचानक मन भरम गइल हा। फिलहाल हम दस हजार तक ओकरा के दे सकिले। एहसान के बोझ, कुछ त हलुक हो जाई।' एह पर दूनू जाना के सहमति बनि गइल।

ठीक चार बजे कमरा के कॉल बेल बाजल। प्रकाश जी दरवाजा खोललें आ ओकरा के अन्दर बोलाके बइठवलें। कुछ औपचारिक बात-चीत का बाद ऊ सिरहाना से सौ रूपया के एगो गड्डी निकललें आ ओकरा तरफ बढ़ावत कहलें - 'बबुआ, हई दस हजार ल, टेम्पू खरीदे के नेवरती ई हमनी के सहयोग राशि ह।'

'ई का ? लागत बा, रउरा सभ अभियो हमार एहसानमंद बनल बानी। ई हम नइखी ले सकत, रखीं अपना पास। हो सके त हमरो से बेसी कवनो जरूरतमंद के मदद कर देब। एहसान त ईश्वर के आदेश आ आशिर्वाद से चुकावल जाला। स्वारथ बस कइल गइल एहसान सौदा ह। कहल बा - नेकी कर दरिया में डाल....।'

दूनू बेकत टुकुर-टुकुर ओकर मुँह देखे लागल। बकार बंद हो गइल। प्रकाश जी ऊ गड्डी सिरहाना रख देहलें। ऊ फेर मुखरित भइल -

'मोती बा देखब सभे ?'

'देखेके का बा, रख द दू गो ओह टेबुल पर। कीमत बतावऽ....'

'दू सौ रूपया।'

प्रकाश बाबू अपना पॉकेट से दू सौ रूपया निकाल के देहलें आ ऊ दूगो मोती कागज में लपेट के टेबुल पर रख दिहलस। फेर ऊ बारी-बारी से दूनू बेकत के प्रणाम कइलस आ कमरा से बाहर निकल गइल। संशय के समुन्दर में एक बेर फेर ओह लोग के मन डूबे-उतराये लागल।

ओकरा गइला का बाद ऊ लोग मोतिन के गौर से देखल। बड़ा खूबसूरत लागल। विभा कहली - 'एकरा के अंगूठी में जड़वा के पहिरल जाई।'

जमशेदपुर वापस लवटला के एक दिन बाद ऊ लोग अंगूठी बनवावे, सोनार किहां गइल आ मोती देखावल।

मोती देखते ऊ बोलल - 'ई त असली जैविक मोती है। समुद्र तल के सीप में पावल जाला। केतना में खरीदले बानी ?'

'रउरे बताईं, एकर का कीमत हो सकत बा ?' प्रकाश जी के पुछला प ऊ वजन कके बतवलस - 'ई छव हजार से बेसिये के बा, असल कीमत जौहरी लोग बताई...।'

'हं, बहुत अच्छा से.....।' प्रकाश जी हकलात कहलें। 'चलीं, अब घरे चलल जाव.....।'

'अंगूठी ना बनी का ?'

'ना, ई धरोहर बनी।' कहत विभा खाड़ हो गइली, प्रकाश जी के उठवली आ दूनू बेकत घरे लवट आइल।

यात्रा से लवटला लगभग दू महीना हो चुकल बा। अभियो आत्म-मंथन के सिलसिला जारी बा। केहू से खुल के बात नइखे करत लोग। पता ना का सोचत बा लोग। एह लोग के आत्मीयता, उदारता, सुझाव आ निर्देश से ओकर जीवन शैली बदलल कि ना.... नइखे कहल जा सकता। बाकिर, एह लोग के सोच में बदलाव के जवन नया खिड़की खुलति बा, ओसे सूरूज के लाली साफ देखाई दे रहलि बा। ●●●

कुछ दोहा

❑ **उमेश कुमार पाठक 'रवि'**

पंचाइत-सरकार में, पद पर ठीकेदार।
बजट समूचा घोंटि के चमकावे हथियार।।

पंडित, मुल्ला, पादरी, बहुरुपिया, हतियार।
जतने ऊपर चढ़ि चलीं, ओतने भ्रष्टाचार।।

इरिखा-आन्हीं में उड़ल, खेत अउर खरिहान।
ईजत पर पेवन सटल, पहुंचल पंच जहान।।

संस्कृति के लतियाइ के परदेसियन से प्रीत।
देश-प्रेम बन्हकी धरत, धनबल से लऽ जीत।।

चीरहरन करि धरम के, प्रगतिवाद दीं नाँव।
सम्मानन का राह में धरीं शान से पाँव।।

●●●

नाटक

धर्मी

❑ चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह

झलक - एक **समय : धुँधलका** **जगह : गली**

कबि- (बंद गेट के पास आके) - मास्टर साहब बानी जी ?

....।

- 'बानी जी ?' - 'केहू नइखे का ?'

....।

राही- (आके) - प्रणाम !

कबि- प्रनाम !

राही- का बात बा ? इहँवा का देख रहल बानी?

कबि- मास्टर साहब से काम बा। देखीं ना। लोग भीतरे बा, बाकिर बोलत नइखे।

राही- जोर से आवाज दिहल जाय।

कबि- बाँसुरी से नगाड़ा के आवाज ना निकसे। अपना सके भर तऽ कइ एक बार पुकरनी हाँ।

(राही हँसत आ कवि के देखत बा)

काहे जी का भ गइल ?

राही- (हँसी रोकत) साँचे कहल गइल बा कि कवि लोग पागल होला।

कबि- कइसे ?

राही- (काल बेल के घंटी दबावत) अब देखीं कि लोग आवत बा कि ना।

कबि- ओह पर तऽ नजरे ना गइल रहे। लोग के आवाज आवत बा तऽ पिटला-पुकरला के आवाज काहे ना जात होई ?

राही- रउरा सांत गली में बानी। गर्मी के दिन बा, कूलर खोल के ऊ लोग बइठल-सूतल होई। टी०वी० पर कार्यक्रम देखत होई। आ अगर आवाज - जातो होई तब पीट के भाग जाए वाला कवनो लइका के हरकत बूझ के लोग कोसिस करत होई-पहचान पैदा करे के।

भीतर से- के हऽ जी ?

(राही मुस्कात चल जात बा)

कबि- हम ओझा जी। मास्टर साहब से काम रहे।

लइका- (किवाड़ खोल के) आइए। (कुर्सी के तरफ इसारा करत) बैठिए। देखता हूँ।

कवि आँगन में रखल कुर्सी पर बइठ जात बाड़न। लइका भीतरी दरवाजा से भीतर जाए लागत बा।

कबि- घरे नइखीं का ?

लइका- (रुकत, मुँड़ के देखत) 'कुछ देर पहले तो थे।'

कबि- देखऽ। ठीक तऽ ना कइल हा।

लइका- (सकुचात) हम तो कुछ नहीं किए हैं, आपका।

कबि- हमार तऽ ना, बाकिर आपन बिगड़लऽ हा, जवना के कुप्रभाव हमरो पर जरूर पड़ी। भोजपुरी हमनी के मातृ-भाषा हऽ। मदरटंग। मादरी जुबान। बे वजह-बेजरूरत खड़ी बोली बोली से, हमनी के, बहुत नुकसान भइल बा।

(लइका लजात चल जात बा।)

औरत- (आके) - प्रणाम !

कबि- प्रनाम !

औरत- उहाँ के नइखीं। बाजार गइल बानी। गइला देर भइला आवते होखब।

कबि- ठीक बा। आवे दीं।

औरत- चाय भेंजी ?

कबि- उहाँ के आ जाए दीं।

राही- (औरत भीतर चल जात बाड़ी। कवि जेब से कागज निकाल के, तह खोल के बेआवाज पढ़े

लागत बाड़न। बाहरी दरवाजा से मास्टरसाहब आवत बाड़न। उनका हाथ में बंडल बा। कवि कागज तहिया के जेब में रख देत बाड़न।)

कबि- (कुर्सी से उठत) प्रनाम !

मास्टर- (कुर्सी पर बइठत) प्रनाम। (बंडल नीचे रख देत बाड़न।)

मास्टर- का भइल ? देर से आइल बानी का ?

कबि- ना देर तऽ ना भइल।

मास्टर- चाय चलल हा ?

कबि- रउरे इंतजारी करत रहीं।

मास्टर- (बंडल के कवि के देखत देख के) एगो पुरान चेला बा। नया नया दूकान खोलले बा-गर्म कपड़ा के। उद्‌घाटन रहे। उहें चल गइल रहीं।

कबि- (बंडल उठा के खोल के देखत) दक्षिणा में मिलल हा ?

मास्टर- ना जी। बड़ी सस्ता बुझाइल हा तब खरीद लेनी हाँ। अउरी खरीदतीं बाकिर उद्‌घाटन के दिन उधार माँगल उचित ना बुझाइल हा।

कबि- दूगो बा ?

मास्टर- जी।

कबि- कतना कतना के हऽ ?

मास्टर- (जेब से निकाल के पुर्जा धरावत) दूनों साढ़े पाँच सइ के हऽ।

कबि- (रसीद ले के देखत) हमरो करिया कमरा के जरूरत बा। असकतिए खरिदात नइखे।

मास्टर- आज अधिक रात हो जाई। थाकलो बानी। काल्ह आईं। चल के खरीदवा देब। रउरे बहाने हमहूं अउरी खरीद लेब। केहू के अइला पर काम करीं।

कबि- ई सभ ना। हम करिअवा ले जाइबा रउवा इस्कूल से आवत समय दोसर ले लेब।

मास्टर- साँच पूछीं तऽ हम एके लेत रहीं। दोसरका ऊ जबरदस्ती दे देले रहे, पूजा-पाठ में काम आई, कह के। (कवि जेब में से निकाल-गीन के रूपया धरावत बाड़न। मास्टर ले के जब में रख लेत बाड़न।) बड़ी दिन पर अइनी हाँ। कइसे खेयाल आइल हा?

कबि- भोर-म-भोर मालूम भइल हा कि पटना से पत्रिका ले आइल बानी।

मास्टर- कइसे ?

कबि- भोर-भ्रमण से इंजिनियर साहब आइल रहीं।

मास्टर- खनन बालू ? काल्ह एक जगह कवि-गोष्ठी रहे। हमरो के बोलवले रहे लोग। ओसिजे भेंट भइल रहे। (उठ के जात) बइठीं ले आवत बानी। (जात-आवत आ कवि के हाथ में पत्रिका देके बइठ जात बाड़न।)

कबि- तब चलीं नूं ?

मास्टर- चाय बन गइल बा। आवते होई। पी लिहल जाय।

कबि- ना बनल होखे तब रोकवा दीं बाकिर ठंढा पानी पियवा दीं।

(पटाक्षेप)

झलक - दू | **समय : रात** | **जगह : सड़क**

(कवि आवत रिक्सा के रोकवावत बाड़न–हाथ के इसारा से।)

कबि- रोकऽ। रोक दऽ तऽ।

रिक्सावाला- का बात बा जी ?

कबि- खाली बा ? (मने मन) बेचारा बूढ़ बा। फाटल-पुरान, सीत से लड़े में असमर्थ, कपड़ा पहिरले बा। मइल-फाटल गमछा कान पर बन्हले बा। नंगे पाव बा। एकरा रिक्सा पर चढ़ल एकरा के जिबह कइल बा। कसहूं मजबूरी में होई तबे नू सीतलहरी में रिक्सा चला रहल बा..... कतना देर से बानी। कवनो दोसर रिक्सो तऽ ना आइल हा। एकरा के छोड़ला पर ना

जाने कब रिक्सा मिली। हमरे अस सोच-बिचार के दोसरो केहू एकरा रिक्सा पर ना बइठीं तब एकरा रिक्सा निकालला के मतलब कइसे पूरी ?

रिक्सावाला- का सोचे लगनी ? चलब कि ना ?

कबि- पकड़ी चलबऽ ?

रिक्सावाला- काहे ना चलब ?

कबि- का लेबऽ ?

रिक्सावाला- रउरे उचित समझ-बूझ के दे देब।

कबि- पूँजीवादी समाज में उचित कुछ ना होखे। ई उचित बूझत बाड़न कि आदमी गदहा-घोड़ा के काम करे ?।

रिक्सावाला- ;चुपचाप मुँह ताकत बा।द्ध

कबि- ई दुनिया बाजार हऽ। इहँवा खरीद-बिक्री होला। खरीद-बेंच में मोल-भाव होला। ना हम बले जाइब ना तूं बले छीन के अधिक ले लेब।

रिक्सावाला- हम कुछ कहत बानी ?

कबि- ना कुछ नइख कहत बाकिर कहऽ।

रिक्सावाला- रउआ कतो बहरी से नइखीं आइल कि भाड़ा नइखीं जानत। रउआ देब हम ना लेब तब नूं।

कबि- ना। हम बिना तय कइले ना चढीं। तूं आपन भाड़ा कहऽ।

रिक्सावाला- चलीं। आठ रूपया दे देब।

कबि- (चढ़ के बइठत) ठीक बा चलऽ। कमरा के बंडल पैर के पास रख देता बाड़न।(मनेमन) उतरत खा ध्यान ना रही तब छूट जाई। (जाँघी पर, उठा के, बंडल रख लेत बाड़न।) कवन दूर जाए के बा। अतना समय लागी कि भुला जाइब ? (पैर के पास बंडल रख देत बाड़न।) नीचहीं रहे देत बानी।..... ठीक बा ध्यान रखिहऽ।

(रिक्सा चल देत बा।)

(पटाक्षेप)

झलक - तीन **समय : रात** **जगह : सड़क**

कबि- (सड़क के बगल में सब्जी-दोकान देखि के) रिकसा.....!

रिक्सावाला- का भइल जी ? कुछ गिर गइल का?

कबि- ना। बगल के सब्जी-दोकान से बड़ पपिता ले लेत बानी। (रिक्सा रुकत बा। कवि रिक्सा से ऊतर के दो कान तरफ बढ़त बाड़न।) (मनेमन) रिक्सावाला भाग मत जाय। दोकान दूरनइखे। रिक्से पर नजर रही। (कवि दोकान तक जाके - आके रिक्सा पर बइठ जात बाड़न)

रिक्सावाला- चलीं ?

कबि- हँ, चलऽ। बड़ी महँगा देत बा। डेरा तरफ एह से सस्ता मिलेला। (रिक्सा चल देत बा।)

(पटाक्षेप)

झलक - चार **समय : रात** **जगह : सड़क**

कबि- (रिक्सा वाला के पीठ छूवत)। रोक दऽ तऽ।

रिक्सावाला- कहत रहीं कि ''पकड़ी'' जाइब ?

कबि- रोकऽ। रोक ना। (रिक्सा रूक जात बा। कवि जेब से निकाल के रूपया देत बाड़न।)

रिक्सावाला- (दस के नोट ले के) दू रूपया तऽ नइखे। रउआ पास छुटा नइखे ?

कबि- रहित तब नोट तुरवइतीं। जानत नइखऽ कि माथा फूट के जूट जाला बाकिर नोट फूट के ना जूटे।

रिक्सावाला- (रिक्सा पर से उतर के विनवत) दया करीं। छोड़ दीं। बहुत ठंढा बा। एक रूपया चाय पी लेब।

कबि- अच्छा जा। तोहरा के रोकल ठीक ना होई। घर पासे में बा। अकेले बानी। अब

खाना बनावल ना सपरी। दोकाने से लिट्टी बंधवा लेब। दोकान तरफ, कवि, चल देत बाड़न।

रिक्सावाला- (रिक्सा के पैंडिल पर पांव धरते बंडल देख के चिहुँकत) (मनेमन) बुझात बा कि बंडल भुला के चल गइले। उहाँ के भुलाइल हमरा खातिर दैवी बरदान बा। जाड़ा में बहुत कष्ट होत रहल हा।.... ना। अइसन सोचल गलत बा। गैर के दौलत के माटी समझे के चाहीं। गरीब के पास खाली ईमाने नू रहेला। ओकरे परीक्षा के समय आ गइल बा। जा। जाके लौटा दऽ।.... कहँवा खोजे जाइब ? सीतलहरी से हाथ-गोड़ बर्फ हो रहल बा। जानतो नइखीं कि कहँवा गइनी।.... कुछ देर इहँवे रूकत बानी। इआद पड़ी तऽ जरूर अइहें।

(कबि आवत बाड़न। रिक्सा तरफ ताकतो नइखन चुपचाप बढ़ल चल जात बाड़न।)

कबि- (मूँड़ी घुमा के) का हो ? अब का हो गइल ?

रिक्सावाला- हई बंडलवा ना ले जाइब ? राउरे नू ह?

कबि- (चिहात, माथा ठोंकत, आके रिक्सा पर बइठत) चलऽ। अब तक ना गइल तब नजदीके मकान बा। चलऽ छोड़ दऽ।

रिक्सावाला- (रिक्सा बढ़ावत) चलीं। रउआ तऽ हमरा के निठारू धर्म संकट में डाल देले रहीं। हमरा जगह पर कवनो दोसर रहित तब ?

कबि- गाएब रहित। बाकिर जानत बाड़ऽ ?

रिक्सावाला- का ?

कबि- तहरे अस धर्मी लोगिन के चलते ई दुनिया अब ले बाँचल बिया ना तऽ कबे के प्रलय हो गइल रहित।

(पटाक्षेप)

●●●

सांस्कृतिक समाचार

बक्सर में भोजपुरी सम्मेलन

२६ फरवरी २०१२ के बक्सर भू० ब्रा० इण्टर कालेज, बक्सर का हाल में विश्वभोजपुरी सम्मेलन बक्सर इकाई के अधिवेशन भइल। पहिला सत्र भोजपुरी भाषा साहित्य के विकास आ प्रचार प्रसार पर गोष्ठी के अध्यक्षता आरा इकाई के अध्यक्ष श्री जग. न्नाथ मिश्र जी कइलीं। भोजपुरी अस्मिता के रक्षा क आवाहन करत कहलीं कि भोजपुरी के आठवीं अनुसूची में दर्ज करावे खातिर संसद के सामने धरना प्रदर्शन कइल जाई। दूसरका सत्र कवि सम्मेलन के अध्यक्षता शिव बहादुर पाण्डेय 'प्रीतम जी' कइलन। रामेश्वर प्रसाद वर्मा का संचालन में ओम प्रकाश केशरी, रामजी पाण्डेय 'अकेला', भगवान पाण्डेय 'निरास', रामेश्वर मिश्र 'बिहान',दीप नारायण 'दीप', धन्नू लाल, रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष' महेश्वर ओझा, ललित बिहारी मिश्र, उमेश पाठक रवि, अतुल मोहन प्रसाद, अरूण मोहन भारवि, धनन्जय गुडाकेश आदि कवि लोग काव्य पाठ कइल। ●●●

Anjoria.com
पहिलका भोजपुरी वेबसाइट

सांस्कृतिक रपट

''मुम्बई 'रोटरी क्लब' आ विश्वविद्यालयीय परिसर में आयोजित भोजपुरी गीत-संध्या आ काव्य गोष्ठी के सनेस

❑ सुश्री आकांक्षा

०२ फरवरी २०१२ के मराठी आ हिन्दी भाषी छात्रन खातिर मुम्बई विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग ''भौतिकी-हाल'' में एगो भोजपुरी काव्य गोष्ठी के आयोजन कइलस। आज के समय में भोजपुरी कविता के कथ्य, शिल्प, संवेदनीयता आ भाषा-सामरथ के साक्षात्कार करावे खातिर, तीन गो भोजपुरी कवि डा० प्रकाश उदय, डा० अशोक द्विवेदी आ डा० कमलेश राय आमंत्रित रहे लोग। दू घंटा तक, विभागीय प्रोफेसर, छात्र-छात्रा आ विश्वविद्यालयी-परिवार के लोग भोजपुरी कविता के भाव भंगिमा, आ कथ्य के सुनलस आ महसूस कइलस।

कविता में अगर जन जीवन के सुभाविक राग रंग, समय के सांच, उल्लास, उछाह, पीर के संवेदना आ गहिर अनुभूति होखे त ऊ सुने वालन पर खुदे असर क देले, भोजपुरी भाषा के त अलगे बात बा। ऊ अपना लालित्य, तेवर आ वक्रता खातिर जानल जाले। कुल मिला के भोजपुरी साहित्य खातिर अइसन-स्वस्थ आयोजना शुभ आ सराहनीय बा। हृदयेश मयंक (कवि), हिन्दीं विभागाध्यक्ष डा० रतन कुमार पान्डेय, डा० करूणा शंकर, डा० सत्यदेव त्रिपाठी के साथ-साथ विश्व भोजपुरी सम्मेलन के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सतीश त्रिपाठी के, मुम्बई महानगरी में अइसन सरस आ प्रभावपूर्ण आयोजन करे करावे खातिर साधुवाद! ●●●

मुम्बई, मराठी भाषा-संस्कृति के अइसन खुला महानगर हऽ, जहाँ देश के कई भाषा-संस्कृतियन आ कला के निखरे के सुअवसर मिलेला। हम भोजपुरी सिनेमा आ गीत गवनई के बात नइखीं करत, ना एकर कि उहाँ लाखन भोजपुरिया लोगन के रोजी-रोटी बा आ ऊ लोग मुम्बइया-तौर तरीका में जिये आ मउज करे के टाइम निकाल लेला । हम बात कइल चाहऽ तानी ओह मन मिजाज के, जेके आपन गाँव, आपन माटी इयाद बा आ जेके अपना भाषा में लिखल गइल साहित्य का प्रति अनुराग आ गर्व बा। कुछ अइसने लोगन का प्रेरना आ 'सेतु न्यास', रोटरी क्लब, आ मुम्बई विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग का सहयोग से ०१ फरवरी २०१२ के साँझि 'रोटरी क्लब' में आ ०२ फरवरी २०१२ के विश्वविद्यालय-परिसर में भोजपुरी 'गीत संध्या' आ '' काव्य गोष्ठी'' के आयोजन भइल।

मुम्बई के आधुनिक आ आभिजात्य रोटरी क्लब के हाल सुधी-सहृदय-परिवारन का साथ उत्कृष्ट आ जिज्ञासु श्रोता लोगन से भरल पुरल रहे। मारीशस से आइल डा० सरिता बुद्धू के, भोजुपरी भाषा व्याकरन'' पर लिखल गइल दू गो किताबन का लोकार्पन का बाद गीत-संध्या में भोजपुरी के तीन गो प्रतिनिधि कवियन (डा० अशोक द्विवेदी, डा० कमलेश राय आ डा० प्रकाश उदय) के काव्य पाठ भइल। डा० सत्यदेव त्रिपाठी के सरस संचालन में, क्रमशः कवि लोग दस-बारह गो गीत सुनावल। सुनावल का, ई समझीं कि श्रोता-वर्ग के भाव-विभोर आ रससिक्त क दिहलस। मराठी, हिन्दी आ भोजपुरी के लोगन के भोजपुरी कविता के सुगंध, सुघराई, लय-धुन, चित्र-विधान आ संवेदनीयता के ई साक्षात्कार बहुत दिन ले इयाद रही।

कुछ नया प्रकाशन

१. 'मेघदूत के गीत' - (मेघदूत के भोजपुरी काव्यानुवाद), डा० अवधेश प्रधान, मूल्य-१५०रू सजिल्द सेवक प्रकाशन, वाराणसी

२. 'फगुवा के पहरा' - (भोजपुरी काव्य संग्रह), डा० रामरक्षा मिश्र 'विमल', मूल्य-२१० रू सजिल्द कला प्रकाशन, वाराणसी

सांस्कृतिक रपट

बलिया में भइल एगो यादगार साहित्यिक समारोह

[विश्व भोजपुरी सम्मेलन, बलिया इकाई के पँचवाँ अधिवेशन का समय भइल दू–सत्री साहित्यिक कार्यक्रमन पर एगो जियतार रपट]

❑ हीरा लाल 'हीरा'

विश्व भोजपुरी सम्मेलन के सबसे पहिले गठित बलिया इकाई के टाउन हाल, बलिया में आयोजित पाँचवा अधिवेशन भोजपुरिहा लोगन खातिर एह माने में यादगार रही कि ओमें भोजपुरी भाषा-साहित्य लोक कला आ संस्कृति से जुड़ल लोगन के एगो सरस गंभीर आ विवेकपूर्ण जुटान, भोजपुरी खातिर जिये-मुवे आ काम करे वाला लोगन के एगो नया वैचारिक गर्मी दिहला का साथे, अइसन भाव-भूमि खड़ा कइलसि जवना में कहीं से शाब्दिक लफ्फाजी आ झुठिया आक्रोश ना झलकल। भोजपुरी रचनाधर्मिता आ क्रियाशीलता से उत्कृष्ट के सनेस वाला पहिला सत्र जइसन गरिमामय आ गम्भीर रहे, दुसरका सत्र ओइसहीं स्तरीय, सरस, मर्मस्पर्शी आ मन-आँतर के छुवे वाला रहे। ओसे इहे सनेस मिलल कि अइसनका कवनो कार्यक्रम एकता सहयोग आ समर्पणे से सुघर आ यादगार बनेला।

सम्मेलन के अधिवेशन टाउन हाल, बलिया के नवका बनल सभागार में आधा घंटा देर यानी बारह बजे शुरू भइल। बलिया इकाई के अध्यक्ष श्री शम्भुनाथ उपाध्याय, संरक्षक डॉ० अशोक द्विवेदी, विशिष्ट अतिथि डॉ० (श्रीमती) प्रेमशीला शुक्ल आ मुख्य अतिथि डॉ अरुणेश नीरन आ हिन्दी प्रचारिणी सभा, बलिया के अध्यक्ष डॉ० रघुवंशमणि पाठक का साथे माँ सरस्वती के चित्र पर माला पहिरवला आ दिया जरवला के बाद भोजपुरी के देस गान लोकगायक ओमप्रकाश का सुर में गूँज उठल..... "सुन्दर सुभूमि भइया भारत के देसवा से, मोरे प्रान बसे हिमखोह रे बटोहिया।" फेरू स्वागत गीत का

१८ मार्च २०१२ दिन रविवार के टाउनहाल बलिया में ११:०० बजे बलिया के हिन्दी-भोजपुरी कवि लेखकन का साथे हिन्दी के वरिष्ठ साहित्यकार लोग बाहर से बोलावल गइल अपना मुख्य अतिथि (डॉ. अरुणेश नीरन), विशिष्ट अतिथि (डॉ० श्रीमती प्रेमशीला शुक्ला) आ भोजपुरी के जानल-मानल लेखक कवि डॉ० प्रकाश उदय, विष्णुदेव तिवारी, गिरिधर करुण, डॉ० कमलेश राय, दयाशंकर तिवारी, भालचन्द्र त्रिपाठी, मिथिलेश गहमरी, रामानन्द रंमन, कुबेर नाथ मिश्र विचित्र, आनन्द संधिदूत आदि लोगन के अगवानी जवना अपनापा से कइल, बाद विश्व भोजपुरी सम्मेलन के राष्ट्रीय आयोजन सचिव डॉ० अशोक द्विवेदी ईकाई अध्यक्ष शंभुनाथ उपाध्याय आ राजगुप्त मिलि के मुख्य अतिथि आ विशिष्ट अतिथि के शाल ओढ़ाके माला-फूल नारियल से सम्मानित कइला। फेरू मुख्य अतिथि डॉ अरुणेश नीरन, भोजपुरी खातिर विशेष प्रयास आ सहयोग करे वाला साहित्यकार डॉ० शत्रुघ्न पाण्डेय के अंगवस्त्रम आ श्रीफल, माला से सम्मानित कइलन। डॉ० अशोक द्विवेदी सम्मेलन के उपलधियन के गिनावत मंच पर विराजमान विद्वान अतिथियन के सार संक्षेप परिचय करवलनि आ बलिया इकाई के सचिव

मंडल का ओर से श्री हीरालाल 'हीरा' सालाना प्रतिवेदन पढ़त अन्त में एगो मार्मिक अपील कइलन कि हमनी के अपना भाषा का दिसाईं सावधान आ सचेत होके कम से कम ओकरा सम्मान खातिर खुलि के आगा आवे के चाहीं।

पहिला सत्र में विचार गोष्ठी के विषय "भोजपुरी भाषा साहित्य के वर्तमान स्थिति" पर विष्णुदेव तिवारी के बेबाक आ सारगर्भित आलेख पाठ भइला का बाद मऊ से आइल डॉ० कमलेश राय भोजपुरी भाषा के सामरथ आ सीमा क चर्चा करत एगो सवाल उठवलन कि साहित्य अकादमी के एगो पदाधिकारी भोजपुरी साहित्य के सशक्त आ समृद्ध भइला पर शंका काँहे कइल जाता ? एही क्रम में डॉ० प्रकाश उदय कहलन कि अन्य भाषा के समान्तर भोजपुरी में अब नया लिखे पढ़े वालन में कमीं आइल बा। साथे साथ भोजपुरी के प्रकाशन आ प्रोजेक्शन कम बा।

डॉ० रघुवंशमणि पाठक भोजपुरी के हिन्दी के ताकत बतावत कहलन कि ब्रजी, मैथिली, अवधी, आ भोजपुरी हिन्दी के शक्ति आ सामरथ देबे वाली भाषा हई स। लोकभाषा कवि कबीर, विद्यापति, सूर, तुलसी हिन्दी के वैभव हवे लोग। एह लोग के बिना हिन्दी के कल्पना ना कइल जा सकेला। विशिष्ट अतिथि डॉ (श्रीमती) प्रेमशीला शुक्ला भोजपुरी के जीवन शैली आ परंपरा के विवेचन करत कहली कि भोजपुरी क्षेत्र के मूल देवी देवता शिव (महादेव) आ गउरा पार्वती ह लोग। गौरी शिव के प्रकृति हई। हमनी के बचपन से एही लोग के पूजन कइके आगे बढ़नी जा। बाकिर आज अपना मूल प्रकृति के छोड़ि के हमनी का विश्व प्रकृति अपनावे का फेर में आपन पहिचान खो रहल बानी जा।

समारोह के मुख्य अतिथि का रूप में डॉ० अरुणेश नीरन सभा के सम्बोधित करत लहलन कि संविधान के आठवीं अनुसूची में भोजपुरी के मान्यता ना मिलला के मतलब ई ना ह कि ऊ कवनो कमजोर भाषा ह। 'भोजपुरी' कबीर के भाषा, जनता के भाषा ह। जनभाषा कबो शासन के भाषा ना बनेले। राज सत्ता जन भाषा के राज भाषा के दर्जा ना देले। फेर भोजपुरी त लोक भाषा ह। संवेदना आ प्रतिरोध के भाषा ह। संघर्ष का विद्रोह के भाषा भइलो पर भोजपुरी के विरोध कवनो दोसरा भाषा से नइखे। कुछ हिंदी के लोग जरूर एकरा मान्यता के विरोध करत होई। एकरा खातिर चिन्तित भइला के जरूरत नइखे। भोजपुरिहा ना दीन ह ना पलायनवादी। संसार के एकइस देसन में एके बोले वाला लोग बाटे। एके केहू ना रोक पाई। भोजपुरी में काम करे वाला लेखक, कवि, कलाकार लोग के पूरा निष्ठा से आपन उत्कृष्ट उतजोग करे के चाहीं। समय ओकर मूल्यांकन करी।

अन्त में डॉ० शम्भुनाथ उपाध्याय अपना संबोधन में मुख्य अतिथि सहित समस्त लोगन के प्रति सम्मेलन के ओरि से आभार आ कृतज्ञता प्रकट कइलन। शुरू से अन्त तक अपना मीठ, गरिमा भरल संबोधन का जरिये एह कार्यक्रम के सुघर संचालन श्री के० के० सिन्हा कइलन।

नव संवत् चइत के एगो यादगार साँझि

[सम्मेलन का अधिवेशन के दुसरका सत्र : लोक गायन आ गीत–गोष्ठी]

रस, रंग, राग के संगे, गुलाल छिरकत फागुन लवटि गइल। अमराई में मद-बरिसावत मोजरि दनाये लगली स। कटहर लेंढ़ा से, गोटाए का बीचे अपना मातल गंध से बोरे लगलन स। सहजन का डारी लटकल हरियर हरियर सुतरी गोटाए-मोटाए लगली स। महुवा हिया खोलि के झरे-टपके लागल। अनाज से भरल खेतन में अन्ना-गंध आवे लागल। सँचहूँ चइत आ गइल। चइत महीना के जबाव नइखे। नया साल नया उमेद नया सपना के एह खुशगवार मौसम में कवनो साँझि अगर कविता आ गीत के राग-रंग माधुरी से भरल होखे त फेर का पूछे के ?

अइसन नीमन मौसम में, जहाँ देस में राजनीतिक उथल-पुथल बा आ मँहगाई बढ़ावे वाला बजट के गहमा-गहमी बा, अइसना में समकालीन भोजपुरी कविता के नया ठाट, नया शिल्प आ मन के छूवे आ झझोरे वाला नया कथ्य से लोगन के साक्षात्कार करेके मोका मिलल। टाउन हाल, बलिया में विश्व भोजपुरी सम्मेलन संस्थान, बलिया इकाई के तरफ से आयोजित काव्य संध्या में इहाँ के लोगन के भोजपुरी कविता के सृजनशीलता आ संवेदना के सवाद राष्ट्रीय स्तर के जानल मानल कवियन से मिलल।

शिवजी पाण्डेय 'रसराज' के सरस्वती वंदना का बाद डॉ० अशोक द्विवेदी के मौसमी गीत चइत के लोकराग में बन्हल गीत से लोग सराबोर हो गइल - 'गरमी के तिखर

किरिनिया/मड़इया मोरी झांझर लागे। दँवकेले पातर छन्हिया/ मड़इया मोरी फांफर लागे।' के लोग खूब सराहल। गाजीपुर से आइल ग़ज़लकार मिथिलेश 'गहमरी' के ग़ज़ल के श़ेर पर खूबे वाहवाही मिलल - 'मधुबन भइल बेहाल बा, हम कइसें चुप रहीं, पतझर उड़त गुलाल बा, हम कइसे चुप रहीं।' वैचारिक भावभूमि पर परोसल गइल आजमगढ़ के कवि भालचन्द त्रिपाठी के गीत 'दुख के रतिया में सुख के बिहान मंगली, हम कहाँ तोहसे सुरुज आ चान मंगली' ढेर दिन तक लोगन के याद रही। वाराणसी से आइल डॉ० प्रकाश उदय के साधारण आ सीधा बाकिर कटाक्ष से भरल कविता - 'कभी घने पर घना, कबो मुठी भर चना, कबो ऊहो मना। तबो पूछे जो केहू कि का हाल-चाल ? चकाचक, ठीक ठाक कहीं, ठीके-ठाक' से लोगन के खूब गुदगुदवलसि। शशिप्रेमदेव के गज़ल - 'आम आदमी कहवाँ जाई ए भाई, आगा कुइंयां, पाछा खाई ए भाई' पर श्रोता लोग खूबे ताली बजावल। मऊ से आइल डॉ० कमलेश राय त 'नाहीं ओकरा जुरे झिंगुलिया, ना पांवें पैजनिया ओकरा खातिर दूध कटोरा। चंदा मामा दूर के।' सुनाके मजदूर के बेटा के जियतार छवि उभरलन त दयाशंकर तिवारी, सामयिक गीत 'बउरलि अमवा के डरिया प' फर लागे। चानी अइसन चइतवा सुघर लागे।' सुनाके सबके भावविभोर क दिहलन। चइत के फसल के उपलब्धि पर शंभुनाथ उपाध्याय के गीत 'मगन किसान बाड़े, हासिल निहारी' खूब सराहल गइल। देवरिया से गिरिधर 'करुण', रामानन्द 'रमन', बक्सर से विष्णुदेव तिवारी आ एकरा संगे हीरालाल 'हीरा', कन्हैया पाण्डेय, विजय मिश्र अउरी अनन्त प्रसाद 'रामभरोसे' आदि कवियन के कविता के लोग आनन्द उठावल। काव्य- संध्या के अध्यक्षता करत वयोवृद्ध कवि श्री कुबेर नाथ मिश्र 'विचित्र' जी के विविध रंग आ स्वर वाली कविता के श्रोतागण लुत्फ उठवलन। एह सरस कावय संध्या के संचालन डॉ० कमलेश राय कइलन। काव्य संध्या के शुरुआत स्थानीय कविगण सर्वश्री विजय मिश्र, कन्हैया पाण्डेय, अनन्त प्रसाद 'रामभरोसे', डॉ० अशोक द्विवेदी, संस्था अध्यक्ष शम्भुनाथ उपाध्याय, जनार्दन चतुर्वेदी आदि बाहर से आइल कवि लोगन के माला पहिरा के स्वागत कइल।

●●●

राउर–पन्ना/राउर चिट्ठी

पाती' क सितंबर' ११ वाला अंक ६१ जतने ऊपर से, ओतने भीतर से अच्छा लागल। वर्तमान लोकतंत्र का दायरा में रहि के, कवनो नया लोकतंत्र के सपना भा कल्पना पानी पर लाठी पिटला नियर बा। १५ अगस्त १६४७ के भारत 'स्वतंत्र' भइल रहे। भारत के राजनैतिक स्वतंत्रता आर्थिक गुलामी का पत्तल पर परोसल गइल रहे। खुद अंग्रेज एके स्वतंत्रता ना कहि के, 'ट्रांसफर ऑफ पावर' कहले रहलनस। ई ट्रान्सफर ऑफ पावर अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति रुजवेल्ट का निर्देश पर भइल रहे। रुजवेल्ट, इंगलैण्ड के निर्देश देले रहलन कि कौनो हालत में ३१ दिसम्बर १६४७ से पहिले, भारत में 'ट्रान्सफर ऑफ पावर' हो जाये के चाहीं। बाद में एही तर्ज पर अफ्रीका आ एशिया के सैकड़न गो देश 'स्वतंत्र' कहाये लगलन स। जहां स्वतंत्रता खातिर कवनो सुमगुम तक ना रहल। एह सच्चाई के १६४७ से लेके आज तक केहू हँकड़ि के कहे का स्थिति में नइखे, कारन कि एह 'स्वतंत्रता' से सब लाभ में बा। भ्रष्टचार कहाँ नइखे? का पत्र-पत्रिका, आ साहित्य संस्था में नइखे ? एके रोके के नैतिकता सब खो चुकल बा। खुद अन्ना हजारे भ्रष्टाचार पर त 'सिंह गर्जना' कइलन, लेकिन भ्रष्टाचार के जरि में उतरि के विदेशी ऋण आ अनुदान पर एक शब्द ना बोललन। का ई सच नइखे कि पूरी तीसरी दुनिया में विदेशी ऋण आ अनुदान का कारण, जवन तथाकथित विकास भइल भ्रष्टाचार आ कालाधन ओही से बनल। विदेशी ऋण के हालत ई बा कि आज गर्भस्थ शिशु तक हजारन-लाखन रुपिया का ऋण में दबल बा। महात्मा गांधी विदेशी ऋण आ अनुदान के विरोधी रहलन। .... आप के अग्रलेख पढ़के मन में विचार के भभका उठल ह, जवन टाँक देलीं हँऽ।

प्रगत द्विवेदी के रपट बड़ा ताजा आ जीवन्त बा। शिलीमुख के 'लोककथा' पर लेख सोचे के बड़हन आकाश मांगत बा। ई एगो अचरज भरल सच बा कि रूस का लोककहनी में आ भोजपुरी का कहनी में किंचित अन्तर का साथ अद्भुत समानता बा। शम्भुनाथ उपाध्याय के कहानी रचनात्मक समाज के स्थापना करति बा। विष्णुदेव तिवारी के कहानी, ऋचा के लघुकथा', सुरेश कांटक के नाटक पत्रिका के समृद्ध करत बा।.... एगो खूबसूरत आयोजन खातिर आपके एकबेर फेर बधाई !

❑ **आनन्द संधिदूत, वासलीगंज, मिर्जापुर (उ0प्र0)**

राउर–पन्ना/राउर चिट्‌ठी

पिछला आकार में पाती स्तरीयता के मिसाल रहे आ संग्रह का लेहाज से जोगवे लायक। हमरा समझ से खूब बढ़िया रहे। नया आकार कबले भइल ? काहें भइल ? ई नइखे मालूम बाकिर ई अंक लोकलुभावन बा। रचना आ सामग्री का स्तरीयता का नजर से ई अंक कुछ ओनइस बुझाता।

अंक ६१ में आनंद संधिदूत के 'शंख बाजे बलाय भागे', हीरालाल 'हीरा' के सात दोहा, शिलीमुख के 'लोक के कथा - लोककथा', शम्भूनाथ उपाध्याय के कहानी 'आखिरी बेरा के संघाती', आ शिवपूजन लाल विद्यार्थी के गीत 'धरती के हँसत सिंगार' नीक लागल। सम्पादकीय प्रासंगिक आ समसामयिक बा। विष्णुदेव तिवारी के भाषा में कसाव, स्तरीयता आ औपन्यासिक सूझ-बूझ के सुखद दर्शन होता।

❑ **उमेश कुमार पाठक 'रवि' चरित्रवन, बक्सर (बिहार)**

पाती' के अंक ६१-६२ मिलल। पत्रिका जइसन बाहर से सजल-धजल लउकल ओइसने भीतरों से आकर्षक रहल। पठनीय सामग्रियन के एगो गुलदस्ता नीयर सजावल कुशल सम्पादन के परिचायक रहल। हमार पन्नाा 'नया लोकतंत्र के सपना' में वर्तमान लोकतंत्र के बखिया उधेड़ल मन के झकझोर के रख दिहलस, एह पन्ना के लाइन 'आवाज उठा-उठा के थाकल, पिटाइल-खदेड़ल लोग निराश काहें ना होई' आज के किंकर्त्तव्यविमूढ़ जनता के मनोदशा के यथार्थ चित्र प्रस्तुत क रहल बा। कहानी 'कायर' कथ्य आ शिल्प के उत्तम समायोजन करत समाज के एगो संदेश दे रहल बा। श्री शिवपूजन लाल विद्यार्थी आ डॉ० हजारी लाल गुप्त के कविता मन के छूवत बाड़िन स। वइसे त कवनो लेख, कहानी, व्यंग्य रिपोर्ताज भा कविता एक से बढ़ के एक बाड़न स। कुल मिला के ई अंक प्रत्येक दृष्टिकोण से सराहे लायक बा।

ई हमार दुर्भाग्य बा कि बलिये में रहि के अइसन सुन्दर पत्रिका के कुल्ही अंक लगातार देख ना पाईला। अब हमार प्रयास रही कि अपना दुर्भाग्य के सौभाग्य में बदल दीं।

❑ **भोला प्रसाद 'आग्नेय' रघुनाथपुरी, बलिया**

पाती' के अंक ६० मिलल। सामग्री चयन संतुलित बा। कूल्हि आलेख आ कविता स्तरीय। कृष्ण कुमार के कहानी समाज में पइसल अनाचार के दस्तावेज बा त कृष्णानंद जी के कहानी समाज "भैरो ब्रह्म" एगो अजबे जुगुप्सा मिश्रित करुणा के उद्‌घोष करता बा। अंक के कवि 'जुगानी' जी के त कुछ कहहीं के नइखे। अंक ६१ अभी देखे के ना मिलल। अमेद बा ऊहो सुन्दर अंक होई। ❑ **गंगा प्रसाद 'अरुण' 21, बी, रोड –1, बिरसानगर, ढेल्को, जमशेदपुर–4 (झारखंड)**

पाती' का सितं० ११ वाला अंक देख सुखद आश्चर्य हुआ कि साहित्यिक पत्रिका के रुप में विख्यात भोजपुरी पत्रिका सचमुच अपने समय, समाज और लोक-सरोकारों से जुड़ी हुई है। भोजपुरी क्षेत्र और भाषा की पत्रिका का यह अंक अगस्त में देश को जगाने और मथने वाले मुद्दे को समेटकर, वैचारिक आधार पर इस भाषा के राष्ट्रीय सामर्थ्य को उद्‌घाटित किया है। 'सुराज और लोकतंत्र' पर यह आयोजन 'पाती' की दृष्टि और सोच प्रभावपूर्ण है। प्रकाशित गीत मन को छूने वाले हैं, कहानियाँ, शिल्प और कथ्य से प्रभाव छोड़ती हैं और आलेख सामयिक और प्रासंगिक हैं। 'लोककथा' जैसे विषय को विस्तार चाहिए। आपका प्रयास सराहनीय है।

❑ **विपिन वर्मा सनसिटी पोर्ट रोड, भोपाल (म0प्र0)**

पाती' के नया अंक आवरण, काया हर रूप में बदल गइल बाकिर ओकर मूल आत्मा ओइसहीं बा, बल्कि अउर प्रकाशमान। आज के एह कठिन दौर में 'पत्रिका' ऊहो भोजपुरी के आ अतना दमखम से निकालल बड़ा जोखिम के काम बा। रउवा मिशन आ अनवरत प्रयास के प्रनाम ! आवे वाला समय एह परिश्रम आ साधना के एक दिन आकलन जरूर करी एकर विश्वास बा।

❑ **महेश्वर शास्त्री अँधेरी पूर्व, मुम्बई (महाराष्ट्र)**

राउर–पन्ना/राउर चिट्ठी

पाती', अंक-६० 'पाती' के मुखपृष्ठ सोहावन आ मनभावन बा। सोहावन पल्लो में इंगुरिया आम आ ओह पर गिरल टटका रसबुनिया जहाँ करेजा के ठंढक पहुँचावतिया ओहिजे मन के बगइचो में लेले जातिया। बहुत नीमन। सचमुच माटी के रंग माटी के संग। अशोक द्विवेदी के दूनो गीत बरबस जुबान पर आ जातारे सन्। डॉ० सुभाष राय के 'दरद के पेवन' कविता प्रभावित कइलसि। कृष्ण कुमार के कहानी 'घनघोर अन्हरिया' दिल के छुअतिया आ सोचे के मजबूर करऽतिया। एहमें आस्था आ अंधविश्वास के संघर्ष साफ-साफ लउकऽता। कृष्णानंद कृष्ण के कहानी 'भैरो ब्रह्म' गाँव में जहाँ मोछि के ताव आ शान के दृश्यांकन में समर्थ बिया ओहिजे गाँवन में पसरल कुत्सित राजनीति के परदाफाश करऽतिया। हमरा नाम में विमल का जगहा 'विमल' अखरल। नाम के मौलिके रूप में राखल जाव कृपा होई।

पाती', अंक-६१ स्वाधीनता आ लोकतंत्र के केन्द्र में रखके तैयार मुखपृष्ठ 'पाती' के सामयिक व्यावसायिक पत्रिकन के प्रतिस्पर्द्धा में जरूर ले गइल बा बाकिर अंदर के सामग्री पर्याप्त नइखे लागत। संपादकीय पत्रिका के जान बा। अशोक द्विवेदी के गीत एहू अंक में प्रभावित कइलस। जगदीश ओझा सुंदर के दूनो गीत सचमुच भोजपुरी साहितय के थाती बा। विष्णुदेव तिवारी के कहानी 'कायर' पढ़े के जिज्ञासा खतम होखेके नाँवे नइखे लेत। एके अंक में पूरा कहानी रहित त ज्यादा प्रभावित करित। शिवपूजन लाल 'विद्यार्थी' के दूनो बरखा गीत बहुत नीक लगले सऽ। सुरेश कांटक के एकांकी 'तारनहार' प्रभावित कइलस। कसौटी के समीक्षन से अंक के स्तर अउर बढ़ि गइल बा।

■ **रामरक्षा मिश्र 'विमल'**, द्वारा बी०एन० विश्वास, उत्तरायन, पो० बंगाल एनमेल,
२४ परगना (नार्थ)- ७४३१२२ (पं०बंगाल)

बसन्त-फागुन के हरियाली में खुशहाली के संदेश देत भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका 'पाती' अंक-६२-६३ पढ़नी। संपादकीय में रउआ द्वारा उठावल मुद्दा 'भ्रष्टाचार' पऽ राजनीति आ लोकतंत्र के 'लोकपाल' ज्वलन्त सामयिक आ उत्कृष्ट लागल। ''भ्रष्टाचार अतना पुरान आ जबर्दस्त 'वायरस' बा कि ई मुइयो के जी जाई...।'' रउआ सम्पादकीय के ई पंक्ति बहुते काबिले तारीफ बा। जवन मन के छू के दिल में उतरि गइल। धारदार आ प्रभावी सम्पादकीय। रउआ लेखा देश चिन्ता आ लोकतंत्र के चिन्ता करे वाला लोग गते-गते कम हो रहल बा। चारों ओर भ्रष्टाचार, अनाचार, पाशविकता के लोकतंत्र बनल जा रहल बा। वर्तमान व्यवस्था के बिना बदलले सच्चा लोकतंत्र नइखे आ सकत....।

कृपाशंकर प्रसाद के कहानी 'अनबोलता अंखियन के सवाल' मानवीय व्यवहार आ संस्कारन के यर्थाथपरक आ स्तरीय कहानी बा। पढ़े के बेरा आंखि लोरा गइल। प्रो० गदाधर सिंह के कहानी 'हम जरूर आइब' संवेदनशील आ मार्मिक। गिरिजाशंकर राय 'गिरिजेश के कहानी 'राघव मास्टर' आ आशारानी लाल के कहानी 'भिच्छा' अच्छा लागल। गीत-कविता स्तम्भ में छपल कविता जादुई पांडित्य, कठिन आ सरल शब्दन से लबरेज। आचार्य गणेश दत्त 'किरण' आ 'बावनी' के कुछ छन्द, रामजी पाण्डेय 'अकेला' के 'कवि सम्मेलन आ किरण', प्रभाष कुमार चतुर्वेदी के स्मरण 'केसर के गंध लेके...' एह अंक के धरोहर बा। राजगुप्त आ विनोद द्विवेदी के लघुकथा संदेशवाहक। एगो स्तरीय पत्रिका में जवन होखे के चाहीं ओकरा से कहीं अधिका ''पाती'' से सभ अंकन में मिलेला।

अतना लम्बा समय तक भोजपुरी पत्रिका 'पाती' के संचालन रउआ धैर्य, परिश्रम आ दृढ़ संकल्प के ज्वलंत प्रमाण बा। 'पाती' में अनुभवी साहित्यकार लोगन के साथे नवोदित लेखकन के स्थान मिलेला। सम्पादकीय के अलावा एकर कुल स्तम्भ प्रभावी आ आकर्षक होला।

■ **कृष्ण कुमार**, करमन टोला, आरा-८०२३०१ (बिहार)